MSS No. 295 Subject PHILOSOPHY

Name of MSS कविप्रिय टीका

Author

Period Folios 74

Script DEVANAGIRI Source Prithi Pal Singh

Missing Folios 39A, 40, 70A, 71

(15)

295

क॰टी॰
१

श्रीकृस्नायनमः अथकविप्रियाकीटीकालिष्यते दोहा मोहनमुरलीधरमधुर सवदेवनकेदे
व विघनहरोमंगलकरोगिरधारीहरदेव १ गनमुषइति १ सनमुषहोतही सोप्रसन्नहोत
ही विमुषह्यौसंदेह जोपापविलायजाइहै इहांदृष्टांतठीकनभयो तहांसंदेहनिवारण
विमुषकोअर्थ यहांविलायवौभयो काहेतें विगतोमुषयस्मसः विमुष १ वानीजूके
इति २ टी॰ जुगवरनसो १ वाओर १ नीओर जुगनावआरिहूकोहै तहांसरस्वतीलीनी
कें जुगवरन सोमात्राइति वर्नहृत्तिमेंलघुगुरुहै तेतेजेवेसुवरन कनपरमान जुगवरनहैं
सोसुकवि सुमुषकुतबेतमैं परिकैं सुमेरुकेसमानहोइहै इहांकविकोओरगनेसजीको
एकसंगवरनकरिवो संभवैनहीं यहसंदेह तहांसुमुषनांवगनेसजीकोहै सुमुषके
कहंतम्रइति औरकविकेवरननकोअर्थकरियेतौ समाप्तपुनराव्रतदूषनहोय तातैंग
नेसजीहीकेवरननकोअर्थकीजे २ सत्वसत्वगुनइति॰ ३ टी॰ सत्वहीकोसत्वासौंसत
पारानहीकेआधारहै ३ प्रगटपंचमीइति ४ टी॰ प्रगटपंचमी वसंतपंचमीकोनाउहै ४
नपकुलइति केसवसोकेसोदास अथनपकुलवर्ननं ब्रह्मादिकेइति तिनकेकुलइति ५
रनधीर सोरनकेविषैंधीर गहरवार यहजाति औसोवीरनाथराजा प्रगटभयो कर्नन्रप
इति ६ वारानसीसोकासी प्रगटकरनइति ७ कर्नराजाकेनांवकौंप्रगटहीकर्न सोकर्नन्रप

…सत्वगुनदेषिवे
…ते नहीं॰ प्रावैला
…सत्व सोविद्य
…मानताहै यहरी
…सनाहै

षटरसनषट
रागनकेयला
ग्रहनए

१

1A

दातीरथभयो ताकर्नके अर्जुनपालभयो महोनीगांउमें गढकुंडारइति ८ अर्जुनपालकेकुं
डारगढमें साहनुपाल साहनुपालके सहजइंद्रभयो राजानौनगइति ९ नौनगद्योसो नौ
नगदेव सहजइंद्रके नौनगदेवभये नौनगदेवके पृथ्वीराजभयो रामसिंहइति १० पृथ्वीरा
जकै रामसिंहभये तिनके रामचंद्र रामचंद्रभये राजामेदनइति ११ तिनके मेदनीमल्लभए
राजाअर्जुनइति १२ तिनके अर्जुनदेवभए महाराजइति १३ त्रिपुबंडनइति १४ अर्जुनदेव
कै मलषांनभयो नृपप्रतापइति १५ मलषांनकै प्रतापरुद्रभयो वहरुद्रके सेरनकरि
कैं संजुरूहै नगरओंडछोइति १६ भरथबंडइति १७ प्रतापरुद्रके भारथचंद्रभयो सेरसा
हिइति १८ भारथचंद्रकी समसेर साहि असलेमसाहिके उरमें साली उपजतइति १९
भारथचंद्रको भैया मधुरकसाहि भयो राजा तिनके राजइति २० सिंधुधसानहोऊनहीहै
तिनपरइति २१ सबरसाहिइति २२ षांनजिनेइति २३ मुलतानके षानवंकोनजिनें त
वरावतराजाह्याहीहैं मुराहिसाहिनाम साध्यौसारथइति २५ तिनके इलहइति २६
मधुकरसाहिके इलहराम होरिलराव प्रभावसो प्रताप रनरूरोइति २७ जलालदीसो
अकबर इंद्रजीतइति २८ इंद्रजीतरनकोजीतनवारो शत्रुजीतेवलकरिकैं वीर वीरसिं
हदेवनें मुहोई राम्यकानों हरसिंहदेवरनकै विषैंधीरभयो मधुकरसाहिइति २९ घर

बाहिरइति ३० रामसिंहइति ३१ करजोरेइति ३२ जाकेइति ३३ जाकेहरसनकंगए सोकेसोराय
केकिवार आपसंभुले अरकेसोरायकीदेहकीदीपतिजानैंदेषो नागनाइति ३४ तिनकेइति
३५ रामसिंहकेग्यारहसुतभए नारायचंउइति ३६ संग्रामसाहि अरनारायसाहिदोऊभाई सुत
सोदरइति ३७ इंद्रजीतरामसाहिकोभैया कल्मब्रह्मइति ३८ येसवइंद्रजीतकेविषेसन ता
हिकछोवाइति ३९ वामअवाम सोकुटिलनकौंसधेकरैहैं करयोअषारोइति ४० संगीत
कोआसासंरागकोअषारेकियो नालवयक्रमइति ४१ बालवयक्रमनामजोवनको के
सववालवयक्रमहइ विपत्तिहु अतिधीरजचेता इतिरसिकप्रियाया अवरोधसो अंतःपु
र रायप्रवीनइति ४२ रायप्रवीन अतिप्रवीनहै नवरंगराय अतिसुवेसहै विचित्रनय
ना निपुनहै अरलोचनललितसुदेसहै सोहतइति ४३ तानतरंगहैसो रागसागरकीत
रंगसोहैहै रंगरायकीरंगकरिकै गतिवलितहै रंगमूरति अंगअंगमें रंगकीमूरतिहै
तंत्रीतुंवरइति ४४ रायप्रवीनदेवसभासीहै देवसभाकैसीहै तंत्रीसोनारदकेंब्रहस्पति
अरतुंवरसोगंधर्व सारिकासो अप्सरा अरसुरसोदेवता इनसंलीनहै रायप्रवीनहैसो
कैसीहै जाकेतंत्रीवीनातीमैंतुंवर तूंवा लगेहैं अरसारिकासोगोट लगीहै अरविशार
दीप गांधार षर्ज मध्यम धैवत पंचम इनसव[illegible]सुनसों [illegible] रायप्रवीनहैसोलीनहै

२ अरु इंद्रजीत राजा जासौं सनेह करिकैं बंधिरहे है २

2A

सभाइति प्रवीनरायकैसीहै सभाहै केरायप्रवीनहै रायप्रवीनकैसी जुतसुरत सोसुरतकरिकैं
जुतहै अरु तरुविशेषकरिकैं सुरजाके गेहमैं रतहै सभाकैसीहै रायकहियेविरदारतिनमैं प्र
वीनजोश्रीकृस्न तिनकोजोसुरत प्रीति किंवारमनताकरिकैं जुतहै औसुरतरुकहियेकल्पवृ
क्षजाकेगेहमेहै अरु इंद्रकेजीतनवारे श्रीकृस्न जासं नेहसंबंधिरहेहै अरुसत्यभामाकैसीहै सु
रतरु सुंदरजाके गेहमैंरतहै नरीकिन्नरीइति ४५ नवरंगराय जोजति जुक्तहै हावभावइति ४६
हावभावकी जोसंभावना होताहिं जोरासमसुखदायकहै ताकरिकैं नवरंगकीगति सो नवरंग
रायहै सो पियकेमनकौंफुलायरहेहै भैरोजुतइति ४७ नयनविचित्रा चंद्रकलासीहै चंद्रक
लाकैसीहै भैरुं शिव गौरी सुरतरंगिनी गंगा इनकरिकैं संजुक्तहै अरनयनविचित्राकैसी
है भैरौं आदिदैकैं जे दिनकेराग गौरीआदिदैकैं रातिकेराग इनकरिकैंसंजुक्तहै अरसुरतमैं
रतहै रंगकरनवारीहै नयननयनइति ४८ नयनविचित्राके नैंन औ बैन रतिकी सयन
सोसैन ताकेसमानहै जीतिवेकोंहेसुभावजाको औसो जोमयनरूपपति इंद्रजीत ताकोमनज
हांसदाविश्रामकरैहै नागरनागरइति ४९ तानतरंगनागरिहै सोरागसागरकीतरंगहै सा
गरकीतरंगपूरनससिकोंदेखिकैं वढैहै तानतरंगपतिकूंदेखिकैं अपनी तानकी तरंगनिकरि
कैसदावढैहै यहअधिकाई तांनैं तांनइति ५० तांनतरंगकी तान ततनकततनककरिकैं प्रानन

पार्वतीरतिकीसय
नपैमयनमनस
दाविश्रामकरैहै
याकेनयनवयन
पैसदापतिकोमन
विश्रामकरैहै

3

कौंवेधेहैं मानौंकुसमसरासरत्रिकीकला भालिहै अतिअयानता सोई इनकोतनत्रानवषतरहै रंगरायइति ५१ रंगरायकरकी आंगुरी सकलगुननकीझरि जरीहै कैधौंमृदमृदंगके मुष मैंलगत शब्दभरिपूरिकैंरहे है रंगरायकरइति रंगरायकेकर अरमुरज जोमृदंग ताको मुष अररंगमूरतिके पद्चारु इनतीनूंननमैं मांनों सबसंगीतकोविचार एकसाथहीपद्यौ है अंगजिते इति ५३ संगीतके अंगगुनीगावैंहैं परिवेसंगीतके अंग रंगमूरति के अंग अंगमेहैं नांचतिइति ५४ परवीनरायइति ५५ परवीनरायपरजोअप्रेछवीन ताकरिकैंजव संजुक्तहोय तवप्रवीननकेमनमैंसुषहोयहै इहांकाक अ कोअर्थरहित अपरवीन सोऔरकोवीनकहा परायेमनके दुःखकौंवीनलेहै अहदूसरोअर्थ प्रवीनरायजो प्रवीननिपुनहैं तासौंप्रवीननकोसुषहै अपरवीनजेअज्ञानहैं रागमैंनहींसमुझे तिनकौंकहा कछूनहीं किंवाअपरवीनकैआगेंऐसी सोकोअर्थ सैंकरानहोहु तौहू कछूनहीं अरपरजो सत्रुयाघातरिकौंनहीचाहतिहै अरवीनकहियेवीनाहै समझवारहै तिनकेमनमैंदुषहै गुरुअसरकौंलघुपद्यौ रत्नाकरइति रमाहेकैरायप्रवीनहै रमाकैसीहै रत्नाकरजोसमुद्र ताकरिकैंलाडलडाइयेहै अरअमलकमल जाकेसुंदरकरमैंहै रायप्रवीनकेसंगीहै रत्नन केआंकरको वहोतजाकेलाडहै रायप्रवीनइति ५७ रायप्रवीनकैसीहै सुचित्तसोपवित्रता

१सुचित्तसूर्य ताकीसी रुचिकांति तासोंमूर्छित अंगहै ताकेनाम लावराजपे सुचित्तसूर्यकोनाम सुचित्त शास्त्रकहन इति २

3A

ताकी रुचि करिकैं रंजित है अंग जाको वीनां को पुस्तक मौं कंधा तापे धरै है अरु राजहंस सुत जो इं
दु जीत सो जाके संग है जीव हंस नृप हंस इति अनेकार्थमंजरी सारदा कैसी है सुचि सो उज्जल ता
ताकी रुचि करिकैं रंजित है अंग जाको अरु वीना पुस्तक धारे है राजहंस के सुत जाके संग हैं
वृषभवाहनी इति ५८ सिवा है कै राय प्रवीन है शिवा कैसी है वलध कै ऊपर चढै हैं अरु जाके
उर जो अंग है तामैं वासुकि सर्प लसै है अरु शिव के संग सदा सोहै है अरु राय प्रवीन कैसी है
वृषभ जो धर्म ताकं वहै है वृषभ के रथ पे चढै है अरु अंग मैं उर में सं जाके वासक लसत है
सो निकसै है अरु सिव जो कल्यान ताके संग सदा सोहै है सविता जू इति इति श्रीमद्विवि
धि भूषण भूषितायां कविप्रियायां राजवंशवर्ननं नाम प्रथमः प्रभावः १ अथ कवि
वंशवर्ननं ब्रह्माजके इति १ परसराम इति २ जगपावन इति ३ सोमवंश इति ४ यदुकुल कलश
सो श्री हंस कुंभवार इति ५ कुंभवार गोत्र है जिनको उद्देश सो उच्चार मात्र है कुल जिनको ऐसे
जु कोई है तें जिन सनो दियानके बंस मैं प्रगट जे वै प्रगट तिनके देवानंद सुत प्रगट भये तिन
के इति ६ तिनकै फेरि जयदेव भए तेहथी तननैं याये तिनके फेरि दिनकर सुकुल सुकुल सो
सुंदर कुल सुत पंडित राज भए दिलीप इति ७ अल्लावदी सो पातिसाह वहुत वारसी बहोतवा
र तांई अर्थात वहुत वरस तांई गयागदाधर इति ८ दिनकर कैं गया के विषे गदाधर सु

तभए गदाधरकै जयानंदभए भएइति ९ जयानंदके त्रिविक्रममिश्रपंडितरायभए भावसर्मइ
ति १० त्रिविक्रममिश्रकेभावसर्म सोभाऊभए सर्मनामसौंकहिये भाऊकेनरोत्तममिश्र षट
दर्शननके अवतारभए मानसिंहइति ११ जानैंआरोंदिसाजीती ऐसेमानसिंहसौंजानरोत
मनैंरोसकियो तिनकेपुत्रइति १२ जानरोतमकेहरनाथभयो हरिनैंकीनों पुत्रभएइति १३
हरनाथकेसूसरत्तभयो हरदामंडलामैंपंडितनकीसभाजानैंजीती जिनकोहतइति १४ कु
सदत्तकेकासीनाथभए तिनकोइति १५ कासीनाथकेबलिभद्रभए बालकतेंइति १६ बलिभ
द्रकैकेसोदास अरकसांनरोयपुत्रभए भाषाबोलिनइति १७ इंद्रजीतइति १८ योकबडोर
ति १९ गुरुकरिइति २० केसोकौं इंद्रजीतनैंगुरुकरिमांन्यो इंद्रजीतइति २१ राजाराम इंद्रजीत
केबडेभैया इतिश्रीमद्विविधिभूषणभूषितायां कविप्रियायां कविवंशवर्ननंनामद्वितीयप्र
भावः २ समुझै समुझ्यैइति १ बालकनिवरननपंथ अगाधसो बालकनकी तोतली
बातेंतें बालाजे उनबालकनकीमाताते समुझैंहैं समस्योपाठहोतो बालाबालकनवरनन
पंथसमुझ्यो अपराधकहांलोंछमाकरायो अपराधयहजोहै कविता समुझैकविताकरो
गे तौ आछे नहीं सो गे कौं बालाबालकवरननपंथसमुझैंहैं अलंकारइति २ अलंकारकवि
ताकेसो प्रबंधमेंग्रंथ तिनकेअलंकारसुनिकें अरऔरहूविविधिविचारसुनिकें सगु

सोकविनकौंजा
विवेकीबातसो
सबकोंसमुझाई
यहअपराध कि
बालोगयाकौंप
ढिकैं औरकीक
विताकौंदूखैंगे
यहअपराध

बिना

4A

नरति ३ कंठमैं मालाकीसी तरह कविप्रियाकंठकरो कंठमालकैसीहै गुनडोरा पदारथम
निकासहितहै अर्थ द्रव्य सोमोल तासंजुतहै अरसोनेमेपुहहैं औरसुभकेविषें सुंदरसुन
सत्रसे मनिकानकौ जाकोसाजहै कविप्रियाकैसीहै सगुनसो माधुर्यादिगुनसहितहै
माधुरी १ ओज २ प्रसाद ३ एतीनगुनहैं पदारथसोपद अर्थसहितहै अर्थजुतसो यासंअ
पनो अर्थसि[illegible]द्धहोयहै औरसुंदरवाननमैं यहां सुभसाजसोमंगलसाजहै जाकौंकंठकीमा
लासमुझिये कंठमालारोगनहींसमुझिये रहांसंगकरि अविधामल[illegible]अंगहै राजतइति
कविता वनिता अरमित्र येरंचकदोषहूंजुत राजैनहीं जैसैं एककुंद हालाहलजोमद ताकी
परदही गंगाजलकोजोघट सोअपवित्रहोयजायहे जैसें सुराहलिप्रियाहाला इत्यमरे वि
प्रनजोगीइति जैसे [illegible]कामदार सो प्रालणनकरिये जो चोरखायतौ रंउलीयोजायनहीं "अंधव
धिरइति बधिरइतिशब्दविरुद्धसो अतिशब्दविरोधी बधिरकहावै छंदविरोधीइति अधपंग
विरोधीअंधवर्ननं कोमलकंजसेइति कोमलकंजसे यहीपंगविरोध याकवितमें सवठौ
रऐसेंहीजानियैं अथशब्दविरोधीबधिरवर्ननं सिद्धसिरोमनिइति सिधिसो साधुनि के
सिरोमनिसंकरहै अरसाधसमहत्यरी सहिसंघारेहै यहीशब्दविरोध आतमभूतकंदर्प
अरपुत्रहुआंहू शब्दविरोध सुभ्रंसो उज्वल बिरूपसोकुरूप अरविरोषरूपसो त्रविलोच

अथदूषन सहितक विवर्ननं

अंध १ बधिर २ पंगु ३ नग्न ४ मृतक ५ पांचतो ये अरअगान १ हीनरस २ जतिभंग ३ व्यर्थ ४ पारथ ५ क्रमहीन ६ छयेकहे पांच
अरछग्यारह अरकर्नकटु १ पुनरुक्ति २ देसविरोध ३ कालविरोध ४ लोकविरोध ५ न्यायविरोध ६ आगमविरोध ७ येसात
पांचअरछग्यारह अरसात येअठारहदूषनकहे कविप्रियायां

लोककीलीकमर्जादा ६ मनोरथकौरथजोमनोरथहोयबोकरतहतो सोबावारवध्के देषतही छुटिगये सबीवचनसबीप्र
ति सौबावारवधटीनैंचितयो सोंकरतारवाबारकीसीतरह फेरिनकरै कहाकेरिवह नचितवै जाकेदेषतहीइतनीबातेंभई

5

नसोभितहै ऐसीशिवकीमूर्त्ति केसोदासकेमनमें अरीहै अरीवैरीहूकोनामहे यहीशब्दविरोध
गोत्रनावपर्वतकोहूहै अरअपनेगोत्रकौ यहीशब्दविरोध तोलततल्पइति कनकतुलाबे
तोलतीबेर आधातिलहू घटतीवधती हतीहोयतोतुल्यनरहे सोहीछंदमें अक्षरघटतीवधती
होयताकौंअतिनके साधुहैंते नहिंसहिसकैंहैं धीरजमोचनइति इहांवचनरचनानहीं सूधी
वोलतिहे चमत्काररूपभूषननहीं अलंकारहीननग्नवर्ननं तोरितनीइति इहांअलंकारनही
तनीतोरिवौ कपोलदैतोरिवौहेतु यातैंकरजोरिवोहे सोहेतुध्यान हेतुअलंकारनिकरैहै यातैं
यहअर्थ अथअर्थहीनमृतकवर्ननं कीलकमालइति इहांअर्थहीनमृतकसोहै अगन
नकीजेइति अगनहीनरसइति जतिभंगव्यर्थअपारथ हीनक्रम येहूषनवर्नियै वर्नप्र
योगनइति कर्नकटु इनके वर्नको प्रयोगकोवर्ननकीजे सोयेहूषन नहींल्याइयें देसवि
रोधइति देशविरोध कालविरोध न्याइविरोध आगमविरोध येनवर्नियें अथगनागन
वर्ननं केसवगनइति मगननगनइति मगनत्रिगुरइति जगनमध्यइति आठोगनइति
अथगणागणदेवतावर्ननं महीदेवताइति सूरजजानहुइति सिवीसोइति अथगणाग
णफलाफलवर्ननं भूमिभूरिइति तजिकेइति तजिकेंप्रवंध अरुदेवरसयाकोअर्थ
प्रवंधसोकथामेंरसमें देवतांनकेकवित्तनमें अगनआयपरैतोदोषनहीं अर्थाद्

सगनकोदेवता
वायुअरकहूं
कालहूकहतहे

5A

गणविचार जोकहु इति याकौ अर्थ अगनको फलतो होयही परिकौंनसो फलहोय यहद्विगुणतें
विचारिलीजिये अथद्विगुणजातिवर्ननं मगन नगनको इति अथद्विगुणफलाफलवर्ननं [illegible]
[illegible] मित्रतेजो इति तुछफलसो फलकौंतुछकरै प्रभुताइयेसो प्रभुतायोजार नफलाफल
सोकहा फलनिफलनहोय आसुवनिता नसाइयेसोसीघ्रही वनितामेरें अथगणागणउदाहर-
ण राधाराधा इति राधारा मेनय उद्दव [illegible] कहोलास कहोकहा इति कहोक प्रीतना पि
रिंऊधोस दोहादुहू इति दोहादोऊ गान अरअगनके उदाहरन हैं आठो सोच्यारिगन अरच्यारि
अगन दोऊ दोहानके आठपाय सो आठोचरननमैं हैं अथगुरुलघुभेदवर्ननं संजोगीके इति सं
जोगीके आदि गुरुविंदु सो अनुस्वार अरविसर्ग अरदीर्घहोय सोगुरुकहावै औरसवलघु
दीरघकरू इति दीरघवंलघुकरिकैं पढिये सोलघु मुषके सुषके कार्य तैसैंलघुकौंगुरुकरि
पढियेतौगुरुहीजानियें क्रूसंजोगी तासा अगुरभयो सोक्रू कोक्रू कीनो तवलघुरह्यो संजोगी
कीइति संजोगी आदिकोवरन कहूंक ऐसीहीजगैंलघुजानियें अमलजुन्हाईइति जुन्हाई अन्हाई कुमि
लायइहांसंजोगीकी आदिकोवरनलघुजानियें अथहीनरसवर्ननं वरनतइति जहांरसवरनत
विरसहोय सोविरसकहावै एकहोइति एकप्रीतिकरैं दूसरोप्रीतिनकरै तहांहीनरसकहिये
यहदोहारसिकप्रियाको हीनरसके उदाहरनको कवित्तरसिकप्रियाको देराधि इति दानक

यह कवित्त रसिकप्रियामें दुःसंधान दूषनमें कह्यौ है तहां एक अनुकूल एक प्रतिकूल तहां दुःसंधान अरु तहां होय प्रतिकूल तहां ही
नरस सो रहां चौथी तुकमें होऊ नंदके प्रतिकूल वचन हैं यातें ही नरस दूषन = १

6

हा अरदानमें अउ कहा याकवित्तमें नायक अनुकूल नायका प्रतिकूल ताहीसौं हीनरस क
हिये अथ जतिभंगवर्ननं औरचरनके इति औरचरनके वरन औरचरनमें मिलें सो ज
तिभंग हरिहर इति मोहनयह मोपहलें चरननमें मिलिरह्यौ है द्वारिकानाथ यहका पहले च
रनमें मिलिरह्यौ है अथ अपार्थलछनं एककवित्त इति कवित्त सो काव्यमें अथवा प्रबंधमें अ
र्थविरोध होय फरवपर सदा अनमिल होय सो अपार्थ कहावै सवसतु इति अथ अपार्थलछनं
अपार्थ अपार्थ होऊ होऊ पाठ अर्थन जाको तिसें पियेलेत इति अथ क्रमहीनलछनं क्रमहीं
गुनन्नि इति जायाकी रचना इति अथ कटुकर्नलछनं कहतन इति वारनबम्यों इति अरु
अर्थ कर्नकटु शब्द कर्नकटु रसरहस्य [illegible] अथ पुनरुक्तिलछनं एकबार इति शब्द न्या
रेन्यारे अर्थ एक सो इहां तौ यह अर्थपुनरुक्ति है मघवा घन इति मघवा इंद्र घन आरूढ
सो इंद्र मेघवाहन इत्यमरे ये शब्द न्यारे न्यारे अर्थ एकसौ यहां पुनरुक्ति करोतिसबबिभि
केलिं चित्रकेलिपरीसह केलि केलि यह शब्द पुनरुक्ति दोष नहीं इति छाडि अर्थ पुनरु
क्तिके सो पुनरुक्तिके अर्थ छाडि दीजिये सो होय शब्दनको एकसो अर्थ होय सो पुनरुक्ति
शब्द बर्षांनो साज सो शब्दनके अर्थ न्यारे न्यारे हैं तहां जमक होय है सो चरनपैने इति यहां
पुनरुक्ति नहीं अथ देसविरोधवर्ननं मलयानिल इति नर्मदाके कूलविषैं औसो देस नहीं के

मघवा इंद्र सोघ
नये आरूढ है
बड़ो अरइंद्र
के रिकयों वा
ने पुनरुक्ति म
घवा घन आ
रूढ सो आ
रूढ प्रसिद्ध है
यो पाठ होतो तो
पुनरुक्त न होती
मघवा इंद्र यह
पुनरुक्ति

6A

रियथा अथमरुतदेसवर्ननं मरुतदेसअैसोहैनहीं सोइहांदोऊजागां देसविरोधहै अथकाल
विरोधवर्ननं प्रफुलितइति इहांकालविरोध थ्याईविरोध थ्याईवीरइति वीरमैंकरुनासिं
गारमैंग्लानिनहीं थ्याइये यहांहै तासूं यहांरसविरोधहै अथलोकनिरोध तारान्नरु मंदो
दरीइति यहांलोकविरोध अथन्यायविरोध पुनिलीबोइति यहां आगमविरोध इहवि
धिन्नोरोइति अवरोधसो मरुदके रोकिवेकेलीनें केसवनीरसइति नीरसविरस दुःसंधान
विधान सोविधिअपात्र दुष्टप्रस्तनीक [illegible] येदूषनरसिकप्रियातेंजानों इ
तिश्रीमद्विविधिभूषणभूषितायां कविप्रियायां दूषनसहितकवित्तवर्ननंनामतृतीयप्रभा
वः ३ अथकविभेदवर्ननं केसवतीन्योइति उत्तमइति उदाहरनयहै अतिउत्तमइति
जेपरमारथकेपथहैंसो तेउत्तमस्वारथपरमारथकेभोगनकूं वर्ननकरिकैं संजुत सो
संजुक्तवरननकरिवेतें अधमपरमारथस्वारथहीनहैं तेजानेकोहैं अर्थात अधमाध
महैं अथकविरीतिवर्ननं साचीवातनइति कितनेंकसाचीवातनकोवर्ननकरैंहैं कि
तनेकझूठीवातवर्ननकरैंहैं कोईकनेमकरिकैं वर्ननकरैंहैं ऐसेंकविनकीमति तीन
तरहकीहै अथसत्यवातकोवर्ननं मधुरितुइति मधुरितुमेंमालतीफूलैहै चंदनकेफ
लफूलहोयहै कृष्णपक्ष जितनीवेरचांदिनीरहै तितनेहीवेरसुक्लपक्षमें अंध्यारोरहै

क॰ टी॰
७

7

एतीसौंबातसत्यके वर्ननमैंहै अथमिथ्याबातकोवर्नन जहांजहांइति रत्नरत्नाकरहीमैंहै परंतुजासिंधुको वर्ननकीजे तहांरत्ननकोवर्ननकीजे यहीमिथ्याबातकोवर्ननहै हंसमानसरोवरहीमैंहै परंतुमिथ्याकेवर्ननमैं क्षुद्रसरोवरहूमैं हंसवर्ननकीजियें दोषनहीं लेनककेहैइति तमकौंमूठीमैंभरिलेवौ अंजुलिभरिचंद्रकापीवो यहीमिथ्याबातकोवर्नन सबकेइति अथतमकेउदाहरनमैंमिथ्याकोवर्नन कंटकनइति गाढोतन यहां तनकहतोहो तनकेविषैं अथचंद्रिकाकेउदाहरनमैं मिथ्याकोवर्नन भषनइति औरनायकानकेरूपकीजोति बोई जायहै यहांतोईमिथ्याकोवर्नन अथकविनियमवर्ननं वरनतइति चंदनसोभोजपत्र औरजागांहूहोयहै परिमलयहिमगिरिहीमैं वर्ननकीजे यहनियम अतिलज्जाइति बरनतइति कोकिलकोइति दनुजनिइति दनुकस्यपकीस्त्री कोनाम कुलटाकोइति कुलटाकोपतिप्रेम बारवधूकोपतिदेवो अरजाकौंमातापितानैंदीनी सोकुलवतीकोपति यहसबकविनियम अथसोरहसिंगार प्रथमइति सुचि १ मज्जन २ अमलवास ३ जावकसुदेस ४ केसपासकोसुधारिबो ५ अंगराग ६ भूषनविविधि सोहोयतरांके फूलनके ७ सुवर्णके ८ मुषवास ९ मुषराग १० कज्जलकालित ११ लोललोचननिहारिबो १२ मृदुबोलनि १३ मृदुहसनि १४ चातुरी १५ चारुचलनि १६

7A

येसोरह शृंगार पलपल प्रतिपति हुत पतिपारिवो यह सिक्षा संगारनहीं महापुरुष
इति गुनमनि इति गुनहीं जेमनि जवाहर तिनकी बेरागरखानि है धुरसो जू आजु आदि
नहीं वृषभकंठ इति मेघमौं इति इति श्री महिविधिभूषण कविताया कविप्रिया
या कविव्यवस्था वर्नन नाम चतुर्थ प्रभाव ४ अथ कवितालंकार वर्ननं जदपि इति
सुजाति सो उत्तम मध्यम अधम सो कविता अरप अन्यादि और ब्राह्मनी आदि सुलछ
नी सों काव्य में जैसें लछन हैं तैसें यो कविता सामुद्रक लछन सो सत्तम तीरुवनिता
सुंदर वरन सो अक्षर जाके सो ता कविता और सुंदर हैं वरन जाको सो वनिता सारसो
नौरस सहित कविता रसें स सो रस सहित वनिता सुवृत्त सो मात्रा वृत्त वर्नवृत्त के छंद
कौशिक्याद्याश्च वृत्तय इत्यमरे येही वृत्त रसिकप्रिया में प्रथम कौशिकी भारती पुनि
आरभटी जाति कहि केसव सुभ सात्विकी चतुर चतुर विधि जाति रसिकप्रिया या उपना
गरिका मधुर गुन व्यंजक वरन सुहोय और प्रकार सवरनते ओज प्रकासक वरनतें
परुषा कहिसोय वरन प्रकास प्रसादको कैकोमला सोइ येतीन वृत्त रसरहस्य में
येतो काव्य की वृत्त और सुवृत्त सो सुंदर है आचरन जाको ऐसी वनिता सोभाय मा
न नहीं होय यहे कविन कहे इति कविन नें काव्यन के अलंकार के होय रूप कहे एक सा

क॰टी॰
८

धारण सो सामान्य एक विशिष्ट सो विशेष अथ सामान्यलंकार लछनं सामान्यादिति सा
मान्यालंकार आदि प्रकार को बर्न वर्ण्य भू श्री राजश्री स्वेत वात इति मिश्रित सो मिले
४ अथ स्वेत वर्ननं कीरति इति हरिहय सो हरि जिनकूं हांकै ऐसे अर्जुन को घोड़ा जरा
सो बुढापो सर सो सरमा सोध सो राजमहल बलवक सो इति सिंहला की सुकतुंडन
की सीह चिहे किंसुक है जो रें अंगारन कूं चंचुन में मेलि लियेउ गेले हैं अथ धम्रवर्नेन काक
कंठ इति ग्रहगोधा सो छिपकली और कोई माल है सो ऊधमरी करम सो ऊट यथा रा
घव की इति प्रताप ही जो हुतासन ताकी धूम अथ नीलवर्ननं रव वंस इति कुवलय नलि
न सो कु सो पृथ्वी ताके वलय मंडल मंडल में नलिनी लकमल है तेनलिन जो पवन हैं सो
नील बरन हैं कंठ दुकूल इति और सो छोर उर में सो लटकै बल कैसो बलदेव कैं ढलकै
से हैं बलदाई हैं मंडित कैसो शोभित करि कैं सूर्य आरल बलदेव स्वेत यहां अर्थ के संभ
वे तहां उत्तर अंस जो किरन तिन हां सूं प्रकास हो इ हे सो प्रकास को स्वरूप स्वेत है यदि
का के न प्रकासे रसिक प्रिया या अथ स्वेत रूप मिश्रित शब्द सिंह रूप इति सिंह अ
र रूप इन दोऊन को नाम हरि है हरि शब्द स्वेत हू औ स्याम हू चंद्र विधु विधि यहां हू वैसें
ही अभ्र जो मेघ ताकों कैसो अभ्रक सो अभ्रक नाम आकास को अर ओड़र हू को

क रूप सो वे
ना

८

२ नागराजसोगजसेष तथैव राजहंसहि इति तथैव २

8A

तथैव छत्रसो संपूर्णभावकरिकैं सितनाम सेतहूको अरस्यामहूंको तथैव घनकपू
र इति तथैव हरिगज इति हरिगजसो हरि जो इंद्र ताको हाथी अथवा हरिगजशब्दसो इस
रोहरिजकहिये हरिकाहूको गज हरिगज इंद्रको हाथी सो स्वेत हरिगजसो हरिको हूगज सो
स्याम छत्रनदी इति छत्रनदीवरसो छत्रसो संपूर्न सो संपूर्न नदीनको वर समुद्र औ
र छत्रनदीवरसो संपूर्णनदीनमैं श्रेष्ठ गंगा निकसै सो ऊगत अथ स्वेत पीत मिश्रित
वर्ननं सिवशिरं इति शंभु ब्रह्म त्रिलोचनौं इसमरे स्वर्न अरसरभ जनावर दोऊन
सों अष्टापद कहैं है सो मस्वर्न इति अथ स्वेत रक्त मिश्रित वर्ननं स्वेतवस्तुवर्न इति पुष्कर
तीरथ स्वेत हंस हंस इति इति श्री महिविधिश्वलभूषितायां कविप्रियाटीकायां सा
मान्यालंकारवर्ननं नाम पंचमप्रभावः ५ इति वर्न संपूर्णं अथ वर्नवर्ननं संपूरन
इति सुषद इति सस्मरूठ इति अथ संपूर्नवर्ननं रतने इति संतनि प्रेम सो भक्तनको
प्रेम संपूर्न है हरिकर इति कमलके सो है हरिके कर को मंडन है कमलपत्र मुकर को अ
र्थ निश्चे मुकुरे सुवास सो सुगंध पीयूषसो मकरंद भ्रमिश्चा कासमैं जिनको मजनकी
गति है श्रीजूके सदन सो लक्ष्मीके सदन हैं सुभोदर सो सुंदर है मध्यदेश जिनको सोद
र पद कमलपत्र लग्यो और ऐसें लगे ऊहै सुभोदर सो सुभ जो दर संखताको अरलक्ष्मी

१

जलजा कमलजलज तातेंहोज सोदरहैं भाईहैं कमलहैसो सुभोपदकोअर्थ सुभकीयो
अरदिनेसकेमित्रहैं कमलहैसो अवरजनीपति कैसोहै हरिजोसूर्य ताकीकिरननिकरिकैं
मंडलसोमंडितहै सकल लोकत्रासहितहै अरदुषषंडनहै येचंद्रमांदेवहैंते महिमंडलके
मुकरदर्पनहैं छितिछांहछाईइतिकविप्रियाया ऐसैंअषंडमनिकहैंहै परमसुवाससोशि
वकेमस्तकपैं आकासगतिसोष्टथ्वीमैंजिमैंजाइहै एकराशिपैतैंएकराशिपैआवतहै म
दनसोसोभायुक्तजाकोवदनहै श्रीजोसोभा ताकोसदनहै लक्ष्मीकोसोदरहै अरसुभहै
उदरजाको चंद्रमांकेउदरकूं देवताषायजायहैं अरदिनेसकोमित्रहै सुषसोसुषहीतें
सुषमासोपरमसोभा अथमंडलवर्ननं केसवइति कुंडलंकर्नवेष्टनं इत्यमरे कुंडली
वारोसोकुंडल मुद्रिकासोमुंदरी आलवाल थांवरो परिवेषकूं अररविमंडलकूं मंडन
जानों मनिमयइति मनिमयआलवालमैंजैसैं थलजतमालकोहृत्त अरजलज कमल र
विमंडलमैं कवितांनकीमतिकौं मोहैहै अर्थातऐसोसोभायुक्तहै जोकाहूपासवर्ननहीं
कयौजायहै यहअर्थ उत्प्रेक्षासौंभयोनहीं रविमंडलमैंकमलकहां मनिनकोजोआल
वालथांवरो तामैंजैसैंथलकमल अरजलकमल अररविजैसैं आपनेंमंडलमैं कविता
जेकाव्य तिनकौंमोहैहै अर्थातऐसोसुंदरहै सोवर्ननहींकयौजाय ऐसैंसोमपरवेष

9A

मैं सोभितहोयहै सोमकैसोहै सविसेष असेषरेष सोभितसुवेष सीमासुषद्दानकियें आरें सोमकेविसेषतें सविसेष सोसरद्ऋत्तौंकोचंद्रमा असेष रेषसो संपूर्न जैसें वं कलोचनी सोनायका तिनकेकरमैं वलितकहियेसंजुक्त जेकंकन तेकलितकहियें रत्नज टितहैं तिनकीललित दुति प्रगटही प्रमांनकीनीहै जैसें मंडलमैंरवि जैसैंआवरमैं होऋ कमल जैसैं परिवेषमैं चंद्रमां जैसें कनकमैं कर तैसेंगोविनमैंग्राहुस अथआवर्तव र्ननं एआवर्तइति चक्रसोपहिया अरकुम्हारकोचाक अरु चक्रहथ्यार दुहत्तषइति कुसलसोसिहत कुलाल सोकुम्हार अथकुटिलवर्ननं अलकइति अलककिलार ललाटमलकंगोधि इत्यमरे वालचंद्रकाइति वालचंद्रकासोमोरकोकटारो मोरकी चंद्रका वालकरहै तहांताईटेढीरहै कोदाल सोकुदाल अरकपटीजेअमंतहैंते कुटिलहै नारजगीइति पीककीलीक अरकारीलीक येदोऊपाछेसोंमिटिगई कुचवीचनषछतदे षिकें दूनीलज्जाभई मांनोंवियोगरूपीसोवराहहन्यो सोदोयपर्वतनकीसंधिमें वावराह की दंगवें जोडाढ सोडारीहैं अथत्रिकोनवर्ननं सकटइति पावककुंड विचारि सोका हूकजगपमैं अग्निकुंड त्रकोन होयहै लोचनइति कनीपरस्लेषहै ज्वालासो जगतके मध्यजगमगायहै सुमेरहैसो तामैंसोंटयामि मध्य यहअर्थ ऊपरतेंआयो तासोंमेरुकी

10

जोति लोकलोकके मनकी हरनवारी है जीवहवि कालहोता ताकी जुगति कही नहीं जाय
अथ सुवृत्तवर्ननं वृत्तवेल इति वृत्त सो गोल वेल सो वेलको फल रथअंग सो रथकी छत्री क
रीकुंभ सो हाथीको कुंभस्थल कलसको हू सुंदर गोल रंग है रंग सो रंग नहीं कहनावति है जैसें
फलानेको यह रंग है यह कहनावति है परमप्रवीन इति हे परमप्रवीन यह नायकासों सं
बोधन अंड सो ब्रह्मांड औ कोमल रूपाल ये दोऊ एके विशेषन अथ तीक्षणवर्ननं नवक
टाछ इति सेलारिक सो सेल वरछी इत्यादि तीक्षण जानियें रति सो प्रीति अरु सुरति तीक्षण
यथा सेहथी इति सेहथी सो वरछी बुंदेलखंड की भाषामें कहें हैं कपाट सो किवार अरु
कोट सो गढ दोऊनकी ओट न बचै भौंहरो सो तहखानो अरु यांदु वचनरूपी गदरोगी
मंत्र जंत्र हू प्रतिपक्ष करिकैं रक्षा नहीं करि सकै गुरु यथा पहले इति मद सो कस्तूरी जबा
दि सो बोरसिली के फूलनको अतर अथ कोमलवर्ननं पल्लव इति मुरारि सो कमलकी
जड यथा मैंनयसी इति इहां गुन विरुद्ध विषम रसरहस्ये अथ कठोरवर्ननं कुचकठोर इति
मनि सो जवाहर वज्र सो इंद्रको औरहीरा सो हीरा हू कठोर है यो सो यो विरहीजनके चि
तकठोर हैं हठसठ सो सठताको हठ केसो हास इति जातरूप सो सोंनो सो वाके पीरे रंग
कोहै कुरूप जो विधुवा सर संजोगी को है सो वा पुत्र सोगी के रूपको है घनंघारन प्रयोगी

जो घरयौं रहै बेर बेर जामैं डंकालगे सोय्यों ढवाकी छातीकोहै वाके उरको वाड्वाअग्नि को
जोगेह समुद्रसो सेम्मानहु अर्थात वाको उदर ऐसो विस्त्रतहै दूसरो हीरासो सोद्धि ये
अथनिश्चलवर्ननं सतीसमर इति कायमनो इति महाभय जेतासो महाभयके जीतन वारे
सो वेमोहन सों मोहै अहिक्रमसो पुवा अवस्था कलिमैं करूनालयहै तोहू लसतयुग द्वापर त्रेता
इनमैं तौ होयही होय अथचंचलवर्ननं तरल इति प्यारजन सोकायरजन अरवालक
चंचल अरकालकी विधिहै सो चंचल कुलटा इति कुलटा कुटिलाकटाक्ष येतीन्यूं चं
चल भौंरज्यों इति लोलसो स्नेह चंचलहैं स्नेहहैं ते घलषंजनसे चंचलहैं वडेनको स्नेहहै
तासें वहुवचन कह्यो जेसी चपला चमकेहै तैसोही यह स्नेह चपलहै अथसुषदवर्ननं
पंडितइति दानमान इति सोमसो सोध्यता पंडित इति अथदुषदवर्ननं आधिव्याधि इति
पाप इति असहनसील सुभाव औ सो भनन ही होय और असहनचरित्र होय कुजन इति
कुजनसो वाकर आछो न होय वाहन इति अपनो चित्त चपल होय सो आछो नहीं अथ
मंदगतिवर्ननं कुलतिय इति वुधसो पंडित विषै काम क्रोध मदयेमंद है होइ यथा कोमल
इति अथसीतलवर्ननं मलयज इति औरसो रोक तरहके हिमसो पारो पानीको जमैहै सो
यथा सीतल इति हरषहिरातहै सो इनसीतल उपचारन के कीयेंसूं तेरो हरष बो यो जायहै

चंद्र चंद्रिकानिवार सो चंद्रकाको उसखीहै तासौं नायकाकहतहै अरहरष जो नायकके ध्यानमैं मिलेताको सुषसो भी हिरातहै
कहाजात रहतहै चौगुनो दुषसो एक तो विरहसों पीडा दूसरे ध्यानमैं नायकेसों मिलन यो सो दुह्यो २ तीसरो दुष रोगको रहै इला
नको रहै ३ चौथे सखीको मरवनता ये चारयो दुष =

बहिरंगसखीसों अंतरंगसखीकीउक्ति अथवा अंतरंगसखीसोंनायकाकीउक्ति अथतनुवर्ननं
रिपुइति विरहकोसंतापहैसो संताप संज्वर दोऊतनुवस्तुकोनाम बजागिसोबीजुरी यथा
केसोहासइति बायकोबहन सोतुरीपवनकोलगिबो तीसरीतुककोअर्थ जनमकेसंगजा
तकहेहैं उपज्यो ऐसोजोजीरनज्वर ताहूकोपरनप्रतापसह्योजाय अथस्वरूपवर्ननं
नलनलकूबरइति सुरभिबजसोअश्विनीकुमार हरितिनकोसुत प्रद्युम्न अरमदन किं
वाहरिसुतजयंत इंद्रपुत्र येतीन्योंसुंदर कोहैइति रमयंती इंदुमती रति छिनछवि सो
बीजुरी इनसबनकूं रातिदिन सिंगारियेतोहू सीताजीकीबरोबरि छवीलीनहोय जात
वेदसोअग्नि संज्ञोयो जोजातरूप सोंनो सो सीताजूकेरूपआगे विरूपसोलगैहै मदनकू
रूप अनरूपसोनिरूपभयो सोमदन कू जोएत्वी ताविषेरूपवंतहतो सोअनरूपनिरू
पनकियो गयो अर्थात रूपकरिकैं रहितभयो बहुरूपचंदकों अनुरूपसोसीताकेरूपब
राबरि कैसेंविचारिये पश्चातसादृश्यपयोरनु इसमरे रूपहीकेरूपकोतो आरूपहीकेरूप
कतो ऐसें दोऊपाठहैं दोऊपाठनकोअर्थ मर्तिवंतरूपके रूपको अरूपके रूपकजो
गहनेंा अथक्रूरस्वरवर्ननं झींगुरइति कोल सूवर इक भिड़िहा करभ ऊंट झिल्लीते
इति झिल्लीसोझींगुर राटेयह आडीननावरकोनाम सरारि राटि राड़िष्य इसमरे साऊ

उपहाससनिंद्य
सहितहासी

11A

सोस्यारनी काकनकीका[illegible]री सोकैयानकीकागली तेकाकीवांनीहैं घरनि सोघरनी अथसु
स्वरवर्ननं कलरवइति कलरव सोकबूतर पारावतकलरव इत्यमरे तंत्रीवीना कंठआदिदे
सुस्वर औरहूजानियें बंस सोबांसुरी केकिनकीइति सबनकेमन मनमथको मनोरथरूपी
जोरथ ताकेपथमारगमें सोहियेहै काकली सोबोली काकलीतुकलेसूक्ष्मे इत्यमरे नारित्त
कुमारिकासी कुमारिनारि अथमधुरवर्ननं मधुरइति सोमकर सोचंद्रमाकीकिरनि मीठी महु
वोइति साचेइष्टजोसाचेमित्र वारिकइति रदनछदसो अधर ओष्ठाधरोतुरदनछदो दसन
वासती इत्यमरे अवलवर्ननं पंगइति पातनइति सोतेभाइनभए सो पंचोपारस्थानकी
कथामे कारियाचतुर्भुजभयो मांगिनेकू सोमागिताभए अरहूारपाल इत्यादिभये
औरकाठमेंकोन तुमहीहते औसेवेदपाठमेंवषानेंहै अथवलिष्ठवर्ननं पवनइति सि
धइति गुरुसो बृहस्पति वालवघ्नोइति सिवकेकरमें सरहे अरकपालस्थलीहे सो
हलीजोवलदेवतानें तानेंहालाजोमदिरा सोग्रहनीकानी अथसाचरूठइति केसवचारि
इति हाथीनइति औरकहिये औरअंगहे सोऊसंगनरहेगो अजोई चितअंतरचेतरे
चेत उक्तिमनसो अथवा औरकाहूसो रामसाचो औरहाथीआदिदे सबरूठे यामेंय
हीसाचरूठकोवर्नन करियघा अनहीइति बिनांहीठिकानेंकोठगहे जगतहेसो ठिक

नांवढिकानेंको ठगिवेकीठौर कुठौरजानियें जाकूं ठगे ताहीये वाको अपुनयो ठगावैहै
याठगको कोंनठगसकै याकेडरनडरहै ताकडगह डिगेनहीहै डरिकें औरसंसारके
डरनसं डिगकें डोंडीजो डौंगानाव ताकोसोतरें डिगेहै साचेईश्वर तिनकोकियोहै
इहजगतहैसो ईश्वरसाचे जगतझूठो इहीसांचझूठकोवर्नन इनदोऊकवितनमें सां
चझूठकोवर्नन थिलिमाकीयो न्यारोन्यारोनहीं अथअगतिसदागतिवर्ननं अगति
इति यथा पंथनइति मनोरथकेजेरथहैं तिनकेपंथ पलहूनहींथकेहैं जैसेंगीतनमेंगा
एहैं तैसेंहींपंथनहींथकेंहैं पवनसो जोविचारहै सोईभयोचक्र रकमनिचित्त सोफिर
नवारोचित्त सोचित्त मनोरथकेरथपैंचढिकें भूतलइत्यादिकसवठौर फिरैहै पंथ
मनोरथहूकोरथ सोमन पवन चित्त आपगा येसवसदागति औरहूजानिये गौरिग
नेसइति अथदानवर्ननं थियोनुरामसो राम परसराम दोऊ यादोहामेंदानीहैंसो
याप्रभावमेंसव आवैंगे गौरिगिरीसइति घहनकोईस जोसूर्य गा सोकामधेनु जगमा
तासोलक्ष्मीजा शिविसोराजा भोजइति अथगौरिकोदान पावकइति हरकूं पवर्गमय
अपनैंपतिमांनिकैं पार्वती अपवर्गजोमोक्ष ताकोंदेहै पार्वतीहू पवर्गमयहै परिअप
नाहैं तातें अवर्गदेहै पार्वतीयानाममें आदिहीपकारहै [illegible]पनोयानाममें आदिप

12A

कारनहीं पार्वतीयहनाम पवर्गीहै अपर्नायहनाम अवर्नवर्गीहै पवर्गमयाहै सो अपवर्ग
नहै अथगिरीसकोरांन कांचिडओइति आपयति सोसमुद्र आपयति रयायति इसमरे अ
निलजो अग्निहै सो अधोमुषहै होमकरतबिरियां मंत्रनकरिकैं ऊर्द्धमुषकीजियेहै कालको
रूपकारो कांचकीचकचकाल इतिकविप्रियायां वकसीससोलंका इनसबनकोउलभाव
ऐसोस्वतःसिद्धिहै कछु शिवकेरांनसों नहींभयो परंतुयहांसाचलोदीसेहै हेतबिहीत्रे
ता अलंकारहै तातैं शरनके वरदानतैं हमसबकोंदुषहोयगो यहहेतु मनोचली आंग
नकठिन तातेंरातेयाय इतिनाथाभूषन अथगनेसकोरान बालकइति बालकजैसेंमना
लनकूं सबकालनमें जैसेंतोरिडारे तैसेंहीवे कठिनकराल सोविकराल अरुकालकहे
ताकोनासनहीं ऐसेंदीर्घदुषकोंगनेसतोरिडारैहै अरुविपत्तिकोंहठिकैं हरिलेतहै अर
कमलनकेपातकीसीतरह सोकमलनकीसीतरैं जैसेंकमलयंकजोकीच ताकोंअपनी
जडमैंनहींरहनदेहै तैसेंहीगनेस कलुषजोपाप ताकोंपेलिकैं पतालमें पठवाइदेहैं
अपनांभक्तनको नवकेसीसपै जैसेंचंद्रमारहेहै तैसेंयेगनेस रासकेवबुषजोसरीरकों
अंकजोगोदमैं राषैहै सांकरेकीसांकरन संकटकेसमूहके सनमुषहोतही दसमुष जोब्र
ह्मा विष्णु महेस सोगनमुषकेमुषकों देषैंहैं एकमुषविष्णुको चारिमुषब्रह्माके पांचमुष

क॰टी॰
२३

13

शिवके ऐसैंरसमुषतीन्यौंनकोनामकहत्यो रसमुषमुष सोघी छिलेमुषकोअर्थमुष्य अ
थविधिकोदान आसीविषइति अव तव जव कव जहाँ तहाँ यहांलोकोक्ति अथसरस्वती
कोदान वानीजगइति जगरानी सोजगकेविषैं सोभायमान रानीकोअर्थ यहांसोभायमा
न अथसूर्यकोदान बाधकइति अथवलिकोदान केटभसोइति अथपरसरामजकोदान
जोधरनीइति जपवराह नाम सुंदित सोमुंदी अथरामचंद्रजकोदान जिनकोंदरसन
देहैं तिनकेदरसनसंसारमैंनहीं समुझेजाइ अर्थात वैमुक्तिहोयजायहैं फेरिरामचं
द्रजीकोदांन जोसतइति अथइंद्रजीतकोदान कारेकारेइति विधिसोविधातानैं थले
थले सोपुहप जलथलमैंडोलैंहैं वलघानसुतनांषेहैं अर्थात गनेसहूतें अधिक बल
हैं स्याणुरुद्र उमापति इसमरे अथवीरवरकोदांन पापकेइति आवज नामवहोतवा
जे तिनकोआवजनकेजथ जमावें कितनेकहैं नजानेसोनहीं जानेजाय पाप सोक
रुष अलोक भेरडर दारिद यहसवकलिकोकुनवा कुरमामैंसो कुनवामें इतिश्री
मन्विविधिभूषणभूषिताया कविप्रियायां सामान्यालंकारवर्ननंनाम षष्ठो प्रभा
वः ६ अथभूषनवर्ननं देसइति १ औरऋतुहैते राजकेभूषनहैंसव अथदेस
वर्ननं रत्नषांनिइति २ सुवेससोइनसवनको आछोवेस वर्ननकीजै भाषाभूषित

13A

इसो इसौ आछौ देसकी भाषा सं॰ वर्ननकीजे आछे आछे इति [illegible]ासको गंध जानसो पालकी
आदि वाहन अरु भोगको जोग पुराननमें तीरथके गुनगाये जाय है गोपाचल सो ग्वालियर
रामसिंह औंडछे को राजा मध्यदेशा सो हिमवद्विंध्ययोर्मध्ये यत्प्राग्विनशनादपि प्रत्यगेव प्र
यागाच्च मध्यदेश प्रकीर्तितः अमरकी टीका को श्लोक आर्यावर्त पुण्यभूमि मध्य विंध्यहिमा
गयो सो विंध्याचल और हिमाचल के बीच में मध्यदेस में इतमरे अथ नगरवर्ननं बाईसुति
चोह इति सरितवर सो वेत्रवती अथ वर्ननं पुरमी इति दंवसोरा केसोदास इति विंधके
सो विंध्याचल सो ऊंचो वहोत भीलनको अभीत है चोरेनकूं नहीं जमकी जमाति सी सो
महिष जामवंत के सो रत्नसो रि[illegible] इनको क्रमसूं सुघर अरमीत है अचल अनलवंत है
अरु सिंधुसी नदी करिकैं संजुत है ताही सों शंभु को जो जटाजूट है अथ पर्वतवर्ननं स्रं
गतुंग इति रामचंद्र इति कलभकरिसावकः इतमरे तरीनमें सो पर्वतनकी जडनमें
अथ आश्रमवर्ननं होमधूम इति ब्रह्मघोस सो वेदको शब्द सिंहनको आसन गयंदको
रद न है सो वाच्यार्थ प्रगट ही अरु गयंदको रदन है सो सिंहनको आसन नहीं चलन देन वा
तो है अरु मदनमदन है सो मदनकों जहां मदन नहीं है तापसतें तपसी तिनकौं वानर
जोरें [illegible]र सों लिये लिये फिरें हैं सो अंधन अंधको अर्थ इष्ट कीजे सो वे तपसी आंधरे न

14

हीहैं हदहैं अथसरितावर्ननं जलचरइति ओंडछोइति रेवाकैसीहै अर्जुनजो सहस्रबा
हु ताकीभुजानकरिकैं जाकोप्रवाह प्रबोधितसोरोक्योगयोहै बेतवैकैसीहै अर्जुनजोह
न तिनकीबाहुजोगोहृा तिनकरिकैं जाकोप्रवाहरोक्योगयोहै रजसोरजपती राजनकी
रजमोहै सोरजपतीकोपराक्रम नहींचलनदे अर्थात् पारनहींउतरनदे जगलोचनसर्य
अरजगतकेलोचन छिपोहैसोछैदे गंगासीसोहै सोगंगाजीकोजमुनाजीकोसंगमहै अ
रबेतवैनदीको जमुनासीजो जामुनैंनदीहै ताकोसंगमहै यहांवाचकनहीं तातैंवाच
कलुप्ता अथबागवर्ननं ललितइति कलरवसोइनकोरवसुंदरहै अर पारावतकलर
व रसभरे यहूअर्थजानियें सहितइति देवकोदिवान सोदिवानखानोहै प्रवीनरायको
बागहै दिवानखानोकैसोहै सुदरसनचक्रसहित अरकरुनाकलित जहांविस्नुहैं अरक
मलासनब्रह्मा ताकोजहांविलासहै वहब्रह्मा मधुपजोदेवता तिनकोमीतहै सोब्रह्मज
हांमांनियें येमधुपीवैसोमधुपकोअर्थ सोरूपनयें मंजरीजोसिरोभाग ऐसीजोअ
पर्नापार्वती सोजहांसोहियेहै औरजहांनीलकंठमहादेवहै अरजहांअसोकहै सो
सोकनहीं अरजहांरंभाअपछरासं मंजुघोषा उरबसी अपछरा रंभसहितवोलैहै ह
सफलेजोसर्य जहांप्रसन्नहैं आसुमनसजोदेवतातिनको सु कहियेसुंदरजोसुर

अपर्नाजोसोहिये
है सोकैसीहै मा
नोरूपकीमंजरी
है सोसारतलोहुप
कअलंकारहै

14A

सोजहांसुषदायकहै अवप्रवीनरायको वागकैसोहै सुंदरसुनकोपेड़जहांहै अरकदनाको पेडहै अरकमलासनजोतलाव ताकोजहांविलास आनंदहै अरवहवागमधुपनकोमीतहै मंजरीनकोरूप अपनोसोविना पतोवानहै पं कोअर्थ तिनमंजरीनपे नीलकंठजनाव रहे अथवा तिनमंजरीनपें नीलकंठीकोफूल सोहियेहै नीलकंठीकेफूलकी वेलिहोइहै अरअसोककोरक्तहै रंभाजोकेरा तासोंदंभसहितवोलैहै मंजुघोषाकोघलहै तो सोकोय लज्जरमेंवसीहै हंसफूलसोजहांप्रसन्नहै अरसुमनसजेफूल तेजहांफूलेहैं हंसफूलसु रनकंसुषदायकहैं अथतालवर्ननं ललितइति आयुधइति जीवनजोजल ताकंजोहरैं तिनकोंजिवावैहै अरजेअपनोंवंधनकरें तिनकोंमोक्षदेहैं अथसमुद्रवर्ननं तुंगतरंग इति समुद्रमें अनंतसोशेष महानाग अरभगवान गिरइति समुद्रमेंगिर वडवानल रो रूहें चंद्रोदयतें समुद्रकी वरवारी वहुतहोइहै सेषधरेंइति सेषसंपूर्नविश्वकोंधरेहैं विधिकेरचेजीवनसुद्धा शेसमुद्रा चौदहूंलोक अनंतकोटिब्रह्मांड भगवांनकेएक एकरोममेहैंगे तेभगवांनयासमुद्रहीमेंसोवेहैं यहआश्चर्यदेषो सोएकसागरमें कित नेकसागरहै केरियथा रामचंद्रकायां मतिइति पापकोजोहरिकरनवारो महारुद्रको सरीरहै केसमुद्रहै मतिसोसमुद्र अरईशकोसरीर दोऊविभावितहैं मतिर्भस्मनिसं

ताकोजहांरूपलो हियेहै अपनोसो अमरलताहैमी कोसमेमंजरीतिल कहैकोनामहैति लकवृक्षसोहारसिं गारकोहैक्ष

परी इत्यमरे भक्तिनामराघवको असंपत्त दोऊनकोहै पीयूषविष दोऊनमैं समुद्रकस्यप
कोघर दोऊनमैंदेवअदेवरहेहैं यहीमोहिवो संतकोहियोहै केसमुद्रहै हरिदोऊनमेंवसै
हैं यासूं नागरसोकोईनायकहै केसमुद्रसोहैहै नायककेसोहै चंदनकेनीरकीतरंगनि
करिकैं तरंगितहै सोयुक्तहै सागरकेसोहै चंदनजोचंद्रमा सोजाकेनीरकीतरंगनिकरिकैं
युक्तहै चंद्रमाचंदनोज्ञेयो चंदनंमलयोद्भवं इतिअनेकार्थध्वनिमंजरी चंदनचंद्रमा चं
दनदोऊनको नावनकोनाम अथसूर्योदयवर्ननं सूरउदयइति पंथलगेसबकोय
सो ब्रह्मणादिअपनेंकर्मनमेंलगे कोकइति कोकनदइति मदनवदनहै सोसूर्यहै मदनव
दनकेसोहै कोकशास्त्रकोनदजोशब्द ताकूंमोदकरैहै अवसूर्यकेसोहै कमल अरच
वाचक ईकोनदजोशब्दहै तिनकौंमोदकरैहै दसमुखमुखसूर्यहै केरावनहै सूर्यकेसोहै
कुवलयजो कुमोदिनी तिनकोंदुखदाईहै रावनकेमुखकेसेहैं कुवलयजोप्रथ्वीमंडलता
कूंदुखदाईहै उदितप्रबोधबुद्धिहै केसूर्यहै उदितप्रबोधबुद्धिकैसोहै ननकी असा
धताकूंरोकनवारीहै सूर्यकेसोहै असाधननजेचो तिनकौंरोकनवारोहै सोधवि
तमोगुनविसो उदितप्रबोधबुद्धिपाईहै सोकैसीहै तमोगुनजोअज्ञानता ताकूंदूरि
करैहै सूर्यकेसोहै पयजोगंगाकोजल ताकौंपवित्रकरैहै नवारोहै सूर्यकेसोहै पयजो

15A

मल ताकौंपवित्रकरनवारोहै स्वायंभुवमनु जगमगायहै कैसर्यहै स्वायंभुवमनुकेसो
है तिनकरिकैं जगकीमगजेराह तेतिननैंदिषाईहै राहजोरीति सूर्यकेसोहै जगकीजे
मगराहहै तेजिननैंदिषाईहै मनजो अरमनि दोऊपाठहैं मनिहूंजालोकमैंहै मग
जेराह ताकौंदिषावैहै यहरामजीकीप्रभुताईहै केप्रगटप्रभातकरजोसूर्य ताकीप्रभु
ताईहै रामजीकेसोहै तारापतिजोवालि ताकेतेजहरनवारेहैं तारिकाराक्षसी राव
नकीवहन तारकसोतारनवारेहै सूर्यकेसोहै तारापतिजोचंद्रमा ताकोतेजहरनवा
रोहै अथचंद्रोदयवर्ननं कोकरति रामचंद्रिकायांयथा केसोदासरति हेचंदमुषी
चंद्रमानहींहै नारदहै चंद्रमाकेसोहै कमलकोजोआकर समूह तासौंजाकी करजो
किरनि तासौंउदासहै प्रदोषजोरजनीमुष ताकोसोषकसोदूरिकरनवारो ताथगर
मी तमोगुन अंधकार इनकूंदूरिकरनवारोहै संपूर्नअमृतके विशेशभावकूं व
रषैहै कोकजोचकवाचकई तिनकोककोनदजोशब्द ताकोजोमोद ताकूंचंडकहि
येंक्रोधकरिकैं षंडनकरनवारो विचारियेहै परमपुरूषसोअपनोपुरूष सोकहो
रूपहै अरअपनेपुरूषकेपरसूंनेसनमुषहैं विरहनीनहींहैं तिनकौंसुषदहै
यहविदुजेपंडित तिननैंउरमैंधारीहै याकेहियेमें हरिनहींहै हरिनहै तातैंयहचं

द्रमाहैनारदनहीहै हेहारन नेषि हेचंदमुषी अवनारदकैसोहै कमलाजोलक्ष्मी ताको
आकारस्वरूप अथवा आकरषांनि इनसौंजाकोंकरउदासहै आप्रदोष सोअतिसय
दोष ताकोसोषककूरिकरनवारो अरतमोगुनकोताप ताकौंदूरिकरनवारेहैं अम
तअसेषसो संदर्नमोद ताकेविशेषभावनकौंवरषैहै अमतनाममोक्षकौ मुक्तिःकै
वस्मनिर्वाण श्रेयोनिश्रेयसामृतं इत्यमरे कोकशास्त्रकोजोनदशब्द ताकोजोमोद ता
कौंचंडकहैं क्रोधकरिकैं षंडनकरनवारेहैं परमपुरषजेभगवान तिनकेपदसौंजे
विमुषहैं तिनकौंपरूषरूषहैं अथवा परुषरूषजोशत्रुनकौरूषहै परमपुरुष
सौंजेसनमुषहै तिनकौंसुषदेहैं यहविदुषपंडितननैं उरमैंधारीहै इनकेहिये
मैंहरिहै हरिननहीहै तातैंयहचंद्रमांनहीहै नारदहै अथवसंतरितुवर्ननं वरन
वसंतइति विरहीविहारनकौं बीरहै वसंतहैसो सीतलइति शिवकोसमाजकैसोहै
सीतलसमीरसुभगंगाके तरंगजुतहै अंवरविहीनसोवस्त्रनकरिकैंहीनहै वउस
रीरमैं वासुकिजेसर्पतेलसैहै मधुपगनसो भैरवादिक दारुपीवनवारे सेवनकरैं
हैं गजमुषगनेस परिभ्रत स्वामकार्त्तिक इनकोबोलसुनि संतअसंत सुषीहोइ
हैं अमल उज्जल अरल अपर्नां पार्वती सोरूपनकेऊपरिमंजरीहै तिनपार्वतीके

16A

सुपदनकीरजकरिकैं रंजितहैं तेअसोकहै अरवेसवनकूं देषैंहैं तिनकेदुषहरिहो
यहैं सुमनदेवताफूलेप्रसन्नहैं वसंतकैसोहै सीतलपवनहै वसंतमैं केतजोधुजा
सोगंगाकीतरंगजुतसुपेदहै वसंतको आवकेहत्त रविकरिकैंहीनहैं आवनकेव
पुसरीरमैं सवासुकि लसतहै निकसेहैं मधुपगन गजमुषकौं सेवैंहैं अथवा गज
मुषजोनागकेसरि अरभौंरा येवसंतकूं सेवैंहैं परिभ्रतकोकिल तिनकोवोलसु
निकैं वसंत असंत सुषीहोयहैं अमल उजल अदल पत्रनहीं सोअमरलता ता
केपत्रानहींहोयहैं ऐसोमंजरीनकोरूपहै तिनकीरजकरिकैं असोकनकेजेसु
परथावरे तेरंजितहैं जिनकेदेषेसों दुषदूरिहोतहै अथवा यादुषकूं संतनहींदेषिसकैंहैं
उद्दीपनहैताते नाकेराजदिसादिसानमैं फूलेफलेहैं अथग्रीषमरितुवर्ननं तातेइति सु
षसषे सोसहजहीमैंसूषे चंडकरइति सवरजोभील तिनकोसमूहहै केग्रीषमप्रकासहै
नवरसमूहकैसोहै चंडसोअतिक्रोध चंडत्वमंतकोपनं रसभरे अरवरसो वल इनकरिकैं
वलितहै अरकंदअादिनकोनासकरैहै कीचवीचवचेमीन यहांकाकोक्ति मानकिनको
नकुल उरहररीन यहांहूंकाक ऐसोभीलनको निससमूहकोहै अरथिरचरजीवनकों व
नवनप्रतिहरैंहैं अरअगनकेसिरजिन केनिवासमैं लगैंहैं अराजिनकेधामनहसकेनए

धनुषहैं सोहतनिपानसर सोपावन सुतीरनकरिकैं हतेहैं अथवा विनापंथके तीरहैं तेसोहैं
हैं अथवा विनांपांनीवुझाये तीरनसों हतेहैं अरग्रीषमप्रकासकेसोहे बडकरजोसूर्य
ताकरिकें सरागति पवनहैसो कलितहै सोसंजुक्तहे अरसरागतिजोपवनहे सोसूर्यकेवल
करिकैं वलितजोवेष्ठितहै सोसंजुक्तहै अरकंदआदिनकोनासकरेहै जीवनसोजल जीवनं
भुवनंवनं इत्यमरे कीचमैं मीन विलमैं व्याल दरीनमें कोल कुलअरदुरद इनजागों
येवंचेहैं काककरियेतोनहींवंचेहे चिरजीवनसोसरोवरनकोजल अरचरजीवनसो
नदीनकोजल तिनजलनकूं वनवनप्रतिहरैंहैं अरम्रगसिरजोनक्षत्र सोजवश्रवैहै त
व तनकनिवासहोयहै नवलनायक अरधननायका येधामजेघर तिनमैंसोहैंहैं
अरनिपानजे कूपके अरपासजलाशयहै तेग्रीषमकेहतेसूं सरजोसल सोचिंता तेसें
होयगएहैं आहावस्तुनुपानंस्यादुपकूपजलाशय इत्यमरे वर्षारितुवर्ननं वरवाइति
नोहंसुरइति कालिकाकैसीहे नौंहैं हैते सुरचापसीहैं सुरचापकौंमकोधनुष अ
रचारु अतिसयकरिकैं कंचुकीसोंमुरे पयोधरहैं अरभूषननजरायके अरतरल तरसो
हारमध्य इत्यमरे जोमध्यरत्नतिनमैंमानों वीजुरीआईहै अरहरकरीहैं जाकेसुषरूपमु
षनैंससिकी सोभा अरनैंनजेहैं ते उत्तल कमलनके दलनकीनिकाईकूं दलेहैं अरप्रव

लेहैं अर करेनुका जो हथिनी ताके गमननकूं हरें हैं अर मुकतानके जे मुहंसक बिछिया हैं तिन
केशबदसुषदाई हैं अंबरवलित सो बिछिया पहरे हैं अर नीलकंठ सो सदाशिव तिनकी म
तिकों मोहें है अर वर्षा कैसी है भयो है इंद्रधनुष सुंदर जामें अर अति आनंदित हैं बादर जामें
अर भ जो पृथ्वी घनो आकास ये दोऊ कब नजरि आवे हैं जब बीजुरी की जोति मिले है अथवा
बीजुरी मिले है तऊ पृथ्वी अर आकास न हीं जरे हैं ग्रीषम गई तासों ग्रीषम में एक भतिम
यहोत रहति अर हूरिकरी है सुषरूप ससिके मुषकी सोभा जानें अर ने जो नदी तिनमें
उज्जल जल नहीं दलदल हैं अर तिन काही हैं अर प्रबल हैं क जल जामें अर रज केग
मनकूं रहै हैं अर जिन हंसनके सबद सुषदाई हैं ते हूरि भए हैं अर अंबर में बलित हैं
अर नीलकंठ जो मोर हैं तिनके जी की मतिकूं मोहें हैं अथ सरदरितु वर्नन अमल
इति कासकुल हू मुदित हैं यथा विज्ञानगीतायां सोभावंत इति सोभाका इति सारदा है
के सरद है सारदा कैसी है सोभाको सदन ससि सो है वदन जाको तो हू मद कौं नहीं करै है
अर नरदेवतानकू जिन मस्कार करै है अर कुवलय जो पृथ्वीमंडल ताकौं वरदाई है
सो वलदाई है पवित्र करनवारे जे सुदर पग तिनमें हंसक जो बिछिया तिनकी मार सो
माला लसै है अर जलनके हारकी जो पति सो दिसा दिसानमें धारै है औ तिलककी वि

लकसुंदरहै अरलोचननकी कमलकीसीरुचिहै औ चतुरजो चतुरमुषब्रह्मा अरसवज
गतइनके उरमैं वहसोभाभाईहै अरउज्जलवस्त्रमें पयोधरनकी स्यामता छिपिरहीहै
अबसरदकैसीहै सोभाकोसदन चंद्रमांकोवदनहैजामें अरमदनकूंकरैंहैं सरदन
रदेवनकूंवंदनीयहै यामेंदेवताचितारनकोपूजनहोयहै यातें औरकमोदनीकू
वर सोवलदाईहै पावनपर उरप सो पवित्रजो सुंदरपदस्थानहै तामैंहंसनके
कुमारलसैंहैं अरजलजनके जे हारवरहैं हसोरामाहै सोजंगलेहैं सोवनहैं वरहै
रामाजंगले वनये एकहीनामांतरभेदहै तिनवरहेनकी दीपति दिसादिसानमैं
धाईहै तिलकजोसिंगारहार ताकोचिलकसुंदरहै अरलोचननकेविषैं कमलजोज
ल ताकीरुचिहै अर्थात जलउज्जलहै सोलोचननकौं आछोलगैहै चतुरचतुरनकेमु
षमें अरजगतकेजीमें भाईहै उज्जलप्रकासमें कारेवादरनहींहैं पीनपयोधर सो स्व
तवादरपुष्टहैं अथहेमंतरितुवर्ननं तेलतूलइति तपनसोसूर्य रतिवंतसो इन
वस्तुनवेसंगरे प्रीतिवंतहैं अमलइति यहहेमंतरितुहै कैप्रीतमविमुषकीतियहै
हेमंतरूतुकैसीहै अमलकमलनकेदल लोचनकहिये रोचनहैं लोचनकोअर्थरो
चनभयो अरजाहेमंतमें ललितगतिको समीरजरावैहै अर्थात दाहोमारिजाइहै

18A

अरदीहदुषकोसीतकीभीतहै अरचंद्रकजोकपूर ताकूं आदिजे पदार्थहैं तेआछेनहीं
लगेहैं सोमनुष्यकेसरीरकीप्रकृतिहै घटजोछिन ताकीजो घटना रचना सोघडीघडी
घटतजायहैं यहदूसरोअर्थ रविमुषसुषकीछवि छीनहोयहै सीकरजेहैंते तुसा
रजाडेते स्वेदकहिये सुपेदहोयजायहै अर्थात् पालोजमिजायहै अवप्रीतम विमुष
कीतिय केसीहै अमलकमल दलसेहैं लोचनजाके औरललितगतिकोसमीरज
रावैहै अरसातसोसीतल अरदीहदुषकीजाकूंभीतहै अरकपूरइत्यादि आछेनहीं
लगेहैं ऐसीजाकेसरीरकीप्रकृतिहै अरघटजोसरीर ताकीघटनाजोरचनासो
घरीघरीघटतजाय अरछिनछिनमेंछविछीनहोयहै अरसुषकीजेवस्तुहैं ते
रविमुषहोयजायहैं अर्थात तप्तहोयजायहैं अरतुसारतेंजोसीकरेहैं तातेसीरोगा
तइति कविप्रियायां औरप्रस्वेदआवेहैं तिनतेंसोहतागईहै अथसिसिररितुवर्ननं
सिसिरइति सरसइति सरसवडे असमछोटे येसरकहेवरोवरिहैं औरसरसिजलोचनी
नकौं नृविलोकि वेलोककूं लीक अरलाज लोविवेकूं आगरीहै अरललितलतान
कोजो सुवाहु केलिवो तासूंजानिजनसो हृदअरज्वान वालजेविटपहैं तिनसोंलगी
अरपल्लवनकेऊपर अधरवैठिकैं मधुकौं मधुपपीवेहै अरकरेहैं सुंदरपिकजे

२

कोकिलतेफलशाखजामैं कोकिलपिकइत्यपि इसमरे अरपिक पिपीहासौंहूंकहैंहैं सिसिरसुखकी सागरीहै इहैंत्रिविधिकीपवनहैजाकेगातमैंसं वासविगलितकहैं निकसैहै अबबारनारिनागरीके सीहैं जाकोअलिकाम्हे औरकमलसेनेत्रहै अरदेखिलोकलीकलाज मिटाईजानें ललितलताहू पीबाहुनसरुचहू ज्वालबालजोघिटयविसनीहै तिनकेउरनसंलगी औरपल्लवसेअधरनकोम धुरमधुर पे मतवारेनकैं पीवतहीकहैंहैं सुंदरपिकसोशब्द औरसुखकी सागरीनदीहै सदा जाकी यहगतिहै अरवासवस्त्र अरसुगंधनिकसैसे औरनिकसेक्रमसं इतिश्री त्रिविधिभ पणभविता यां कविप्रियायांसामान्यालंकारवर्ननंनाम सप्तमप्रभावः ७ अथराजश्री भूषनवर्ननं राजाइति मंत्रसोमतो आखेटकइति आखेटकसोसिकार सुरतादिक सोसुरति अथराजावर्ननं प्रजाप्रतिपालइति सोप्रजानकीप्रतिपालाराखें सासन नासनसत्रुकें सोआज्ञा नमाननी इंदअनुग्रहइं छाछमानिधानसो छमा जोदखी ताकीरछामैंनिधानसो प्रवीनहोय नगरनगरइति नगरवैंधनहींगाजे औरकीसामर्थनहीं ईतईतसो अतिरहित अनाहहि शालभा मछिकासुका सचक्रंपरचक्रंच षडेतेइतयःस्मृताः सलभ सोटीडीकीभीतनहीं अथजोपाप तिनमें अधीर्यताकीनी अरिनगरी अगम्यानप्रतिगमनकरेहैं सोचढिजाय हैं अरअगम्यास्त्रीनसों गमननहीं होयहै अरजहांविभचारी भावसो तेतीसों संचारीभा

अरिनगरी जोहै अगम्या तिनप्रति
कौं नकरैहै अरु अगम्यस्त्रीन प्रतिकरैहै

19A

वहे विभचारपनेंकोभावजहांनहीहे औरपराईपीरकीजहांचोरीहे अरचोरीनहीं सास
नसोआज्ञा अरस्वासनकोचलिवो ताकोनासगंधासनजोपवन सोईकरेंहैं गंधासन
नामभोंर पौंननासकोदुर्गसोगढनकेसरीरनकीहीदुर्गतिहे अथराजपत्नीवर्ननं सुंदर
इति सुचिसोसिंगारतामेंजाकीरुचि समानसोमानसहित मानाजिमिइति गुरुजोसिषावैसी
ष इहांतांईप्रजानकूं आगेंपियकूं कामकेहैंइति इंद्रअहल्यापासगयो तासोंअसाध
अथवा सावित्रीनें विधिकूंसापदीनौं तुम्हारीप्रतिमांमतिपुजो अथराजकुमारवर्ननं
विद्याविविधइति विनोदसोक्रीडा हास्यनकेइति दानकरिवेहीके जिनकेसीलसुभावहे
दानवारिविसु अरदेवतानिदानसोनिश्चे परजोसत्रुनकोजोरारमारिवो सोजिनकौंप्रिय
हे अरमनवचकारकेंसाधुहैं विदेहराजकाम अरजनकविदेही इनसारिषे सुंदर अरयो
गमेंनिपुन क्रमसों अथपुरोहितवर्ननं प्रोहितइति वेदवित सोवेदकोजाननवारो कीनें
पुरहूतइति वलकोविलास यहांतांई इसरघ फेरदसारथनें वधकोसुषदेष्यो औपरसरा
मप्रसन्नभए यज्ञकरवायो अथदलपतिवर्ननं स्वामिभक्तइति जनसोंचाकर छोडिदयोइति
आलसकोपरसछोड्यो विक्रमत्वतिभक्तिता अथदूतवर्ननं तेजवडेइति छिद्रहतिमतिसोव
उमिमति अहतिको भाषामें विहतकह्यो लोभसोक्रोध हानेहैंसोलगायरहे अथमंत्रीवर्नं

ये चतुर्दश विद्या है ब्रह्मज्ञान १ साहित्य २ गावे ३ वैद्यज्ञान ४ ज्योतिसी ५ व्याकर्ण ६ धनुर्विद्या ७ तारेबो ८ वेषधरबो ९ कोकमैंनिपुन १०
सवबाहनपै चढिजाने ११ घोडापैचढिजाने १२ चातुरी १३ और सबको बोधदेबो

क०टी०
२०

20

नें राजनीतइति छमीसोसमर्थ आछमावंत केसवकैसेहूइति सर्यकोसुतसोसुग्रीव भष
नभूषन इषनदूषन सोराम सुहमरेइति केनकरी सोकनेंकरी जमलोकमैंवस्ती मर
घषंडकै विषैं पारथनें मारयनीसो अथमंत्रीमतिवर्ननं पंचअंगइति सोतिथिपत्रको
पंचांग असहायसाधनउपायदेसकाल येहूपंचांग अरषटगुननकोसंगहै संधिर्नाविग्रहोया
नमासनद्वैधमासयः येषट्गुन आगमसोशास्त्र निगमसोवेद चौदोंविद्या केसवमादकइति अ
नैसीसोबुरी चौघीतुककोअर्थ जिनकीमति राजानकोंविचाररूपी विमाननपैबैठाराषेहै
वैसीमतिहै वैसीयहपाठनहींहै अथप्रयानवर्ननं चोरपताकाइति बहुजानसोसुषपाल
पालकी राधवकीइति राजश्रीसेजोपदार्थहै सोमंगलरूप लाजा धानकीषील स्त्रवैहै ना
दइसूरइति जनजोचाकर तिनकीसंपति अपनीहै फिरिहैं असेजननहीं मुद्रत समु
द्र सांतसो पृथ्वी तापृथ्वीविषैं मुद्राजोअपनीमुहर सोमुद्रतहै सोचलाइकैं अथहय
वर्ननं तरलततांईइति सुषसुषसो बागकेसकतहोय वामतनहाइति एकतोबामन दो
यपामनसों नेभनाछ्यो हमचारिपावनसोंकहानांषें छेकीसोछेरी वीरसोभैया नैननजो
सोनैंननसोंचपल अथगजवर्ननं मत्तमहावतइति घनसेकारे विधिकेसे वंधवसो विंध
इव वंध चोर वादीसुहद कल्पद्रुम प्रभुजानिसमरिपु सोरर आदिदें द्रवकें अर्थेवबांनि

भेदसो आपसमें
भेद पारदेनों
हितविदायदेनो
अभेदहितकरनो
अतुग्रहसोकृपा
विग्रहजुद्ध मित्र
हपकरिलेनो
काहूजोरावरसों सं
धिमैत्री करनी
समुरसवसो
असंधिसोमैत्री
विदायउरनी बा
हेपुरुबसे

भेद अभेद अनु
ग्रह विग्रह मित्र
हसंधि कही वि
धिजैसी यहूपाठ

20A

अमंदसो संबोधन अथ स्यामवर्ननं सेनारव इति संघट्ट भटसो भटनको मिलिबो अंधसो
रणांध केसबवर्ने हु इति जोगिनि अरु रुद्र के गज इनकरिकैं सहित भवानी अररु इ जुत होय
युद्ध में सोनित इति भरथसबंधु चंद अमत सो भरथचंद सबंधु सो शत्रुघ्न सोई अमत शे
श लछमन राम भगवान समर सोई सिंधु अथ आखेटक वर्ननं जुरसा इति सहरसो सी
ह. गोह बलया सो मारे विधान सो पहरिबो बानर इति बननाम जलहू को सो बन के
जल के जंतु तीतर इति सरभसो अष्टापद जनावर सक सूकर जोवरावर निकर सो सम
ह कुंरर जेर री तिनमें बलनके इति एल सोधम अथ जलकेलि वर्ननं सरसरोज इति
हेलि सो क्रीडा एकरस यती इति हरे हसि हंसवंस सो हंसनके वंसनकू पकरे हैं बिसहार सो हं
सनी की सी तरैं कमलनकी डांडीन की परैं हैं वीचनाम लहरनहू को है मीनगति लीन सो छिपि
जाये हैं रेवतानके दृग मोहे जाय हैं अथ विरहवर्ननं स्वास इति भूख प्यास इति बारबार इति हरि
तहरित इति बननकी जे माला जामैं ऐसो जो वनमाली ब्रज तायें बनवाली जो मेघ बरसे है
बनमाली रूप हरि है अथ घन जो सरी सो है घनक हैं गाढो औरस्याम जिनको ऐसे जो घन
बादर सो तुहारके घन से होय है घने जो सांवन के धौस हैं तिनमैं घनस्याम बिना कैसें रहूं
हृदय कमल रूप जो नयन सो ज्ञाननेत्र तिनसों कमलनैंन रूप को देखि कैं कमलनैंन होउगी

लिजान सो सिवरा
जनावर सहरा
वारसी में बनके
नाम है ताको स
हर छंद के प्रयो
जन करिकै लि
ख्यो

सोआंसूनसहितहोउगी कमलनाम जलको कमलं जलं इत्यमरे भूलिगयोइति बानयान
परिधान मनिलान गान दुति अंगए सातोमुख मेहकेही सबैइति मेहकेहीसबै सोमेहकी
बरोबरिही रहोपूर्वानुराग अथस्वयंवरवर्ननं सचीस्वयंवर इति स्वयंवरकीरसाकरता
सचीहै मंडलीइति इंतनिकीदुतिसोहाथी तातके सांचेदेहकी दीपति भूषनजोतिसमेत
जेनपहैं तिनकीआभाकीसीहै सोभाहोयरहीहै चौथीतुकमैंगम्योत्प्रेछा मानौंसीताको
आनन चंद अरराजानकीमंडली प्रवेश यहांमानौंइत्यादिवाचक नहीं यातेंगम्योत्प्रेछा
अथसुरतवर्ननं सुरतइति भनितं रतिकूजितं सोनायकाकोशब्द रतिसमैं रनित मंजीर
सो बिछियांनकोशब्द आलिंगन चुंबन रस मर्दन नष रद्दन दान अधरपानते जानिये व
हिरति सातसुजान स्थिति निर्जक सनमुख अध ऊरध उत्तान सात अंतरतिसमुझियेके
सवरास सुजान उत्तानसोसूधोहोइबो केसोरासइति सुरतिरीतिकैसीहै प्रथमहींतोभीरु
जोनायकाहै तिनकेभयहोयहै स्वेदकंपइनकौंदेहगहैहै प्रांनप्रियराजीजोसुरत
सोकरैंहैं ताकोवारनसोनिवारनकरैहैं पश्चातिक्रम सोपरनतें नायककोअतिक्रमक
रै औरबिबिधि शब्दयुक्त होइकैं दांतनको दांनपावैंहैं अरनायककेकरकथाकरिकैं
कलितनहींहैं नाइकासकैहै सुमान तिनसों नायकमानैं नहींहै तमदेहदीदीपक तन

ऊरसौं जिनकोजन्म सोकारज

21A

हारहोयहेतवभू
षनसुदेसस्वरूब
नहोयहे

सुदेसकेभूषनहार
दूषनभए यातेंप
रकीया भूषनकेभा
दकोईदुविलेगो
यातेंदूषनभवे

कीकीआनरछासजिकें करजोनष तिनकोप्रहारसहेहे सुदेसजोदेह तामेंभूषनहारये स
वदूषनहोयहें अबकमरूकेसो प्रथमहीतोभीरू येउरपोरा तिनकेभयउपजेहे तोमरूवि
खेरकंप इनकोंदेहगहेहे प्रानप्यारेजेघोरा तिनकोदूसहोयहे वारनहाथी अरपरानि
पयादे इनकोअतिक्रम सोचलिवो होयहे विविधिशब्द होयहे रिजरांनपावेहे कृपांनसो
तरवारि सोकरमेंजिनके तिनकों सकतिजो वरछीवारे नहींमानेंहें तनदेहरादीपक तन
आन वषतरसजिकें करतेंउपज्यो जोप्रहार सवदूषनहोयजायहें परकीयाहोयतो छेका
पन्हुतही प्रथमसमागमश्लेषालंकार इतिश्रीमहाविविधिभूषणभाषितायां कविप्रिया
या सामान्यालंकारवर्ननं नाम अष्टमोप्रभावः ८ ० ०

अथवासिष्टालंकार जातिसुभावइति भिन्नभिन्नइति उपमाश्लेष अभिन्नश्लेषा अविरुद्ध श्लेषओ
रनियमंत सोनियमवंत श्लेषप्रति सोउपसर्गहे सक्छमालेसानिदर्शना अहंकारअलंकारया
हीकोनाउ ऊर्जस्वतकहेहें निदर्शनाहूकहेहेंयाकं केसोनें निदर्शनाकेदोयभेदकीनें औरननें
तीन कीन्हे औ रसवत अलंकार अलंकाररसवंत ऐसोऊपाठहे अर्थांतरन्यास आदिप्रकारको
चतुरअर्थकेइति चतुर अर्थकेभावतें न्यास सो आदि अर्थके भावतें अर्थांतरन्यास आदिप्रकार
कीहे तान्यासको प्रयुक्त जोप्रयोग सोप्रमानहे अथयुक्तालंकारभेद औरयुक्तायुक्त इति ०

र्थ

प्रथम द्वितीय चतुर्थ तृतीये

युक्त अयुक्त युक्तमैंअयुक्त अयुक्तमैंयुक्त दुहुंविधिइति होयविधिको अतिरेक औरअपन्हुति
उक्तसोवक्रोक्ति अन्योक्ति आधिकरनोक्ति औरविशेशोक्तिसहोक्ति इनकौंआदिदैकैं उक्तिअलं
कार भाजस्तुति व्याजनिंदा अमित पर्यायुक्त युक्तसहित इति समाहित सुसिद्धसो समीतसो
हैमीत सुसिद्धहू इनमे स कहिये सहितहै प्रसिद्धविपरीत रूपकइति रूपक दीपकप्रहेलि
का परिव्रतउपमा जमकचित्रसो चित्रा अलंकार अथजातिअलंकार जाकोजैसोइति
पीरीपीरीइति जाति अरसुभाव अलंकार कुवलयानंदमैं एकहीकह्योहै गोरोगातइति
वात अवरोहितहै सोवातचलिरहीहै अथविभावनालछन कारजकोइति एरनकपूर
पानषाएकौसोमुखवास यहांविनाकारन कारनकारजकोउदै ऐसैंहीसवठौरचित्रत
कपोललोललोचन यहांकवित्तकीभरती अलंकारनहीं मुकुरऐंन यहकपोलनको
विशेसन कारनकोइति प्रसिद्धअपनेंकारनकौंछोडिकैं आनहीकारनतैं कारजसिद्धिहोय
दूसरीविभावनां यह इहांविभावनाकेदोयहीभेदहैं नेकहूइति यहचंद्रालोकेनवावनीका
रननविकेवक्रहैं जाएवोकार्य सोविनाहींनवांयैं वक्रभई वानी जोवनकारनकेवक्रकी
नी यहीआनकारनतें कारजसिद्धभयो ऐसैंहीसवठौरजानिये यहांसवजागो जो
वनहीआनकारनहै अथभावसंभावहेतवर्णनं केसवइति सीतलमंदसुगंधसमीर

रागको अर्थ अनुरा
ग अनुरागको रंग
लालहै वैजोकहिआ
ए कारन सोतोनहीं
अरजोवनकीयह
नईरीतिहै यह
प्रसिद्धकारनकूंछा
डिकैं औरकहै यही
दूसरीविभावना

वलिसोरायवे
लि कनक केव
रो संभ्रम आनंद

22A

मैं इनउद्दीपनभावसंमिलिकैं धीरो धीरज हरयो यहीसभावहेत अथअभावहेतवर्ननं जा
मोंनइति साधनयेयाकेसहायक याकेउद्दीपनभावनहीं तातैंअभावहेत अथसभाअभा
वमिश्रितवर्ननं जानितेइति अमृतमैंहीं यहांसेयतुकनतांई सभावहेत ऐसोसाधन
अमृतहूतनमैंनहीं जैसोतोमैंहै साधनयही सभावहेत चंद्रमांकेप्रकासविनां प्रेमसमु
द्रवढै यहीअभावहेत चंद्रमांको प्रकासकैवो यहीहेत अथविरोधाभासलछनवर्ननं
लगेइति परमइति कुपुरुष सोइष्वीकेपुरुष कुदानसोइष्वीदान राहकेंरहतसुषमजीदाक
रिकें सुषरहेहै परदारसोमतुनकोदार अक्रूरसो काहूकोंकरनहींदेहैं कृपानजिनकेकरमे
है औरपतिहै वामलोचनसोटेढेलोचन वालीनायकांनकरिकैंहीनहै अथविरोधलछन
केसवजहांइति जहांविरोधमयवचनहोयसोविरोध आपसितासितइति सषीकीउक्तिनाय
काप्रति तेरेनेत्रसितअसितरूपहैं तिनसौंतचितैं सोचितईतातैं चितकरिस्यामसरीक्षी
रूक्षरातेरंगभए यहविरोध सितकेअसितभए चलिए कांनहीनहैं औरसुनैहैं यहवि
रोधरसनाविनवातैंकहैं यहविरोध तीसरीतुकमैंभरथीविरोध अलंकारहीन जानतहो
जानतनाहिनें सोऊपाठ विनांपाउदौरे यहविरोध दूरदुरीमतिकोंदरसैं यहविरोध
केरिविरोध यथा सोमनइति सोमासुवासयुक्त हासमुधासोसुधास्रो विधिनें विषकेनि

नायककौंसुनाय
कैसषीसंकहतहैं
यातैंअप्रस्तुतप्र
संसाअलंकार

हंसानुरागी हग कानानुसारी है नोहग कानन तों ई जोहेसो हंसके अनुरागी जो हग सो कर्न के अनुसार न चये यह विरोध कर्नके अरु हंस के वैर यातें यह विरोध

वासमो मोहकारी है विषसोहास्यदोग मोहकारी हैं यह विरोध परमहंसनकौं पावनकरनते रीगतिहै ।परि हियहरन प्रकृतिकौं नैंपारी है पावनकरनवारो हैं सोचुरावैं नहीं यह विरोध वारी वेससमैं एकवेर विलोकिकैं बलबीर सेवलीनकौं बसकारि लेवो यह विरोध प्रतीतकैं सैंकरिजे तेरे हग हरिसौं अनुरागी हैं अरु करूनान सो करूना जे हैं तिनहि उसारी है नामहूरि की नी है यह विरोध अथ विशेष लक्षणं साधन इति साधन सो कारण ताकी विकलता होय यहां साधनकौ अर्थ साधक जो कार्य कौं सिद्ध करै सो यहां कनै रीतिसौं साधन भी कहावै औ साधक भी कहावै साधक जो है सो कारन कहियै हेतु नाकारिकैं विकल न होय हीन होय औ साध्य कहियै कार्य ताकी सिद्धि होय जैसें कुम्हार है वाकै चाक नहीं है घडा बनावै है औ रसाधकके र हित सापको इति षाल पुरानी सो शिवके औ दिवेकी भीष मांगे याकूं आदि दैकै साधनका रन विकलता मुहं मांग्यो दे यही साधनकूं सिद्धता दीन्हीं फेरि विशेशोक्ति यथा तमोगुन इति तमोगुन जिनके तनमैं औ घिरयो है सो प्रकाशित है पातक पिताके सुत सो ब्रह्मा को एक मा थो काटि डारयो हो पातकी सो चंद्रमा हासिन जो सो जैसें दासी देडारिये तैसें दे है फेरि विसेष यथा वाजि नहीं इति पति सो प्यारे फेर विर विशेषयका रसिकप्रिया या व्रजकी रति देवतासी देवतादी सेन हीं तौं कोयह पाठ होय तो सबी की उक्ति नाइकासौं मेरेको यह पाठ होय तौ धाय

23A

सषीकीउक्ति फेरिविसेष यथा वाचतम्रावेइति छांहनघांमसोषारीताती औषदिदेषिलेहैं
अरअन्नतरनको अर्थकरें नाडीदेषें औसी वेदई पति रामकरें हैं अथउत्प्रेक्षालछनं केसवइति

घद

हरकोइति जैसेंहद्दवंसगांठिकेजरिजाय पवनलागेसें यहातोरिवो अथवा दृद्धावस्यामें आमवा
तरोग पीठिकेबासकोंतोरिडारे है सेलअरत्रिसलमेरेजानें यहांउत्प्रेक्षा जांनांमानांजहांआवें
तहांउत्प्रेक्षा रामजीकीअनुकूल यह औरवस्तु तामेंजानकीत्वजान सोटोनाननिहै यहतर्क
कीनी फेरिउत्प्रेक्षा यथा अंकनइति अंक सवदसुनेंसमुझें अरथहोइनु अधिकप्रकास
यहांअविद्यामलसंग सोकलं सोकनहीं संसारपंकअंजनयेनहीं चंदनें तमपांनकीयो
हो ताहूकी यह कलंकनहीं छितछाहछलनहीं सुषकारी कोसोचंद केसवहूपानिधान विरा

जाति १सुभाव२वि
भावना ३ हेतु ४ वि
रोध ५ विसेष ६
उत्प्रेक्षा येसातअ
लंकार नवमेप्रभा
वमें है

जमानयेसंबोधन वनचारीसोवंदरा दिगपालनके जेनागहाथी तिनके कंठनताईजायकेंलगी
तुम्हारीकीर्त्ति ताकीर्तिकोयहरूसहे चंदमैंकारोसहे सोसूर्यवंसमें जसके कर्त्ता रामचंद्रजी
भए तैसो चंद्रवंसमें कोईनहीं याकीर्त्तिकेआरोपसें धर्मदुरयो यहसुद्धपन्हुतिउत्प्रेक्षासें
चंदवीचमेंकारोपरिगयो चंद्रवंसमेंरूसपीछेभए इतिश्रीमन्विविधिभूषणाभूषिता
या कविप्रियायां विशिष्टालंकारवर्ननें जातिआदि उत्प्रेक्षान्तं नवमप्रभावः ९
अथआक्षेपालंकार कारजकेइति सुमेधसोआछीबुद्धिवारे तीनहुइति सगरेत्रिविध

क॰ टी॰
२५
२७

मतादिकनमैं कविकुलकौं कौतिककहे वामोरुइति उक्तिसखीकी कामकी स्त्रीरति कौंमकौंवर मोहो तत्रपुरहररूद्रकेपासमतिजाय सोनमानी तवहरनैं भ्रकुटीचढाय अनंगकरिडारौ यहांभूतनिषेध मदनमोहनसोरइति तातेगौरिइति तातेंहेगौरि भ्रूभंगमतिकरो जांनैंप्रान नाथके अंगमैं कहाहोयजाय यहांभविष्यतिनिषेध कोविदइति कोविदनायकाप्रतिसंवो धन कपटकोजोनकारसरहै तेरोसो नायकके तनमैंलगिकें वहरसअपनोंउत्साह तजि देहै क्यूंजो प्रबलक्रूतननेहकोनाहसनाह बषतरपहरेंहै तातेंसरनहीं लगैहै यहभूत निषेध अथआक्षेपकनावकथनं प्रेमअधीरजइति प्रेमादिकआछेपनौहैं अथप्रेमा छेपलछनं प्रेमवषानतइति प्रेमवषानतहीं कार्यवाधहोय सोप्रेमाक्षेपक जोंमोंवहु इति अपनेंप्रेमकौंवषानतहीं नायककोविदेसचलिवोजोकार्य ताकोवाधकभयो अ थअधेर्याक्षेपलछनं प्रेमभंगइति प्रेमकेभंगकेभयसौं जहांसात्विकभावउपजे जहां अधैर्याछेपक केसवइति अधरातिकसोअंस अनुरहेरी यहदूसरोपाठ अथधैर्यातुक लछनं कारजकरिइति विदेसजावो यहीकारनकरिवचनकह्यो पशियाकवित्तमैं विदेस जायवो जोकार्य ताकेनिवारनकोजोअर्थ निकसैहै यहीधैर्याक्षेपक चलतचलतइ ति मेंहकी ओरचितलाइयेही चलेहैजागोगाहै आएहीयहीकाज निवारनअर्थ अथ

24A

संछयाछेपलछनं उपजाएइति कछुसंदेह उपजाय कार्य नहीं होनदीजे यहीसंसयाछेपक गुननवलितइति परमविचित्र यहनायक प्रतिसंवोधन कामकेविरोधी सोज्ञानके प्रसंग रसनेरसिक लाल पानकोषवाईहै ऐसैंपाठहै चित्त यहतुकही सरीकामके यहतुक दूसरी अथमरनछनाछेपलछनं मरनइति तुमचलोमेरेपास इतनेंइतनेअंतननसंम तुआवैगी यहीमरननिवारननिकसेहै नीकेंकेंइति इरषिरकोतिनकोबार दरवाजो ना रदाने जिनमैंहोयहै पानीनिकसे अथआसिकाछेपलछनं आसिषइति आसीर्वादइकें पियकेपंथक दुषदुरायदे सोचलननदे यहआसिकाछेप मंत्रीमिचइति जोयेहे कु सलगात यहांयहअमंगल सोईआछेप सोअमंगलकरिवरनिवो जोमेरोगातकुसल रहेगो तौसगुनसमानहोयगो तुम्हारेचलिवेमें अथधर्माछेपलछनं राषतइति जो हेकहूंइति अथउपायाछेपलछनं कोवहुलकइति सवैया मोकोंइति अथविछाछेप लछनं सुषहीसुषइति अथचैत छपय फलीइति कामरूपसोकंत अथवैसाष केसो दासइति लागसोछविलगिरहीहै भागसोदिसिविदिसिनकोभाग अथजेठ एकमतेइति एकमतमयसोअग्निमय एकमतसोप्रांनी सिंधुरसोहाथी अरसिंधुरजोवतसे सिंधुर अवत विकुलसोव्याकुल जेठसोवडे ऐसैंकहेंहैं सोजेठमें यहहालहोयहै अथअसाढ

पवनचक्रइति चक्रसोसमहु अथसावन केसवसरिताइति चपलचमकतसोबेरबेर अ
थभादौं घोरतघनइति घोषआभीरपल्लीस्यात् इत्यमरे घोषगांउ सोघोषमेघकोशब्द अ
र्थनिर्घोषसोबीजुरीकोशब्द तिनकरिकैं मंडितहै धराधरनि सोधरानिकोधरिधिरि रातिदिन
जानेनहींपडेहैं अथकार प्रथमधिंदइति छत्रनरेसोधारि मंडितसोसोभित अथकातिकव
नउपवनइति अथअगहन मासनमेंइति भारथसो भरथखंड अथपूष सीतलजलथलइति
अथमाघ वनउपवनइति संतअसंत अनंतगतिसंखेलैंहैं अथफागुन लोकलाजतजिइ
ति परवाससो अबीर माथामैं इतिश्रीमहिविधिभूषणभरविताचां कविप्रियायां वि
शिष्टालंकारवर्ननं आक्षेपलंकारवर्ननंनामदशमप्रभावः १० अथक्रमालं
कारलक्षणं आदिअंतइति क्रमसो एकहोयतीन अरएकावलीऔरयथासंख्य इनसंक्रमा
लंकारकहिये धिकमंगनइति इहांक्रमालंकार अरएकावलीयथासंख्यनहीं सोभितसोनइ
ति छपयमैंग्रहतपरएकावलि सवैयामैंमुलपरएकावलि तजहिजगतइति धर्मतजि यह
विनभूपति सोवडेराजानकोधाय्यौ धर्मनहोय सो तजिये यहांहूंमुलपरएकावलि अजिले
अजिलेजोगकरि पिछलीपिछलीबात नहीपावियेउ ध्यविये एकावलिहैयात इतिरस
रहस्ये एकआत्माइति रविकोचक्रपहिया एक सुक्रकीदृष्टिसोनेत्र एक गनेशाकेरांतएक

प्रेमाक्षेप १ अधै
र्याक्षेप २ धैर्या
क्षेप ३ संसयाक्षेप
४ मरनाक्षेप ५ आ
शिषाक्षेप ६ धर्मा
क्षेप ७ शिक्षाक्षेप
८ येनवभेद आ
क्षेपके इहां वैं प्र
भावमैंकहे अरशि
क्षाक्षेपकी वारहम
हीनानकीवारा
हवेकहीक्रमते

चंद्रमांकेहोयजन्म एकअत्रेयकेघर
एकसमुद्रद्विजचंद्रमा

युकरैजद्रुमहासांप

25A

अथदोय नदीइति पत्तसोपत्तीकोवंषदोय मुल्कपत्तरूसपत्तर वड्डुधार द्विजकेजन्मदोय
जन्मनाजायतेसूद्र संस्काराद्द्विजउच्यते दंतविप्रांउजाद्विजा येद्विज इसमरे अथनसोदक्षिणा
यणउत्तरायण दोय कक्षा कांषदोय सिषासो सिषांइपढेतेहोय अरकछाजोमुरगाताकी
दोयसिषा अथतीन गंगइति गंगात्रसोता स्वर्गमंदाकिनी मर्त्येभागीरथी पातालेभोगवती
औवगरेकीरेवातीन गुणासत्वरजतम अरमाधुर्य ओज प्रसाद येहेउगुन अरपावक सो
दक्षनाग्नि गार्हपत्या हवनीयो तथा जठराग्नि वाडवाग्नि प्रसिद्धअग्नि त्रयोत्रय कालसो भूत भविष्य
तवर्तमान त्रिसलकेतीनसलहोइहै अरवलीसोउदरमैंत्रवली अरसंध्यातीन प्रातमध्या

रामतीन

न्हसायं परसराम वलिराम राम येतीन अरपुष्करतीन वूढो सुधावाय मेष्टएतीन विक्रमत
नको मनको धनको विधिओरयद दोउपाठ विधितीन सुभ असुभ सुभासुभ किंवा
वेदविधि लोकविधि कुलविधि येतीन ओरयदपाठहोयतो रामपरमराम वलिराम
इनतीन्योंनकौरामपदहै अरत्रिरदैत्यकेतीनपुर त्रवेनी गंगाजमुनासरस्वती वे
दतीन रुक साम यजु तीनताप अध्यात्म अधिदैव अधिभूत तीनपरताप तन
को मनको वीर्यको फेरिपरसोंल्यानांगजयनंयंथमेंलिषेहैं जुरकेतीनपदसहि
तहैंसो अथचारि वेदइति वेद रिक यजु साम अथर्वण विधिकेवदनचारि जलके

समुद्र च्यारि लवनेक्षु सुरा सर्पिदधि दुग्धजलाय इनमें सौं चारि का दिलीजे सर्पसो घृत अरहरि वाहन सो भगवान के घोडा सेन सुग्रीव मेघपुष्प वलाहक और हरि की भुजा च्यारि सेना अंग सो हाथी घोडा प्यादे रथ उपाय साम दाम दंड भेद जुग सतजुग त्रेता द्वापर कलिजुग आश्रम ब्रह्मचारी ग्रहस्थ वानप्रस्थ संन्यासी वर्ण ब्राह्मण छत्री वैश्य शूद्र सुरदंति ऐरावत के दंत चारि दिशा पूर्व दक्षिण पश्चिम उत्तर व्यूह मकराकार क्रौंचाकार धनुषाकार चक्राकार और चरन छंद के पदार्थ धर्म अर्थ काम मोक्ष अथ पांच पंडुपुत्र सो युधिष्ठिरादि इंद्री त्वचा कांन नेत्र रसना नासिका कवल प्रानायस्वाहा उदानायस्वाहा व्यानायस्वाहा समानायस्वाहा ब्रह्मणेस्वाहा रुद्र वदन ५ काम के बाण पांच मोहन सोषन संदीपन उन्मादकर संतापन लक्षन पांच पुराण के सर्गश्च प्रतिसर्गश्च वंशोमन्वंतराणि च वंशानुचरितं चैव पुराणं पंचलक्षणं पंचअंग तिथि वार नक्षत्र योग कर्ण सहाय साधन उपाय देस काल येह पंच अंग है प्रानसो प्राणोपानसमानश्च व्यानव्यानो च वायवः पंचवर्ग इति पंचवर्ग सो कुटुंब पंच तरसो पंचैते देवतरवो मंदार पारिजातक संतान कल्पवृक्षश्च पुंसि वा हरिचंदनं पंच संधि सो अच हल विसर्ग स्वादि प्रकृतिभाव संधि व्याकरन में पंच शब्द सो

सूत्र वार्त्तिक कोश भाष्य महाकविन के प्रयोग पंचअग्नि सो सभ्य लौकिक दक्षनाग्नि गार्ह
पत्य हवनीय कन्यापंच अहल्याद्रोपदी कुंती तारामंदहरीतथा पंचकेन्यास्मरे नित्यं महा
पातकनाशनं पंचभूत पृथ्वी अप तेज वायु आकास पंचपातक सो ब्रह्महत्या सुरापा
न सुवर्णचोर गुरुसेजगामी औरइनकोसंगी पंचयज्ञ सो पाठ होमश्च तिथीनासपर्या
तर्पनंबली बलि वैश्वदेव पंचगव्यसो दूध दही घृत गोबर गोमूत्र पंचामृतसो
दूध दही घृत शर्करा मधु पंचमाता गुरुपत्नी मित्रपत्नी राजपत्नी तथैवच पत्नीमाता
चमाताच पंचैतेमातरः स्मृता पंचपिता जनेताचोपनेताच यस्त्वविद्याप्रयच्छति अन्न
दाताभयत्राता पंचैतेपितरः स्मृता अरइनकी पत्नीहू माता अथछह कुलिशइति
कुलिशवज्रताकेकोंनेछह तर्क सो वेदांत सांख्य पातंजलि न्याय मीमांसा वैसेषि
कहूदरसन सोइनशास्त्रनकेपढन वारे ब्राह्मन जोगी जंगम सेवरा संन्यासी दरवेस येहूष
टदरसन रितुसो वसंत ग्रीषम वर्षा सरद हेमंत शिशिर अंगसोवेदके सिक्षा कल्पो
माकरण निरुक्त छंद जोतिस येचक्रवर्ती सो युधिष्ठिर वीरविक्रमादित्य शालिवाहन
विजयाभिनंदन नागार्जुन कल्कीजी अरवेणुवलि धुंधुमार प्रवर्त्तक अजेपाल मान
धाता येहूचक्रवर्ती शिवपुत्रमुख्यषट् षटरागसो भैरव माल कोस हिंडोल श्री मला

27

२ दीपक षटमातासो कतिकानसत्रकेछतारा सोछंदो स्वामिकार्त्तिकके षट्वदनकीमा
ताहै गुनछ सो सँधिर्नाविग्रहोयानमासिनौद्वैधमाश्रय आततांईसो अग्निदोगरदश्चैवश
स्त्रपालिर्धनापहा सेत्रदारापहारीचषडेतेआततायनः मधुप अरछप्पेकेछपद अथ
सात सातइति रसातल १ अतल १ वितल २ सुतल ३ नितल ४ तलातल ५ रसातल ६ पाताल ७
लोकसातसो भूलोक १ भुवर्लोक २ स्वर्लोक ३ महर्लोक ४ तपलोक ५ जनलोक ६ सत्यलोक ७ मुनि
सो मरीचि १ अत्रि २ अंगिरा ३ पुलस्त्य ४ पुलह ५ क्रतु ६ वसिष्ठ ७ दीपसो जंबूद्वीप जामेंजामनिको
वृछ १ प्लक्षद्वीपतामेंपाकरिकोवृक्ष २ साल्मलीद्वीप जामेसेमरिकोवृक्ष ३ कुशद्वीपतामेंकुश
कोवृक्ष ४ क्रौंचद्वीपतामेंक्रौंचपर्वत ५ शाकद्वीपतामेंशाककोवृक्ष ६ पुष्करद्वीपतामेंकमल
७ सूर्यकेघोडा ७ वार ७ सागर ७ लवणेक्षु १ सुरा २ सर्पी ३ दधि ४ दुग्ध ५ जलाशय ६ सुरादारु
सर्पीद्धी सुर ७ सो निलादर्शभगांधार षड्जमध्यम धैवता पंचमश्चेत्यमीसप्तातंत्रीकंठोत्थिता
स्वरा निशाद १ ऋषभ २ गांधार ३ षड्ज ४ मध्यम ५ धैवत ६ पंचम ७ सुरजिरदेहरीदीपक सातपर्वत
देवतारूपमुख्यहैं मेरु १ हिमाचल २ उदयगिरि ३ विंध्याचल ४ लोकालोक ५ गंधमादन ६ कैला
श ७ तालसो सुमेरकेच्यारौंओरच्यारिपर्वतहैं तिनपैच्यारितालहैं सो मानसरोवर अंहस
रोवर हैसोभगवानकेनेत्रनकाजलकोहै यहांकदईमरिछकोस्थानहै भागवतमेंकह्योहै

अरयंपासरोवरदंडकवनमैंहे येसाततालहें अथतरु पंचैतेरैवतरवो पतीये अरअखैवट अरकेला
सयेवटहैसो येतरु७ अथवा तालतरु रामचंद्रनैंबेध्योहैसो अन्नअर्थ सोमततधान्य अयईति
अतिदृष्टिअनादृष्टिशलभामूषकाशुका सुचक्रंपरचक्रंच सप्तैतेईतयस्मृता सलभासो टीडी
अथकरतार ईतिनकोनकैवो सोसातकरतार अथवा प्रकृति सत्वरजतम ब्रह्माविष्णुमहे
श येहूकर्त्तार अथछंद सातछंदभारतकीटीकामैंकहे हे अरभागवतकेतृतीयस्कंदकीवा
रवीध्यायमैंसातछंदकहेहै वेही गायत्री१ उष्णिक्२ अनुष्टुप्३ बृहती४ पंक्ति५ त्रिष्टुप्६ जग
ती७ अथपुरी अजोध्या मथुरामाया काशीकांची अवंतिका पुरीद्वारावतीज्ञेया मायासोह
रिद्वार अरकांचीपुरी सोविष्णुकांचीदक्षिणमैहे अरअवंतिका सोउज्जैण अथत्वचा सोसरीर
मैंसाततुचाहैं तुचासोखाल अथसुख पांनपांनपरिधानमनिस्नांनगांनदुतिअंग एसातौं
सुख अथचिरंजीवनर अश्वत्थामावलिर्व्यासो हनुमंतश्चविभीषण कृपःपरशुरामश्च सप्तैते
चिरजीविनः अथमातृका ब्राह्मीमाहेश्वरीचैवकौमारीवैष्णवीतथा वाराहीचतथेंद्राणी
चामुंडासप्तमातरः अरतातपदसंबोधनहे अथअष्ट योगअंगईति यमरु नियमअासन
कहे प्राणायामसुमान प्रत्याहारध्यासनसुहे समाधिअध्यान दिगपाल इंद्रावन्हिर्पितृपति
नैरुतोवरुनामरुत कुबेरईशपतयपूर्वादीनांदिशाक्रमात् अग्नि नैरुत वायव ईशान

येविदिशा इंद्रपूर्ववन्हिअग्निपितपतिजमसोदक्षिण नैरूत सोनैरितवरुणपश्चिम मरुतवायव कुबेरउत्तर ईशईशान ऐसेंक्रमसोंपतिहैं अथवसु भारथकीटीकामेंकहेहैं जल ध्रुव सोम धरा अनिल अग्नि प्रत्यूष प्रभास येवसु अथसिद्धि अणिमामहिमाचैवगरिमालघुमातथा प्राप्तिप्राकाम्यमीशत्वं वशित्वंचाष्टभूतय अथकुलाचल विजयःकुमुदोनीलोनिषदोहिमवाजय जयंतःकालनिशधोवाह्नीकोष्टौदिगद्रयः विजय कुमुद नील निशद हिमवान जयंत कालनिशध वल्हीक येआठोंकुलाचलपर्वतकहावे अथअष्टकुलीसर्पनकी तक्षक महापद्म शंक कुलिक कंवल अश्वतर धृतराष्ट्र वलाहक अथव्याकरण इंद्र चंद्र काशिकित्स्न पिष्य लीशाकटा यनायानोलप वरजैन्म द्रायंतिह्यादशाद्धिका दिग्गजतरुनविचारियाको अर्थ दिग्गजआठौहाथी अरतरुनइनकीहथनी औरतरुनकहे अष्टनाइकाहूजानिये अथदिग्गज ऐरावत पुंडरीक वामन कुमदोजन पुष्पःदंतभौमसुप्रतीकश्चदिग्गजा अथकरनी करम्बोभ्रमकपिलापिंगलानुपमाक्रमात ताम्रपर्णीशुभ्रदंती चांगनाचांजनावतिः अथाष्टनायका स्वाधीनपतिका हृतिका वासकसज्जानाम अभिसंधिकाखंडिताविप्रलब्धप्रोषितावाम अथअंगद्वार अंगद्वारइति आंखि१ कांन२ नासाके३ मुष१ इंद्री१ गुदा१ अथभरषंड रम्यकषंड२ करुषंड३ हरिवषंड४ किंपुरिषषंड५ भरतषंड६

इलावर्तषंड१

28A

केतुमाल ७ भद्राश्वखंड ८ हिरन्मयखंड ९ अथरस प्रथमसिंगार सुहासरस करुना रोद्र सु
वीर भयबीभत्स बखानिये अद्भुत सांत सुधीर अथवा धिनकुच ९ नो होइ है अथ निधि
महापद्मपद्मखर्बशंख मकर कछपो मुकुंद कुंदनीलाश्च वर्चश्च निधयो नव अथ सुधा
कुंड सो कोई तो कहै है अम्रत के कुंड नौ है और कोई कहै है जग में नो नो कुंड पितरन के
करे हैं स्वधा नाम पितरन के भोजन को और अम्रत को अथ ग्रह राहु केतु दीत सोम मंगल
बुध ब्रहस्पति सुक्र शनैश्चर अथ नाडिका सो नाडी ९ इडा पिंगला सुखमना गंधारी गतजि
ह्वा पूखा यशोदमनी कहुं और संखिनी श्रवणं कीर्तनं विष्णोः स्मरणं पादसेवनं अर्चनं वंदनं
दास्यं सख्यमात्मनिवेदनं अथ रस रावन रति रावन के सिर दस १० श्रीराम के अवतार दस १०
कछ मछ वाराह नरसिंह वामन परसराम रामचंद्र कृस्न बुद्ध निःकलंक १० अथ विश्वेदेवा
क्रतुर्दक्षो वसुः सत्यः कालकामस्तथैव च धूरश्च रोचनश्चैव तथा चैव पुरूरवा आर्द्रवश्च दसेते
तु विश्वेदेवा प्रकीर्तिता अथ दोष लताघाते यु तिर्वेधौ यामित्रं बुध पंचकं एकार्गल उपग्रहौ अ
स्त क्रांतिसाम्यं तथापरं दग्धा तिथिश्च विज्ञेया दश दोष महाबला ये दश दोष अथवा चोर जुवारी
अंत्र अन्न कायर मूर्ख कुहर अंध पंगु अरु बधिर पुनि क्लीव होय दस दोष ये हू दस दोष कहावे
अथ दिशा चौपई पूरव अग्नि दक्षिन जानि नैरूत पश्चिम वायव बानि उत्तर अरु ईसान बखा

=२१ एकथलइति इंद्रजीतहै सो पंचमतकी गमतहै सोवन्यौहै दासैनइति दसनसो इंद्रजीत उनराजानकी ओरदेषेहूनहीहैं मागनवनकोन इकहे अहनायकाहीनकी जिनवेचरचाएहैं अथआसीर्वाद मातपिताइति आसिषसोअलंकार मलयमिलितइति मलयमिलित यावको मलयमैं अगरगंधकोमिलिवो अरकुंकुमकोमिलिवो अरजावकसेअरकुसमसेभूषनकरिकैं युक्तजे ललित कर तिनकरिकैं चरनरंजितहे नायककी जनीरीनके बीचमैं बोलमलिनगीहै यथाहोइयोइति अनुत्तमसोमध्यम अथ प्रेमालंकार लबुनं कपटइ

क॰ टी॰
२९

ति प्रेमसोकुप्राले
प्रेमसो प्रेमालं
कार कछुवातइ
तिकलहांतरिता
=३

29 नि अथऊरधसोदशाई आनि अपदशा होतवियोगसिंगारमैं प्रगटदसादसजानि प्रथमकहतअभि लाषपुनिचिंतासमृतवषानि गुनिवर्ननउदवेगपुनिकहि प्रलापउनमाद व्याधिबहुरजडतामृ रनकविकोविदअभिवाद ३१ अर्थ कविकेजेहे अविवादहैं एकथलथित पेरहोसकलगाइकैं काहेकं पेमकोनेमलियो याकवित्ततांई टीकानहीकीनी सोकरनी अथश्लेषालंकार होयती नइति अथहिअर्थ धातइति दरिद्रअरु हाथीकेविदारिवेकों नरसिंघजीकेसेहैं धरनिकेंवि षैंईसमहादेव जिनकेचरनोदकनकूं धरेहैं चतुर्मुषब्रह्माजिनकूंगावेहे ओर सवनकौंसुषदा ईहे कोमलअमलपदकरकहियेकांतिसहितहैं वलिहत्तासवकरा सोवलिहत्त अरकिरनि इनसौं करकहिये अरकमलाकोजोकमलकरिकैं कलितहे कलितदोऊ ओरलगेगो तौउनपदनके गुनकौंनउरमैंलाइये ओरहरनकहिपकेदानकहिये अवसानकरनवारेहैं अवसानसो अंत सातिदीभावसानयो ओरप्रल्हादकोहितकारीहे अरब्राह्मणनकीलातितिननैंउरमैंधारी है भगुलतासहितहैं यहवेदनमेंवषानीहे अंवदलिद्ररूपीहाथीकेविदारिवेकं अमरसिं हकेसोहे पृथ्वीकूंधारनकियेहैं क्योंभूधरनामहैराजाको भूतभमिधरेनयेभूतसोभू धरसोपरवतओरदोऊनकोनाम अरसीसकेऊपरईसकेचरनोदकनकूंधरेहैं ओ रचतुरमुषतेंयहगावैहैं जोसवकौंसुषदाईहे ओरकोमलहै ओरअमलजाकेपदस्थानहे

कोमलअमलपदहै अरकमलानामहैमीकोशमेंवार स्त्रीकोभीहैताकोजोकरकमलतासौंकलितनहीं यहहैसोफेरिगुनकरिकैं कलितहे वहप द गुनहदेहरीदीपक ताअमरसिंहकेगुन कौंउरमैंनआनियें यहकाक आनियेंही यहअर्थहइसरीतुककौ

२९

३ दूर

द धरतधरनिसोक
छपहपहेयकैंध
रनीकौंधारेहैइ

कमलकलितजोकम
ला ताकेआकरजो
नषहताकरिकैंव
लितहै सोवाके गु
नकौंनउरमैंआनि
ये

29A

अरकरसु सोवाके जो करहै सो लक्ष्मी के आकर औरकमल जो नलन इनकरिकैं कलितहै असी तरह हिरण्य जो सुवर्ण ताकी जो कसिपु सज्या ताको दानकरे है वाके गुन उरमैं कौन आनियें औ र अतिशयकरिकैं जो अल्हाद तातैं जिनको हितहै औरआसननके चरन जाके उरभीतरवसे हैं औरजाके वेदपाठ होयहै परमविरोधी इति विअर्थ रुद्रकैसेहैं परमविरोधीजे बैल सिंह सर्व मूसा ते अविरोधीह्वैकैं रहैं है औरदानीनके दानीहैं अरकविजो विवेकी तिनके सब तरह के अतिशयकरिकैं सनमानरूपहैं औरआप अधिक अनंतहैं अरअनंतशेषजि नके संगसोहै हैं और असरनसरनहैं और निकहियेनिश्चकरिकैं रछाकरिवेमें निधानहैं निर्निश्चयविशेषयो औरहुतभुक जो अग्नि तासों जिनके हितकी मतिहै अग्निमांयेपेरहे है औरश्रीपति जिनके हियमें वसेहै औरगंगाजलभावैहै क्यौंमाथेपेवसेहै गंगाजल के सोहे नगकोविराजहै अरसमुद्रकैसोहै परमविरोधी अविरोधीह्वैकैंरहै पन्नगजे देव अरेवग्रह असो सिंधुवषानि औरदानकेदानीहैं क्योंदानीजो भगवान तिनकोलक्ष्मीदी नी कविके सवकहैहे यहप्रमानहै औरजोजल ताको अधिक हियेमें राजैहै अरआपसो जल सोजामें अनंतहै अनंतजो शेष महानाग सोजाके संगसोहैहे अरअसरन सरनहैं क्यौं मैनाक पर्वतकं सरनदीनै औरनिश्चैकरिकैं रक्षाकेनिधानघरहै औरहुतभुकजोवा

श्रीपति सो कुवेर सो कुवेरको हियमें वसैहै

इबाग्नितासंज्ञाकीहितकीमतिहै औरश्रीपतिहियेमेंवसेहै औरगंगाजलभावैहैताकौं
औरजगतकोनिदानकारणहै क्योंजलबुंदतेंजगतपैदाहोयहै अबअमरसिंहराजाकेसेहै
परमविरोधीशत्रु चाकरहोइकेंरहेहैं अररानननमें जिकेंकहियेनाकेंहै अरकाविकेस
वकेसेहैं प्रमाजोमिति अथवा प्रमानसो जिनकोनहीहै औरमनुष्यमें अधिक अनंतहै
आप औरपंडित अथवाराजा जिनकेसंगअनंतसोहैहैं अरअसरनकहियेजेमार्गनही
चलतहैं तेसरनकहिये चलनलगे सरनीपद्धतिपद्या यहस्त्रीलिंगहै सरनपुल्लिंगहै
घंटापथसंसरणं घंटापथकहियेऔर संसरनकहिये अरनिकहियेनिश्चैकरिकेंरक्षा
कोनिधानघरहै अरहुतभुककहियेमति सोहोमजग्यसों जिनकीहितकीमतिहै अरश्री
कहियेसोभाकीजोपतिहैसो जिनकेहियेमेंवसेहै अथवाश्रीजोसोभा जिनकेपति जिन
केहियमेंवसेहै औरगंगाजलभावैहै औरजगकोनिदानकारण भगवानतेभावैहैं अ
यचतुर्थ दानवारिइति राजारामकेसेहैं देवतांनकौंसुषदेहैं अरजनकराजाके धनुष
तोरिवेकीप्रतिग्या यहजातना जातनातीव्रवेदना ताकेदूरिकरिवेकूं अनुसरहे अर्थात
सुल्लहै औरधनुजोधनुष ताकोगुनजोचिल्ला तातेंगुनवरजेहै गुनहेहरीदीपकतें गुन
केसेहैं सरससुहाए औरनरदेवनकूं छयकारनवारेहैंकरमेंजाके ऐसोजोरावन ता

केसोदासवाल्मीक षरदूषनराक्षस ताके दूषनै हैं नवलसोवाल गजमदकहियेदान

जनकपिता
तातसुजनकपिदस्यमरे

30A

केहरनवारेहैं अरुषरदूषन दोऊनके दूषन ऐसेकेसोनैंगाए औरनागकूं धरेहें देहजो
लछमन तिनकेप्यारेहैं अरलोकमें माताजोकोशल्या ताकौंसुषदेहैं अर सोदरभरथादि
कनकेसहायकहैं नयेगुन भाएसो अनेकलीला अवब्रजरामसो वलिदेव सोकैसेहैं दी
नजोदास ताकोजेजल ताकूंसुषदेहैं अरनंद वसुदेवकी जोजातना ताकेहरिकरिवेमेंस
मर्थहे अरधनजोगोधन तापैगुनवरषेहे अर्थात उनकेआभूषनवनावेहै औररस
कहैं जोगोधनताकेरसकूं दूधदही जिनकूं आछेलगेहैं औरनरदेवकी छयकर ऐसो
जोकरमपाप ताकेहरनवारे षरदूषनधेनकासुरताकेदूषनहैं औरकेसोकहैंहे दासननेगा
एहैं औरआपनागशेष तातैंधराजिनकूं प्यारीहे औरलोकमें माताकूं सुषदानिहे सोव
लदेवकैसोहे दाससो व्रासतामें सहायकहैं औरनवलगुननकी एवलदेव भाक्रांतिहे के
वलगुननकी जेश्रीहसते जिनकूं भाएहें अवपरसरामकैसेहे दानमेंसंकल्पको जोवारिहे
सोजिनकूं सुषदहे औरपिताकी जातना हरिकरिवेमें अनुसरकहे समर्थहे औरध
नुषकेगुनविद्याते सरवरषेहैं औरसकहेसो परसरामजी सुहायेहैं औरनरदेव जोराजा
तिनकूं छयकरेहे ऐसेजिनकेकरमहैं औरषरदूषनजो सहस्रवाह ताकेदूषनहोयकैं
हरनवारेहैं औरकेसोकहिये तरुनसरा जेवेहैं तेदासननैंगाएहैं औरनागधरशिवजि

नाकिहुजीवजि रि
छ्यौंदरराछ औ
रजिनकी के वेरषा
ए छेनवीनगुन
मक्रनकेभाए हैं

क.२१०
३१

31

नकूं प्यारे हैं औरलोकमें गुरुपत्नी जोमाता पार्वती
(अथ अविरुद्धक्रियश्लेष कछुकानहरति अविरुद्धक्रियश्लेषमें श्लेषनहीं जैसेंलिष्योहै वहीश्लेष)
(अथपहलीनिदर्शना तेइकरेचिह्न इति सूर्यचंद्रमां क्रियाकरिकैं उपदेसकरैहैं सुषतेनहीं)
(कोककोकनद सोकहर इति सूर्य कोककोकनद विरहितमइति तेईकरेचिह्न यहांसूर्यचं
द्रउपदेसकरैं हैं क्रियाकरिकें सुषतेंनहीं कहा जोहमारीसीतरह सुषदुःष प्रगटकरो
जहांक्रियाकरिकेंउपदेस तहांपहलीनिदर्शना सुषतेंउपदेसहोय तहांनहीं)
ताकूं सुषदानिहै आलीमाहेश्वरी इस्मरे औरसोहरनके सहायकन भए बलकेगुन
होजिनकूं भाएहै अवरजारामसाहिकेसोहै दानबारिजेभगवान तेजाकौंसुषदेहैं जनक
जातनानसार याकोअर्थ जने कें जातना अनुसार येषदजनके जातकहैं उपजेजेनाम
नुष्य तिनकूं कजोसुषवाककल्यान वाकेजोना सो अनुसरनावरदेहैं औरधनकूं वरषें
हैं तातेंगुनसुहालगेहै औनरानमेंदेवजोब्राह्मन तिनकेकरमछयकरनवारे जेमलेछ ति
नकेहरनवारे बरदूषनकेदूषनजेरामजी तेवानैंगाए औरनागधरप्रियामाति सोनागजे
हाथी तिनकूंधाकहैंकरानवारेजे मनुष्य तेजाकूंप्यारेलगेहैं अरलोकमाताजेलक्ष्मीजी ति
नकूंसुषदानिहै पूजाकरिकें असोहरनकेसहायकहैं ताहीसोंनएगुनहैं औरराजामा

जनजातनाकै अनुसार

केसोकहैदासहोयकैंगाएहै

कंमोलि पुषतो ए सुकशब्द सर्वलिंगकः सर्वनामगलो तेय म सम पं त्रिलिंग कं मो लिसुषतो यदन्नको नामकं
ओर कशब्द तीन्यों लिंगनमें होयहे शि वम्रक कहिये शिवके गलस्तक कहिये अरसस्यजो अन्नतासं कहिये तीन्यों लिंगनकेविषे

31 A

रिद्वारेहे तेयानकं अथपंच अर्थ भावतइति लोकनाथसोब्रह्मा सोकेसोहे हंसभगवानतेंउ
पजेजेगुण तिनकोंसुनिकें सुषपावेहे अरहंसभगवानजिनकं परमभावेहे ओर सं जो कल्मा
नताकोजोगीत बेद ताकोभीतहे ऐसें विबुधननें वषान्योहे विबुधजोदेवता ओरसुषकं रे
ऐसीजोसकति सामर्थताकं धरेहे शक्तिपराक्रमपलो ओरसमरसनेही याकेपद सम
रस नेही नेहकोरस सवनपे समानहे अरबहोतवदननतें विदितविष्यातहे नसजिनको ऐ
सेजोकेसो तिनकं सहोइकें ब्रह्मानेंगायो अरद्विजराजजेहें सहं तेजाके पदजोस्थान जामें
राजेंहे अरवेहंसहें तेरईअज्ज्वलभषनहें अरकमलासनप्रकासहीहे अरपरकहियेश्रेष्ठ
दाराजो ब्रह्मानी सोजिनकं प्रियहे अवत्रिलोकनाथश्रीकृस्नकेसेहे हंसश्रेष्ठजोसूर्य
तातेंजातकहियेउपजीजोजमुना ताकेगुनसुनिकें सुषपावेहे ओरजमुनापरमजिनकं
भावेहे ओरसंगतिकेमीतहे यहवात विनोंपछी तेईभए बुधपंडित तिननेंवषानीहे
अरसुषकोंदे ऐसोसकतिकहियेप्रभाव सोप्रतापताकोंधरेहे शक्रयतीश्रभावोत्साह
मंत्रजा अथवा शक्तिराधा तिनकं धरेहे प्रभावउत्साह मंत्रतेंउत्पन्नभई येतीन्यूंशक्ति
अरप्रद्युम्नपुत्र सोईसमर तातेंसमरसनेहीहें अरबहुवदन शेषमहानाग तिनकेवदनन
में विदित विष्यातहे जसजिनको तिनकं केसो कहे शेसगावेहे अरद्विजराजपरसोभ

सखा मैंना

ऐसे लोकनाथ
त्रिलोकनाथ र
घुनाथ कि जो
भरतनाथ तम
देवजियजानि
वें

गुल्लता सोजिनकेराजैहै वहीविमलभूषन अथवा वनमालादि औरकमलासनब्रह्मा ता
केप्रकासकरनवारेहैं औरपद्मराजेगोपवधू जिनकोंप्यारीहैं अवरघुनाथकैसैहैं हंसजा
तजेसूर्यवंशी तेजिनकूंभावैहैं अरउनकेगुनसुनिकैं सुषपावैहैं संजोकल्यान ताकेगी
तकेमीतहैं अररविजोपक्षी तिनमेंबुधपंडितजोकाकभुसंडि ताकरिकैंवषानेगएहैं
पुषर अरसमरमैं रावनकीशक्ति करनवारोजोलछमन सोजिनकोमनेहीहै अरव
हुतवरन देवता मनुष्य सोरावनकेमारिवेकोगुनगावैहैं अरकेसौकेदासजोबालमी
क तिननैंगाएहै अरद्विजराजजोगरूड जिनकेघरष्यानमैंराजैहै अरविमलजिनको
भूषनहै कमलजोजलकोहै असनभोजन जीजन जिनकेसे सेजोजोगेश्वर तिनकों
प्रकासकरनवारेहैं अरपरजोघेहद्दारा जोजानकीजी सोतिनकूंप्रियहै अवभूत
नाथकैसेहैं परमहंसजेजोगीश्वर तेजिनकूंभावैहैं अरउनतेंजातउपजेजेगुन तिन
कोंसुनिकैं सुषपावैहैं अरसंगीतकेमीतजे विबुधदेवता तेजिनकोवषानकरैंहैं अ
रशक्तिधरजो स्वामिकार्त्तिकहै अरसमरसजोसांतरस ताकेसनेहीहैं सवतेंहोइउदा
स मनवसतएकहीठौर ताहीसोंसमरसकहेहैं केसवकविसिरमोर रसिकप्रियायां
औरवहुतवरनहैं सोविदितहैविष्यातहैं अरकेसोकोनसदासहोयकेगावेहै अ

किंवा परमहंस सनकादिक अर सुकदेवजी तिनको जातसमूह सोजिन कोंभावैहै ३२

किंवा विबुधदेवताहूहैं विबुधा छताइ समरे

सुषदसो दुषको कारनवारी

शिव आपता उवनसकैंहैं

32A

रद्विजराजजो चंद्रमा ताकोपदस्थान जोशिवकोराजैहैं भूषनविमलयाकोअर्थ विमल
विकहिये विगतकियेहैं मलपापजानैं ऐसीजोगंगा सोजिनकेभूषनहै मलोस्त्रीपाप
विकटकद्दान अर्थ पापविट् विष्टा किट मेल इनसौंमलकहिये स्त्रीलिंगविषें अरक
मलासनसो ब्रह्मा तातैं जिनकोप्रकासजन्मैहै अरप्रकासकहियेप्रगटही पद्मासनक
रिकैं ध्यानकरैंहैं अरपरजोसत्रु तिनकोदारजोमारिवो सोजिनकूंअतिप्रियहै अ
बरामदेवकेसैहैं हंसजेघोडाहैं तिनकौंपरमभावैहैं अरशालहोत्रशास्त्र तेजातकहे
उयजेजेघोडानकेगुन तिनकोंसुनिकैं सुषपावैहैं औरसंगीतमीत हूल अरशिव
विवुधजोदेवता इनकेस्तोत्र वाक्याजिनकेवषानेजायहै अरसवनकौंसुषदहैं अरशक्ति
वरछीकूंधरैहैं अरसंग्रामकेसनेहीहैं अरवहुतवरननमेंविदितविख्यातहैंजसजिनको
सोगाइयेहै अरद्विजजेब्राह्मन तिनकेपर चरन वाष्यान जिनकेराजैहै अरविमलभूष
नपहरेहैं अरकमलाजोलक्ष्मी सनकहे तातैहैप्रकासएश्वर्यजिनको संत्रकोअर्थ ता
तेंयहकर्वैकीबोली हरहार प्रियमानियें याकोअर्थ दारानपर जेहैंषोजा इत्यादिकते
जिनकूंप्रियहै अथश्लेषनेरवर्ननं तिनमैंरति तिनमैंसोपीछै श्लेषकहिआए तिन
मैं वा औरग्रंथनमैंश्लेषहै तिनमैंसवश्लेशनमैं अभिन्नपादश्लेष भिन्नपदश्लेष उ

हंसतुरंगमहंसर
वि हंसमरालसुछ
द इतिअलंकार्थ
मंजरी

अरआपसमैंतीन्योंव्याप्त है

पमाश्लेष एतीन्यों श्लेष सब श्लेषन मैं याप्ति अर आपसमैं तीन्यो आवै है भिन्न अभिन्न यहां
कहे उपमा आगे कहैगो अथ अभिन्नपदश्लेष सो हतिइति अब काम की सेना अब काम से
ना पात्रा के सी है कंदर्प की सेना के सी है सुकेसी आदि जामैं सो है हैं अर राजा राम मोहिवे कों
सुरत सोहि ये हैं याको अर्थ आराम चैन सहित राजाई दू वाकां म इनके मोहिवे कों जिनकी
सुरति सुहाई है अर कलरव कोकिल इन करि कलित है अर सुरभि वसंत राग रंग इन करि कैं
मंजुल है अर कमल जो सेना को वदन है तापैं भौंरन की छवि छाई है अर भृकुटी जो सब
न की कुटिल है तेई धनुष हैं तिन करि कैं मन तन भेदिये है अर वे कटाक्ष तनकों सुखदा
ई है आनरस हित है कुच सबन के जामैं अर सब दामिनी सी नायक के साथ है अब का
म सेना पात्रा के सी है आछे केसन वारी सो है है मंजुघोषा सो सुंदर ऊंचे सुर सं गावन वारी ऊंचे
घुहंचघोशला इत्यमरे ओर (राजाराम मोहिवे कौं) वाकी रति प्रीति राजाराम के उर मैं वसी है अ
र राजाराम मोहिवे कों सुरति सुहाई है अर कलरव कलित सो मंद्र सुर सों गावै हैं कलो म्रस्तु
इत्यमरे सुरभि सुगंध राग रंग करि कैं मंजुल है सुरभि घ्राणतर्पण इत्यमरे जातें घ्रान तृप्त होय
सो सुरभि कहिये सोहित्यं तर्पणं तृप्ति इत्यमरे सोहित सतर्पण ये तृप्ति ओर वरन कमनये छ
येन की छवि छाई है अर जाकी भृकुटी कुटिल धनुष सी है अर लोचनन के कटाक्ष सर से हैं

तिन सुमन तन मेंछ्यौ जाइ है अर तन कौं सुषदाई है अर आनंदित जाके पयोधर हैं दामिनी सी
नाथ के साथ सोहै है इहां मंजुघोषा उरवसी आदि कोई पद कह्यौ नही तासें इहां अभिन्नपद
अथ भिन्नपद पद ही मैं पद काढिये ताहि भिन्नपद जानि भिन्न अभिन्न पुनि पदन के उपमाश्ले
ष बषांनि पिछली तुक कौ अर्थ भिन्नश्लेष अभिन्नश्लेष भिन्नाभिन्नश्लेष इन मैं उपमा आ
वै तौ उपमाश्लेष कहावै भिन्नपद व्रषभवाहनी इति वासुकिलसत सो सर्पलसत अर वा
सुकिलसत सो विकसत ऐसें पद कढ्यो तासौं या दोहा मैं भिन्नपद श्लेष पद कढे तहां भिन्न
पद अर एक पद रहै तहां नहीं अथ उपमाश्लेष रंभोरज इति करवाल के सो है अर बालक
के सो है यह तौ रज जो छत्रीधर्म तातें रंज्यो है अर वह रज जो धूरि तातें रंज्यो है यहां रजश्लेषप
द है यामैं तें अरुन लार रुधिर की टूटै है अर वाके तें लार टूटै है कहा और यह तो एक भट
पे तें दूसरे भट पै पसरै है सो जाय है यह तौ सेना के मुष जो मुष्य भषन जो सिरदार तिन कों
विलोकि करिकें किलकिलसो खिलकिविलकि के जाही ताही कौं धरे है मारे है अर वह सुंद
रीन की सेना जो पंक्ति तिनके मुष अर भषनन कं विलोकि कें किलकि किलकि सो प्रसन्न हो
य कैं जाही ताही कं धरे है सो गोदी मैं जाय है अर यह गाढे गढ षेलनसौं सहज ही मैं विलो
नान की तरह तोरि डारे है अर वह गाढे गदन की नकलैं बनाइवो येही षिलोना तिनकं

भटही अंकरूप

सेनाहा सुंदरीन पक्ष

34

बेलनसोव्यालहीमैंतीरिउगेरैहे अरयहतोजगतकेविषैं नयकोजोनसचारुसुंदरताकं भरैहे
अरवहजगतकेविषैं चात सुंदरजोचंदु ताकं भरैहैं नयपरमुषभषन किलकिकिलकि इन
मारीपरन मैंश्लेषहै तिनमैंइति भिन्नपदप्रतिभिन्नपदउपमाश्लेष येजेसें सवश्लेषनमैं
मिलिरहे पीछेकहिआएतेसें अभिन्नक्रूय अविरुद्धक्रूयविरुद्धकर्मानियमवान अरुश्लेष
येविरोधी येहूश्लेष ऐसीतरहइनतें पीछेजेश्लेषकहिआए तिनसवनमैंमैलेहैं अथ अ
भिन्नक्रूय प्रथमप्रयोगियतइति रामचंद्रजकोदान अरक्रूपानकेसेहै दान प्रथमहीगज
द्विजराजनकौं प्रतिसोप्रयोगियतसोरीजियतहे क्रूपान प्रथमहींगजराजनकेजेद्विज
दंत तिनप्रतिप्रयोगितसोपरजोछिएहे पीतालीजेहे दान सुवरनसहितहे अरजाको
प्रमान विहतनसोकहिवेमेंनहीआवैहै क्रूपान सुवरनसहितहे औरजाकोप्रमानविह
ननसोकहिवेमैंनहीआवैहै षड्गेतुनिस्त्रिंशाचंद्रहासासिरष्टयः षड्गनिस्त्रियाचंद्रहास असि
रिष्टि येसवतरवारिकेनावहैं निस्त्रिंशयानावको अर्थ यहजो तीसगुरतें आगें यह प्रमान
कसो जोतीसआंगुरनसं इतनेंआंगुरनताईं तासंक्रूपानहूंको प्रमांन नहीं यहूतरवा
रकोनामहे दान केसोहे जलसहितहे अरदांनको जो अंगविधि ताकरिकें सहितहे अ
रविक्रमजोप्रतिज्ञाक्रिता ताकेरंगको दान अरक्रूपान दोऊनके प्रसंगहैं दान अरक्रूपा

करवालवालतीला सीकरतहे यहपर नोपमाहे करवाल उपमेय बालउपमांन लीलाकरवी धर्मसीवाचक

सोसंषदिहोय

प्रयोजियत न प्रमानहे

34A

न दोऊ कोसजोभंडार अरम्यांन इनतें प्रकासमांन होइहै अरदोऊही धीरजकीनिहैं दानअरकृपा
नदोऊदीननकीदयारछ्याकरैंहैं अरदोऊही प्रतिभटनकोसालहै अरदोऊहीकीरतिकों अरप्रतिपा
लकौंकरैंहैं जहांनजानेहे अरदोऊनकौंदेषिकैं दुनीकेविषैं दानजेमदवारे अरदानी ते
दोऊ विशेषकरिकैं लीनहोयजायहैं सोछिपिजायहैं प्रयोगित विहितप्रमान कोसतें प्रका
समांनदयाकरिवो सालकरिवो कीरतिकरिवो प्रतिपालकरिबो लीनह्वैवो येसवदोऊन
कीअभिन्नक्रियाहै दानको धर्मको सुषदाई कृपाको धर्म दुःषदाई येयहांक्रियादोऊन
कीएक अविरुद्धक्रिया कछुकान्हइति कोकिलकोबोलिवो अर कामिनिकोमदुबोलिवो
इनदोऊनकी अरवीनकेबाजिवेकी बोलिवोअरबाजिबो येदोऊन्यारीन्यारीक्रियाहै
परि उनकी सोभा बढाइबेमैं दोऊक्रिया विरुद्धनहीं तातें अविरुद्धक्रिया अथविरुद्ध
कर्मश्लेष चंदहेजकोंपश्चिमदशामैं ऊगेहै दोऊभगवंतइति सूरजचंद्रमां दोऊपहली
दूसरीतुकमैं कहिआयेतैसेंहैं तासोंहेदेव हेवलिदेव हेकांमदेव प्रिय केसोरायकीसो
तुमजैसीहै तैसीकहो क्यौंतुमवारुनीके पीवावारेहो तासूंयहकहो सूरजसत्री ताकोवा
रुनीजोपश्चिमदिसा तासोंअनुरागकरतहीं अस्तहोयजायहै अरुद्विजराजदंत ताकों
वारुनीजोपश्चिमदिसा तासोंअनुरागकरतहीं उद्दोतहोइहै सोकहो सूरजकोअस्त चंद्रमाको

मदिरा तातें भास अर वारुनीपश्चि मदिसा

35

उदोत यह विरुद्धकर्म सुराप्रसक्त वारुनी इत्यमरे वारुनी द्विजराजग्रस्त उदोयहां श्लेष ग्रस्त
छिपिवो ग्रोर नास उदोजनम ग्ररवारि नियमवान श्लेष नियमवान सो नियमवारो वैरीगा
इब्राहसनइति गाइब्राहसनके वैरी सबकाल मैं हनिकीनें गाइब्राहसनको वैरी ग्ररगुरुसेजगामी
यहां श्लेष नहींहै वैरी गाइब्राहसनको ग्रंथनमें नियत ग्रैसे मैं सुनियत ग्रोर नहीं यह नियम
सुंदर वरन जे ग्रक्षर तिनकूं हरिवो कविकुलहीको काज है ग्रोर कोनहीं यह नियम सुब
रनसोंनो ग्ररग्रक्षर यह श्लेष गुरसेजगामी वालक है यह नियम मातंग हाथी ही मतवा
रे होयहैं ग्ररमातंग जे चंडाल तेमतवारे न होयसकें यह नियम तंग यहां श्लेष चंडाल
श्वव मातंग इत्यमरे ग्रगम्या सो कोई चलिकें जाय न सकें ग्रैसी जे ग्ररिनकी नगरी हैं ति
नप्रति गोंन सो चलितो होय है ग्रर ग्रगम्या स्त्री विषें गमन जो संभोग सो नहीं होय है यह
नियम ग्रर ग्रगम्यागोंन यहां श्लेष ग्ररदुर्ग ही दुर्गति जो टेढी गति तासों वनाए जाय है
ग्ररसरीरकी दुर्गति होय है यह नियम दुर्गति यहां श्लेष ग्रथविरोधी श्लेष कृस्नहरें इति
संपति विपति हरिवो यह दोऊ कोविरोध ह्सकं दर्पके जातक उपजावनवारे ग्ररग्रकाम
सो निस्कामनि सो हित शिवकामके घातक ग्ररसकामीनको सहाई इहां सगरी तुककौं
मिलायकैं ग्रर्थका जेतब तवतोकृस्न शिवविरोध ग्ररपूर्वार्द्धकी ग्राधी तुककोग्रर्थकीजे

नवीन मनकरिपर संख्या ग्रलंकार है पर संख्या इकव लवरजिहूग्रैं घाल ठहाइ

मरजचंद्रमाकिया पाछे हू ग्रर
यहां हू विभुजिगकरिकें सुषदुःखग्रगविरोधकरैहैं

35A

तवशिवअशिवविरोध अकामसोनिष्काम अकामदेवकरिकैंरहित यहश्लेष सकामसोकामकरि
कैंसहित अरकामनाकरिकैंसहित यहश्लेष आछिपावताफिरावत यहांरूमशिवविरोध
होतएकहीहैं परिहारतेंहरसेवककौंसुषदाईहै यहविरोध अथसूक्ष्मालंकार कोंनहूएक
रति इंगति आकारकोचेष्टा औरचिन्ह मनोहरसोश्रीकृष्ण यहांगतिजोचेष्टा तातेंजियकी
वातजानी याकवित्तमेंबोधकहावै मुसकाइवोआदिआकारतेंजानियें मुखतेंनहींकिहे
मीठीमुसिक्यांनकेलखैतेंसखियांनकछूकह्योसुनाय सहसीहहरायकैं इहांआकारतेंरसर
हस्ये छपाकोछपाय याकीयहपीछलीतुक छपाकोरछपाररति रसरहस्ये अहइहतांते
अथलेसालंकारलछनं चतुराईकेलेसतेंरति चतुराईकोलेससोथोरीसीचतुराई तातेंचतुर
जेहैंतेलेसालंकारकेंसमुझेहैं षेलतहैंरति धाककरकीआंजिवो अरसरोरूहकोसूंघिवो
यहचतुराईकोलेसहै याकवित्तमैंमोटायतहाव अथनिदर्शनालंकारलछनं कोंनहुंएकरी
ति कौंनहुंएकप्रकारतें संतसोआछीकृपाकरिकैं असतजोबुरीक्रियाकरिकैं समानसोव
रोवरिउपदेसकरैं काहूकों यहतोपहलीनिदर्शना अरसतसोआछो असतसोबुरो इनदो
ऊनकौंसमानकरिये यहनिदर्शना यासौंकोईऊर्जालंकारकहैंहैं अरकोईयासों अहंकार
अलंकारकहैंहैं परयहप्राचीनमतनहीं अहंकारकोंनातजै अलंकारहकारयहहरिचर

36

नकविसरवरिया ब्रालनकांचनयो लछन लीलाहावकरिकैं यहसात्विकभावभयो अथप
ह्लीनिदर्शना तेइकरेचितरति विछलोराजसंबोधन तिनहीकेलोक जेजसहैं तेलोकलोकनमें
भरेहैं जीवनतिनकेभलेहैं तिनकीप्रभुजेराजा तेप्रभुताई रटैहैं स्तनचंद्रमां कृपाकरिकैं उप
देसकरैंहैं राजानकूं यहउपदेसकरैंहैं सोआपनेउदैहीमें मित्रअरुअमित्रहमारेसमानसुषदुः
षप्रगटकरो सुषदुःषआछीबुरीक्रियाआपनेउदैमें प्रगटकरो यहउदैसमान यहदूसरीनिदर्श
ना कीवपुराजरति मिलिवोबुरोनमिलिवोआछौ रोऊसमानमांनैं मरिवोबुरो बुरोभलोसमा
नमांन्यो यहीदूसरीनिदर्शना नमरिवोआछोरोऊसमानमानैंतीसरी चौथीनुक्रमें अलंकारन
हीं औरअर्थसधौ अथरसवतअलंकार रसमयरति रसनकोस्वरूपजोकाजोहोय सोरसवत

यहांरसजानेंजायहै रसवतअलंकारनहींजानेंजायहे औरपोथीमेंरसक्रमसोंनहींहैं अवटी

काभेंक्रमसोंलिषेहैं अथसिंगाररस आनतिहारीरति तुम्हारेतनमेंतुम्हारोआनन औरहीको
सोहै मनजानेहैतैसोरूपनहींकह्योजायहे जैसेंकोईअघातनहीं तैसेंलोचनसोभपीवेंहैं
जोतुम्हेंरहतवनैंनहींहै अरहेवलिजाउ जावोहोतो वातक[illegible]हूंछिनवैठो रसमयहोयसुजानि
येंरसवतकेसवदास यादोहाकेमतसूंतो रसवतअलंकारहोइहै अथहास्यरस वैठतिहैतिन
मेंरति यहांसखीकीउक्तिनायकसों मुतिक्यानलगीयहहास्य अथकरुनारस दूरतेंदुंदुभीरस

जैयाके पुत्रके

36A

दुंदुभीनसुनी भरथननसारसौं आए तिनकी आरतीउतारिवेमें केकईकैं आरतिवढी क्यो दस
रथनैं कालकियो रामचंद्र वनकौं पधारे तासौं तोरनवंदरवारनहीं तारसोतारनकेवाजे
तूरसोऊंचेवाजे नहींवजेहैं वारवधसोवेस्या अथरौद्ररस करिआदित्यइति आदित्यदेव
ता आदित्येयादिविशदो रुद्रनकौं अरगंधर्वनकौं पसुकरकुवेरकौं अवेरजोषोटीवेरवलि
तकरु अर्थातषोटेदिनकरइंद्रवलिकौंसौंप विद्याधरअविद्याकरुसिद्धअसिद्धकरुदित
कौंदासीअदितकरु अनिल अनलजलइनकौंएककरु हेंसुरज सोहेंसुग्रीव सुरजऊगत
ही आसुकहेंशीघ्रहीं संसारकेविषें इतनोवलकरुगो अथवीररस जिहिंसरमधुइति जि
हें कहें जारामचंद्रनैं सरजोसमुद्रविषें मधुकोमदमारयो सरस्वात् सागरोर्णवः इत्यमरे
कर्कशनर्ककोविशेशन षर दूषनत्रसरा कवंधअरतरुजो तालतरु ताकोजोषंडसमूह
सोविहंड्यो जानेंकुंभकरनसंधार्यो तिहिंकहेंतैंराजारामचंद्रवानतें दसकंठकेप्रांन अर
दसोंकंठषंडितकरेहैं अर्थात् करैंगे यहांलछनाहे अथभयानकरस रामकीवामनु
इति तुम्हारीजोदृगआवैंतें सीताकेरूपसंदईहुती नामभिलीहुती वाघमालविकराल
रनसुनो वतंसग्रहदेषि जोरावरअपराधपुनिभयविभाव येलेषि जिनविभावादिकनतें
जिनमनुष्यकेजगतविषें स्थाईभावप्रगटहोइहैं तेनरसकवित्तमें विभावकहावे यहांरामचं

जहांभलेंतेपुदिस मअरसम लोयहा मली तासोंतेद्र

37

दू जो रावर उनको अपराध ये विभाव तौ इन विभावतैं मंदोदरीकैं अथवा औरनकैं भयस्थाई भाव
भए अर यहां मंदोदरीके अथवा औरनके भयानकरस भयो वालिवली इति पूर्ववत् अथ वी
भत्सरस सगरेनरनाइक इति जनककी उक्ति विश्वामित्रतें सगरेनरनाइक हैं एक असुर विना
सो वानासुर वानासुरनैं कही जो सीता मेरी माता अर शिव मेरे स्वामी को धनुष है तासों मैं तौ
छुवौं नहीं अनभावरिको है विवी सुनि औ सुमिरन जानि अरनिछिद्रित दर्पको ग्लानि विभा
व वषांनि अनभावरिको देषिवो सो यहां धनुष चढ्यो देषिवो अर धनुष चढ्यो यही सुमिरन
अर व्रतभंग हमारे भए यहां दर्प निषेध्यो गयो इन विभावन तैं जनकके ग्लानि स्थाई प्रगट भयो
अर जनकादिकन कौंहीं वीभत्सरस भयो अथ अद्भुतरस आसीविष इति आसीविष सो सर्प
न पे कूबवायो प्रल्हादकौं सिंधुमैं डार्यो विष षवायो अर आगिमैं डार्यो सो आगि सैं कछू
नां तौ कहा यहां काकु ऐसो हरण्यकस्यप विना कोनसे पितानें पुत्रको प्रेम छुड्यो हो
अर द्रौपदी ताकी देहमैं कपडानकी सुधी ही कहा एकही वस्त्र पहरें ही परि षल जो दुस्सासन
सो षिसानो परयो तौ हू वह वस्त्र षुस्यो नहीं षुली सो कपरानकी थई सो गोन विधिवानसो ब्रह्मा
स्त्र तानैं जब सबही को बलन कर्यो हो तब पेटमैं तो परीछतकी मीच वंचाई अर पारथकी जि
न आलिहूसनें मीच वचाई कृस्ननैं इछासों घटोत्कछ पैं वरछी चलवाय दीनी अर अर्जुनके

37A

शास्त्रइरवायहीने तासोंब्रह्मास्त्रकोजोरनचल्यो अनाथनकेनाथरघुनाथनहीहैंतोहाथीकहा
अपनेंकरकेहथ्यारसूंछूट्यौहो जहंअत्रहोनेंदेखिये वचनरचनअनुरूप अद्भुतरसकेजांनियो
एविभावअनुरूप प्रल्हादनमर्‍यो अनेकताहंकीमौतिनसूं पितानेंपुत्रकोमारिवोविचार्‍यो
अरद्रोपतीकेवस्त्रबोले सोनखुल्यो परीछितकोंअरपारथकौं ब्रह्मास्त्रसोंवचिवो येवातेंस
वअनहोनीहैं सोईविभाव अरइनवातनकेदेखिवेकों अद्भुतरसहोरहै अरजाकोंअद्भुत
रसहोइ सोईअद्भुतरसकोआलंवन अरअनहोनीदेखिवो सुनिवो यहीउद्दीपन आश्चर्य
स्थाई देखिवेसुनिवेवारेसौंवचनकह्योजाय सोअनुभाव अरकंपुअनुभाव हरषसंकचि
तमोहयुक्ति यहांसंचारीभावहे यथा केसोदासवेरइति वेदविधिसाथहीसोसार्थकही
वनाईयासोंमोक्षहोइ परिव्याधि सवरीकों विनांहीसंहितामोक्षकैसेंभयो वेषधारी
हरिवेषा अर्थ हरिवेषकेवेषधारनवारेहोय एककोरी अरतिलकछापावारेभक्त
सोवैसंपूर्णजगतनैंदेषै उनकीगतिभई परितारिकाकूं रामतारकमंत्रकीसीषकोंनेंप
ढाईही हाथीकासीमेंकववस्योहो गनिकामनिकर्णिकाकवन्हाईही परिउनहूंकीगतिभ
ई अरपूतनापतिदेवतासों पतिव्रताकवकहाईही परिवाकीगतिभई यहांअनुभाव
यहांअनहोनीउद्दीपन अरअनहोनेकोंदेखिवेसुनिवेवारोसोआलंवन आश्चर्यस्थाईहर्ष

संकलितमाहपुनि येसंचारीभाव अथसांतरस देखगोजीवनहत्तइति जीवनहत्तनावजीवकाको सिद्धमं
डली तपोवनकथा जगतसमसान एविभावअनुभावपुनिसबमैंसमताज्ञान सिद्धमंडली इत्यादिउद्दीप
न अरजाकोंसांतरसउपज्यो ताहीकीउक्ति अरवही आलंबन सर्वसमताज्ञानअनुभाव अरनिर्वेदथ्या
ई अरधैर्यहर्षसंचारी अथअर्थांतरन्यासलछनं औरें आनियें इति सोएकअर्थवषानिकें दूसरे
अर्थतें वाअर्थकोंपुष्टकीजे सोअर्थांतरन्यास जोरें हूं जोरचलाइ इति जौंहैंचलाइकैंमनकठोरकरि
कैं डरपाईहैं रूठेहूं तौहू वडेदुषहोइहै वंदककूधको मास्योजुबाधि सुजानतिहीं माईजायोनतेरो
याअर्थनैं जोरेंहूं जोंहैंचलाइ इत्यादिअर्थपुष्टकियो वंदककूधकोनांवलियो याविशेषननें
गोपीनकीचककीनी ताकोनावनलीनो सोकहाचककीनी यहसामान्यसोंपोष्यो नावली
जेसोविश्लेषनलीजे सोसामान्य अर्थांतरन्यासकेदोहामेंआगिभेदजताए अरउदाहरनमैं
कवित्त जोरेहूं यह एकभेद कोईकह्यौ लछनचारिकिये जतायोएक सोयह दूसरोभेदविसेष
तेंसामान्यपोष्यो सोयुक्तअयुक्तइति एकयुक्त अयुक्तअयुक्तमेंयुक्त युक्तमें अयुक्त जैसो
जहांजुइति रूपसीलगुन येदुरेहोउकैंभलेहोउ इनकीयुक्तिकेवलकरिकैं जैसोजहांछाजिये
तैसोतहांलाइये योयुक्तअलंकार अथअयुक्तअलंकार गरुवइति गुरुकेवडेदोषतें दूषि
त अरकलंककरिकैं अरभषितनिसाचरी सोतारागनतिनकों अंकभरेहैं अरचंद्रकरमें

38A

उज्ज्वल सो सूर्यमंडल तातें किरनलेकें जाको प्रतिमही नामही नायिक मैंहै सर्पनको बंध आरुनो

पन्नै प्रोषितपतिका तिनको प्रतिबाधक सिंधुमें सों निकस्यो तातें विषकोबंधुहै कमलनैंन

हस्तकोसौं मेरेकमलनैंन हैचंद्रमुषी चंद्रमां तें भ्यायही जरात हैं ऐसोहै तातें भ्यायही जरत

हैं यही युक्ति अलंकार जैसो जहान इति जैसो जहां न बूझिये तैसो तहां होयसो अयुक्त केसोदा

सहोत इति मारतेसीरी सुमारसी ताइरही है अरीत आरसी मैं मुषदेषियेहैं देह देषिबो अ

युक्त अर पतासासे कपोल दृग तिल चावरी लों चनग वांति छीनिले है येसब अयुक्त यही

अयुक्त अलंकार मैलेवार सो षुलेवार अथ अयुक्त मैं युक्त अलंकार असुभैं इति असुभसु

फदिबो आछौ ऐसें ही सब ठौर ऐसी ही जानिये अथवा आगे कै लीबो इति चितई यही आ

गं कैलेबो यहां अयुक्त युक्त पुहन नहीं आगें हैं यहां सब बुरे आछे भए एदोऊ कवित्त अयुक्त

युक्त अलंकार हैं युक्त अयुक्त अलंकार रहैबात इति आछी बात बुरी होयजाय यह युक्त अ

युक्त अलंकार फलसिफल इत्यादि आछे बुरे भए यही युक्त मैं अयुक्त अलंकार फेरियघावा

पापकीसिद्धि इति पाप [illegible] सिद्धि इत्यादि आछे बुरे भए यही युक्त मैं अयुक्त अलंकार व्यतिरे

कालंकार लक्षनं नामहि [illegible] मानन्लु मैं कछूएक भेद होइ सो व्यतिरेक दोयभांतिको एक

शुद्धव्यतिरेक एकसहजव्य[illegible] अथशुद्धव्यतिरेक सुंदरसुषद इति सफलसो दोऊ फलवंद दे
हैं दोऊ सरस संगीत सों हैं द्विजराज पक्षी अरु ब्राह्मन फूलेसो प्रसन्न अरु फूलिबो दोऊ समा
न इंद्रजीत अरु कल्पवृक्ष पर इंद्रजीतके लोचन इत्यादि हैं वाके नहीं इतनों भेद यहउपमेय
अधिकव्यतिरेक है चंद्रालोकके मततें यही व्यतिरेक अरु उपमेय उपमान श्लेष इनकी उक्ति
यातें शुद्धव्यतिरेक सदल सफल सुवास द्विजराज फूलें ई रहत इनसों श्लेष अरु इंद्रजीत उ
पमेय कल्पवृक्ष उपमान कौ संबंध यासें यहां शुद्धव्यतिरेक अरु गाइ ब रावरि या आदि
ले कवित्तमें श्लेष अरु उपमेय उपमानको संबंध नहीं तासों यहां सहजव्यतिरेक अ
थ सहजव्यतिरेक गाइ ब रावरि इति औरसब बरोबरि परि तुम्हारी ओं बिरुझी हैं यही स
हजव्यतिरेक अथ छेकापह्नुति लछनं मनकी वस्तु इति प्रसत्त वस्तुकौं दुरायकैं और ही
कहिये यह तेनहीं यह है ऐसैं दुरायें और कहियें यह अपह्नुति सुंदर ललितगति इति
देवी कैसी है सुंदर ललितगति स्वर्गादिक तिनकरिकें बलित हैं अरु सुंदर वास जो कैलास
तातें बलित हैं तनको अर्थ तें भयो परवकी बोली सरस है सुवृत्त सो सुंदर चरित्र जाके
वृत्त पद है चारत्रेति इत्सरे छंद अरु चरित्र इनको नाव वृत्त उनकी ऐसी मति मेरे मन मानी
है अमल अदूषित सुभ षन निभ षित है औरजाको सुंदर वरन मनहरन वारो है अरु देव

भानहीं है कीर हे भिक्षुक करीर सों पायकैं रहिकैं कहा करिहैं फेरिकही अन्योक्ति यथा य
हां सामान्य तैं विशेष को अर्थ भयो जाको नाम न लीजै सो सामान्य लीजै सो विशेष नायका औरन के
ऊपर रिझारिकैं जो नाइक सों रमि आई है तासों कहैं है यहां अन्योक्ति सखी नाइक सं रमि आई सो
विशेष अरसखी सामान्य अंगअली इति काहू कौं सुनायकैं कहैं अरस सो अन्योक्ति अगिया
नी इलाज इनहूं कौं सखीन के नाते सों साधन लीजै क्यौं एतीन स्त्रीवाची हैं तासं जिन सखीन के
जीव सों जीजियत है तो तेह मारे जी वपे बेलन लगी छायास्त्रीवाची है ताहू की प्रतीत न कीजै
अथ विधि करनोक्ति यासों असंगति को पहलो भेद कहैं हैं काज अर कारन न्यारे न्यारे ठाम
चंद्रालोक के काज कारन न्यारे ठाम विरोधसं सनुआइये सो असंगति रसरहस्य ये होऊ यहां
होयहे औरही मैं इति और को गुन दोष और मैं प्रगट कीजै है उरज करज रेषन सों पीडित की
जै है अधर कपोल रदन करि दलित हैं रसना रस न सो बोलिकें रस मैं रिसायहे उलटि जुल
टिकें लपटाइवे इत्यादि चेष्टा होय जायहै अंग अंग कामिन के पीडित हैं पासो तिनके अं
ग अंग मैं पीड होयहै यहां और को दोष और मैं प्रगट भयो फेरि यथा राजभार इति पतिभार
जुत होयकैं जुद्धन मैं जुरें हैं घटन घटत हैं सो इन भारन की रचना रचीं जायहै एते भार फ
लन सौं उठाय रहे हैं सो इन भारन के दुष सों सत्रुन के सीरषजे मांथे ते फटे हैं यहां हूं औरको

दोष औरमैं प्रगटभयो पीउभारयेदोष फेरियघा प्रतभयोइति याकवित्तमैं तीनतुकतां
ईंतौ औरकोगुन औरमैंप्रगटकीयो अरु चौथीतुकमैं औरकोदोष औरमैंप्रगटकीयो
द्रुमजाथबेदोषसंदरिद्रकीदेह इरागरसं छायगई तोरहसीइति यहांऔरमैंप्रगटकीयो
रिएषुनारनइति रावरकोसोनोंचुरतयोहो सोसुनारननेंरामरीये अर्थातहृंउद्दियेसोसु
नारनसंकेरावरसदुषपायोचहियेजोअैसेंचोरसुनरनकूंक्योंसोयोसोनपायो औरकेस
वसदुषपायो यहांऔरकोदोष औरमैंप्रगटकीयो अथविशेषोक्ति विद्यमानइति कारन
तेंहूंकारनहोइसेविशेषोक्ति कर्नतेदुहइति रुष्टसोक्रोधयुक्त दुर्योधनकीआज्ञानटारे
सेनसोसेना हजारनहाथीकेबलहैं जिनमैंअैसेजोद्धा फेरियघा कर्नहूघाउमइति कृपा
दुजसोकृपाचार्य आरोरिसालेकेंअपनीमसकीनीउत्तराइनमैं औररस्तनाइनमेंनमरें ता
साजिननेंमसबसकीनी इनसबनकेदेषतहाथपसार्यो इनसबनकोंकारनकीजे तवतोविशेषो
क्ति क्योंजोहाथनपसारिसके यहकाजसिद्धभयो चहियेसोनभयो औरइनसबनकूं प्रतिबाधक
कीजेतबविभावना क्योंहाथपसरै याकाजकेयेसबप्रतिबाधक सोप्रतिबाधकनकेहोतहूहा
थपसारिवोकाजसिद्धकानसिद्धभयो यहविभावनातीसरीयहांविभावनाकोऔरविशेषोक्तिकोसं
देहसंकर यहकें यहसंदेह कैरविशेषोक्ति बधन[illegible]वैरहैवानइति विभानविधानसोअर्जुनहई

सोहनी धनसो धनुष नई सोजीनी बान अर्जुनरत्यादि कारन इतनेछिउ इनसके यह कारज
सिद्ध न भयो यह विशेषोक्ति फेर विशेषोक्तियथा सिषेहारीइति उद्दीपन रैनके विषे वा कंज
रावैहै और उद्दीपनले अैसैं गातन विषैं दाह कीनी यहां उद्दीपन सब मांन छुटायवेके कारन
सो न छुटो विशेषोक्ति के जितने उदाहरन हैं जामैं कर्न से तुल्य या कवित्त विनां सब ठोर विभा
वना हू लखैहै तेलनतूलइति बरो बरतो लेक तो टीमें कसे अरवार हवनीमें संनें जानी वाको सो
रनौं होय ते बानी कों वनावें अकथ अपार लिखे पति रामरथवारी करै तोहू सुनारसों नोह
रै यहां विशेषोक्ति अरविभावना हू लखैहै अथ शहोक्तिलछनं हानिहद्व इति हानिहद्व
सुभ असुभ गूढ प्रकास इन मैं सो कछु होउ एक संगही रोयनको वावहु तनको वरन कीजे
सो सहोक्ति सिसुता इति सिसुता अरगति एक संग मंद भई लोचन गुनन सों बलित भए ति
नके साथही ललितगति पाई है भौंहनके साथही बानी कुटिल भई मुषहास मंद के साथही
कटि सूछम भई बारनके साथही बुद्धि बढी कुचनके साथही सकुच आई साथ आयो पांत
है सो आयो पांत सहोक्ति है अथ व्याज स्तुति निंदालंकार लछनं सीतल हूइति स्तुति निंदा
मय इति स्तुति निंदामय निंदा स्तुतिमय सो व्याज स्तुति निंदालंकार सीतलहूइति स्तुति निं
दामय यथा नायक की स्तुति यथा कविप्रिया के मत एक अर्थ स्तुति दूसरे में निंदा होय सो व्या

जस्तुतिनिंदा सीतलहियेमेंनहींवसेहै तुमतन्नउरकोंनहींतजोहो हीरासोजोमन सोदेकें मेंन सोमनलेउगो हीरासे जीकीतुमकोंपरवाहनहीं मेंनसेमनकीवाकूं परवाहहै जोवाकौं वहीजकलागीहे तुमनेंमुहमांग्यो वानेंछलनछोड्यो तुमछवीले वहगवारि यातरहंवाच्य अर्थकरिवेमें नायककीस्तुति नायकाकीनिंदा नायकाकीस्तुतियथा सीतलसोजडतुम्हा रेहियेमेंवाकौंनहींराख्योहो नायकोगेहवाकोहियो तामेंतुमकोंभलेनहींहैं तुम्हारोहैहियो कठोर वाकोमनमृदु तुमकोंवाकीपरवाहनहीं वाकौंतुम्हारीजकलगीहे वानेंमुहंमांग्यो तुम नेंछलनछोड्यो तुमछवीलेऊपरकेहीहो गवारनहींसों सोगंवारपनेंहींसों नेहनिवाहोहै यातरहवाच्यअर्थकरिवेमें नाइकाकीस्तुति नायककीनिंदा फेरियथा केसरिफूर रति ना इकाकीस्तुति लालकेसरिफूर अरतेरीतोरीजेसुगंधफूलहैं तिनकौंसूंघेनहींहैं सदातो विनाउनकोयहहालहे एककालमेंफूलनहींहोयहैं क्योंतेरीसीसुगंधउनमेंनहीं रूपधिनी है जिनसोनायकके पासतू वानिसोर्वनिकसोहेहैं दृगियेहैं तेरेआसपासओरसखीना रवेकूंठाढीहैं तेरेभयसंअरभ्रमसंभोरीहैं नायककीदसासोभय नमानेयाकोभ्रम ना यकोंतेरोकीनोसुत उपगारहै केसहज तेरीसुवासकेहेतसंहरिचित्तमेंक्योंहूं हूंकोअर्थ क्रोधहूहोयहे वसीकछूचोराचोरीनहींवसी यहांकाक सुनितनायकअचेतहे नायककें

42A

लैं आक यही हेतु है नहीं तौ तोसी गोकुलमें गोरी और गुवरहारी सुंदर थोरी ही हैं अर्थात् तोसी सुंदर
नहीं हैं यातरह वाच्य अर्थ कीजै तौ नायकाकी स्तुति नायकाकी निंदा ये जे सब सुगंध हैं तिनकों
संध्यो क्यौं नहीं है जिनकी सुबवासि कूजिये तेमनायवेकौं आस पास ठाढी हैं और नायककी दसा
कौ भय न मानैं याकौं भ्रम तासूं सखी भोरी कीनी अरसखीननैं तेरो कृत काज कीनौं अरकिधौं
सहज एक वास वसिकैं हित करिकैं हरिचित में सखीननैं चोराचोरी सु वसाइ दीनी सुनि आनिकैं
सु अचेत है तेरो चित उनमैं नहीं यही हेत है जो सखीनैं तेरो भलो कीनो अव बुरो कै सैं करैं नहीं
तौ तोसी गोरी कहा गोकुलमैं गुवरिहारी थोरी हैं यहां काकोक्ति यातरहं वाच्य अर्थ कीजे। तौ ना
यकाकी निंदा फेरियथा जानियेनरति जाकी माया जो छल सो जान्यौं नहीं जाय मिलिकैं
मोहि लेहैं ठगिलेहैं एक हाथसूं पुन्य एक हाथसूं पाप करैं है सो याकूं निवारिये हरि कीजे
परदारनकौं प्रिय है अरमन मातंग जो चांडाल ताकी सुतासूं गमन कीनौं चंडाल श्वव मातंग
इसमरे निष्ठुरकौ सो मुष देह कारी है आजिताई अजादि राखे हैं अरबरदनकी लरा
ईजाकौं भावे है एते यें सो इतने दोष हैं अर अनाथ अति सो कहूं को राजा नहीं राजानकौं
छोडिकैं याकौं तिलक कीजे सो भीषम सौं कहा कहौं पुरुषन ः स्त्री ऐसें वाच्य अर्थ कीजे
तो कृष्णकी निंदा यहां सिसुपालकी उक्ति अथ स्तुति जाकी माया इच्छा जानी नहीं जाय है

मिलेहीमोहैहैं क्यौंजादौंही जानैंहैं मवजादौं एकहाथसों पुष्प एकहाथसौंपाय छूकिरिवेके
मोखकरे यह वेदनननपर जो अेहद दारालक्ष्मी जिनकूं प्रियहै लक्ष्मीकेसीहै मत्तमातंगसुतान
कीसीहै चलिवो जोकोई औरगजेंद्रकी वेटीनके पीछेहैं अभिगमनजिनको असेश्रीकृष्णहैं
निसिचरजोचंद तैसोहैमुषजिनको अरदेहकारीहै सोदेहकोउपजावनवारोहै अर आजिता
ई अजादिजे ब्रह्मा आदिदेवता तिनकोंराषें सोरक्षाकरैहैं अतिवरदविनोद भावैंसो मातवरदन
कौंनाथिकैं नाथिजितीयाहिल्याए एतेपे अनाथसो वेवरदनाथकरिकैं राहत राजानके राजानकौं
छोडिकैं इनकौंतिलककरो अरभीषमसोंकहाकहौ पुरषैं सोएई पुरुषहैं औरजे नामनुष्यहैं तेना
रीहैं जैसेंयाज्ञ्याचार्यकीजैतौ कृष्णकी स्तुति अथअमितलछन जहांसाधनेंइति जहांसाधककी
सिद्धसाधनभोगवैंसो अमित अमितसोजाको प्रमाननहीं आननसीकरइति याकुं चित्तमें
चंद्रालोकमततैं व्याजोक्ति भ्राजोकतिकछु औरविधि कहैं छिपे आकार मधिसुककीतेकर्मै
ए मानिक जानि अनार कविप्रियाकेमत अमित अलंकार अनवरचंद्रिकाकेमत उत्तरालंकार
कह्यौ केउत्तर प्रत्युत्तर अलंकार कहोसोएकही यहांसाधकनाइका ताकीसिद्धसाधनजोसषी
तानेंभोगकीनी फेरि अमित यथा कोगनैंइति कर्नजंगमनि वाहीसमेंकोई राजाभएहैं ति
नकौंकौनगिनैं औरहूवडेराजासाथहैं महावदीसाहि दिल्लीको सुलतानसो कितनेकषानकं

43A

साथलेकैंआयो ओंड़छेमैंसबजुरे साहमधुकरहैसोजीकोसकजोरावरहै इतनेमैंइलहरामदौ
रिकैंजीतिकैं अपनेसिरकीरतिकोटीकोकीयो मधुकरसाहिसाधक सिद्धिइलहराम साधननैं
जोगकीनी इलहरामनैंपातिसाहकीफोजमारी अथपर्यायोक्ति कोनहुएक इति कोनहुंएक
प्रकारतें सोमिसनैंविनाकियें अपनोंइष्टजोकामताकीसिद्धहोइ सोपर्यायोक्ति येलतही
इति दैंनलागेदाव आपआपमनभाएरीसोमनमानतीचाल-चलनलगे जलदसे सोआंस
निकसिआए मिसकरिकैंसषीननैंमिलायदैबोकाजकीयो यहीपर्यायोक्ति नवोढानाइका
मुग्धाजहैंभयलाजजुतरतिनचहैपतिसंग ताहिनवोढाकहतहैंजेप्रवीनरसरंग रसराजे
अथयुक्तिअलंकार जैसोजाकोइति जैसोजाकोवुद्धिकोवलहोय तैसोईएकरूपवनायवो
होकीजियै सोयुक्ति याकेवहोतस्वरूपहोयहैं मदनमदनइति मदनकेंमदनरह्यो औरमुष
देषिकैं लाजकोघरपकरिलीनोहै मदननैंक्योंजोरतिकोंमुषएसोनहीं जद्यपिमदनजगत
केजीवनकौंमोहिवेकोंसमर्थहै यामुषपैकोटिकोटिचंद्रमासेवारिडारें चंद्रमासेऔरसवया
मुषब्याजहैं अरमुषमल ब्रजराजआजहीलौं रहेसंजमी सोयामुषकेमिलिवेकौं ब्रजराजनि
यमसौंरहैंहैं तेरेमुषकीसुवाससुनियेहै आ कहेऔरनतैं कमलनकौंलेकैंरमी कमल
कैसोहै ताकेमित्र देवसूर्य द्विजभौंरा दुर्गजल दंडडांडी दलपषुरी कोसमध्य कलसुंदर

सवऔरनतैंसलैकैंरमी

दावदैंनलागे सीवे
कहैं हमतीतें गेतो
हमसुषचुंवनकरैं
वकहेहमजीतेंगेतो
हमसुषचुंवनकरैं
गे

द्वादसे प्रभाव में दश अलंकार कहे पांच भेद उक्ति के
वक्रोक्ति १ अन्योक्ति २ विधिकरनोक्ति ३ विशेसोक्ति ४ सहोक्ति ५
व्याजस्तुति ६ व्याजनिंदा ७ अमित ८ पर्यायोक्ति ९ जुक्ति १० ये दश अलंकार

मदनको

44

बल परिवार मित्र देव द्विज ब्राह्मन दुर्ग गढ दंड तरवारि दल फौज कोस भंडार येसव राजा की
वस्तु हैं जाके ऐसो जो रूमस ताके कौन बात की कमी है तौ हूं नायका के मुष नैं जीति लीनौं क
विनैं अपनी बुद्धि करिकैं बल करिकें मुष कौं चंद कमल इन तें अधिक वर्नन कियो यही युक्ति
इति श्री महिद्विभूषण भ बितायां कविप्रयायां द्वादशः प्रभावः १२
अथ समाहितालंकार लछनं होइन कहूं इति छबि सो छबीली इति तकिकैं सो नां बिकैं
लोटि सो उलटिकैं मनाये तैं मांनी आपतैं मांनी यह समाहित फेरि यथा सात हू इति परिहरन
सो घनस्याम धनुष तानि वे को काज कियेस न भयो आपतैं भयो यही समाहित समाहित को लछ
न के सब के मत सम शुद्ध परि रसरहस के मत सं न मिले उदाहरन मिले होइन क्यौं हूं यह दोहा उदा
हाहरन कवित्त दोऊ उदाहरन लछकहो के उदाहन कहो एक ही नाव पहिले कवित्त में श्रंगार रस
वियोग दोऊ हैं अरु कोप भाव की शांति पीछले कवित्त मैं बीभत्स रस अरु शोक भाव की शांति
यहां भाव शांति और श्रंग रस मुष्य जहां भाव शांत्यादिक अंग होइ मुष्य कोऊ और होइ नहीं स
या नालोक ए होइ हैं रसरहस्य के लछन कौं अव और कियेसं कामन होय दैवजोग सं आ
प होइ यह समाहितालंकार को लछन दोऊ कवित्त मैं ठीक ही है रसरहस्य मैं अरु काविदि
या मैं समाहित अलंकार के लछनन कौं अर्थ न्यारो न्यारो होय है तासो लछन एक सेन हीं

44A

उदाहरन दोऊ ग्रंथन मैं एक से अथ सुसिद्ध लछनं साधि साधि इति सिद्ध कं साधे अरसिद्ध कों भोग और ही कोई करै सो सुसिद्ध मलनसों इति मलनि मीकंद इत्यादि रस सोक शाप इत्यादि ड्रामन वडे विछौनो वासन वसन वास सुगंध और विमान यतीजे मान सुषपाल इनस व वस्तुन कों महाजन लोगजोरें अरु छुड़ार कैं वली इन वस्तुन कों भोग करै साध्यो और हीनें भोग और हीनैं कीनों सही सुसिद्ध फेरि सुसिद्ध यथा सरधा इति सरधा याही पद मैं सुसिद्ध है और पद मैं नहीं सरधाम मधुमसिका इत्यमरे महर सो भीलन की जाति और सहर सो नगर सुवार सों रसोइया इहां हू साध्यो और हीनें भोग और हीनें कीनों यही सुसिद्ध अथ प्रसिद्धालंकार लछनं साधन साधें इति एक जनों साधन साधें और वा सिद्धि को भोग अनेक जने करें सो प्रसिद्धालंकार मातकेमोह इति सहस्रबाहु अर्जुन नें साधन साध्यो बुरो और सब छत्रीनन नें बुरी सिद्धि कौं भोग कीयो यही प्रसिद्ध और हरिचंद नें भलो भलो साधन कीनो और सबन नें भली सिद्धि कौं भोग कीनों यही प्रसिद्ध अथ विपरीतालंकार लछनं कारनसाधक राति जाको कारज सो साधक जापें कारज करवावै सो साधन साधक के कारज की जहां साधन बाधा करें सो विपरीतालंकार नाहतेनाहर इति माया जन जानें सो भगवान की माया हू न जानें और राजन के तन की छाया छलि लै जाय अपेसौ वे वीच आगहू न संहस कें सो अनि

स्वामी के कारज कौं जहां साक र विगारै सो विपरीत

विवाहमैंवीचिहीनीहै तासंसहनहींसकैहै नायकनायकासाधकनायकातावौंकारजवी
चपारनवारीनेसखीतेईसाधन तिननेंबाधाकीनों यहांविपरीतालंकार फेरिविपरीता
लंकारयथा साधनइति काकपछसोपहे कितकोकोऽर्थ केननेजुद्धकीनों नील्अादिवा
रिनिधिनाघनवारे दीपदीपनकेभूपनसो सहितरामजीहैं तिनकोंजीतिकैंकुसलवनैंवि
जयरसचाख्यो पुत्रयत्नकरावे सोरामजीकेजगपकेपुत्रलवकुसबाधकभए साधकराम
साधनलवकुस अथरूपकालंकारलछनं उपमांहीकेइति उपमांकेरूपसोंमिल्यो वरनियें
सोईरूपकालंकारकोरूप वरनचंदइति यहदोहाअद्भुतरूपकमें अररूपकरूपकमेंमि
लेहे औविरुद्धरूपकमें चमत्कारसों नहींमिलेहे ताकेभेदइति ताकेभेदअनेकसोअधिक
न्यूनसमातद्रूप अभेद चंद्रालोकसोंव्यंग पुहुपरंपरति दोयएकमुह एकश्लेषपरप
रि एकदेशवर्त्ती औरमालारूपकइति रसरहस्ये अद्भुतरूपक विरुद्धरूपक रूपकरूपक
सदाएकइति सदाएकसोंवर्णियें औरउपमेयकेसमाननहोयसोअद्भुतरूपक याहीसोंचं
द्रालोकमें अधिकरूपककहेहैं सोभासरवारइति वहतोसरोवरमेंफल्योईरहेहैं पृथ्वी
गंध अप रस तेज रूप वायु स्पर्श आकाशशब्द येगुनसहितपंचभूत अरयहसोभाकेसरो
वरमैंफल्योईरहेहै यहांरानहंसनीसखी घनेघ्राणनकेसूंघने सूंघिवेकेलीने इहां

घ्राननकेदेवीजोपृथ्वीसोजानकीजीकी
मातासोवात्सल्यभावकरिकेसिरसूंघि
वेकेलीनैंभवारूपहोयकेंभ्रमेहे

45A

तोभौंरभ्रमैहै औरदेवतातेई भोरभ्रमेंहैं परिवाकमसों मुषकमलकीजोति दिनमैंदूनी जि
समैंयहसौगुनीहोयहै हेसूरजमुहृदहैं चारुचंद्रयेरामजीके संबोधन यहमनमैंमानि
ये रतिकामकीस्त्रीकों सदकमल अररतिजो प्रीतितःको सदनमुषकमलहै मुषकमलरति
कौसदनहै याकौंमदननहीं छ्वैसकेहै तहांरतिशब्द एकअर्थन्यारोन्यारो कमलसोंमुषअ
धिक यही अद्भुतरूपक अथविरुद्धरूपकजहांकहियेइति जहांअनमिलशब्दहोय आअ
र्थवाको सबसोंमिलतोहोय सोविरुद्धरूपक सोनेकीएकइति लतानाइका तुलसीवनसो
वृंदावन फलसो कुचसरोजसोमुष सुवासो नासिका षंजननके वाहनसोनेत्र यहांशब्दअ
नमिल अर्थसबविधिसंमिलै यहीविरुद्धरूपक रूपभावइति रूपभावजहांसोरूपक
सोसबरूपकनको एकरूपककरिदीजे काछेंसितासितइति काछिनी बाहुरगतिके
भेदनतैंनांचिवो नायक मदंग दीय येसब औरसितासितरंग पुतरी कोटिकटाछ ने
हमदुहास दीपति इनकेरूपकभए सोइनसबरूपकनकों एकअषारेकौरूपककीनो
यहीरूपकमैंरूपक अथदीपकालंकारलछनं वाच्यक्रियाइति वाच्यकरिकैंद्रव्यअर
गुन इनकीक्रियाकीजे द्रव्यसोदीपक द्रव्यउपमानउपमेयकोंकहैंहैं चंद्रालोके इसरह
सेवा गुनसो गुण मुक्ताहृयपुंसि इसभरे दीयकरूपइति दीपकरूपअनेकहैं सो कार

यहाँ रसरहस्य में सांगरूपक है यहाँ कविप्रिया मैं नुह के वाननमें आठयें प्रभाव मैं कह्यौ है लोनितसलिलइति अनेकसो अनेककविक हैं है
यहां वंधुभयो वंध चोर वादी सुहृद क छद्म प्रमुमानि समरिपु सोदर आदि दे इन के अर्थन जानि यह दोहा कविप्रिया को इनमरइति =

कदीपक आवृतदीपक इत्यादि परिमें तो दीयतरें के कहे हैं मनि माला अथमनिदीपक वरषा इति वरषा आदि दें एक काहू को वर्ननकीजे परिवा मैं उपमांन उपमेयकी एक क्रिया होय सो मनिदीपक और हू काहू वस्तुको वरनन करो परिवामें उपमेयकी एक क्रिया होय सोमनिदीपक अथमनिदीपक प्रथमहरिननैंनी इति हरषि हरषितमतेजहिं हरतु है कौंन दीपक विलासक छक ह्यो परतु है सो कौंन दीपक भांति भांति भामिन भवनकहभखे सो कौंन दीपक दीपक भामिनीनके भवनकौं सोभायमान करै है अर तेरो दीपक श्रीकृस्न ताके लीनें भामिनी तेरी सभनकूं भूषितकरैं हैं ४ इनमहि इति ४ तेरो दीप श्रीकृस्न तमतेत विरहको कल्म सोकल्म हत्त सो उज्जल और पंछिवो तेताकं हरैं है सुदीपक दीवा ताई दीपक अलंकार इव हें येसव वंधुकोअर्थ भवकेविषें सुभसुभाए सुभसोभाकौं धरतु है सो कौंन दीपक समान सोसमेत तसमान माननीनकौं वसकरै है सो कौंन दीपक अर मेरे मनकौं दीपतिकरै है सो कौंन दीपक अरु तेरो दीपक श्रीकृस्न सो मेरे मनकूं दीपति करै है तेरे मन कौं कौन करै दीपति दीपनारक आदीप ए दोऊ मानिनी नाइका हरिननैंनी विलासनी भवन भामिनीमन येसव उपमेय उपमां दोऊन की दीपति एक क्रिया यह दीपक चंद्रालोके रसरहस्ये और कौं सवनें वा अक्रियागुन द्रव्य कहु वरनहुं करि इक ठौर

46A

सोवाच्यकरिकैं क्रियागुनद्रव्य इनकौंइक ठौवरननकीजे यहकह्यौसोवाच्यकरिकैं तौवर्नहै।
क्रियादीपक आहरिननैंनी आदिउपमेय तमउपमांन येद्रव्य यहतौकविप्रियामें आछो
अर्थ औरयहकविप्रिया अर्थसो हरिननैंनी आदिद्रव्यहेरि आदिक्रिया औरप्रकासादि
गुनयेसबवाच्यसोवचनकरिकैं वरनेंहैंही यहवहकायवेको फेरियथा दछिनपवनइ
ति दछनी राघ लौंग लवलीसो हरफारेवड़ी केसरिकोमकरंद चंपकचंवेली मालती
येउपमांन अरमांनउपमेय इनकीपवन एकक्रियाभई यहआछो जोकोईनमानैंतो
पवनद्रव्यलोलादिक्रिया सीतलादिगुनवाच्यकरिकैं येइकठौवरननकीये यहअर्थवुरो
केरियथा घननकीघोरइति यहांघननकीघोरआदि उपमांन अलापसेजसदनये उ
पमेयसोइनउपमांनउपमेयसो इनउपमानउपमेयनकी मानछुटिगयो यहएकक्रि
याभई यहतौआछो अर्थ रसरहस्यचंद्रालोके अरकविप्रियामें वाच्यक्रिया गुणद्रव्यक
हूंकरिकठौर यहकह्यौ सोइहांमिलिवेक्रिया सुगंधआइवोआदि अरदीप्रियेगुण आली
जनआदिद्रव्यसोयेवाच्य अर्थकरिकैं इकठौवर्ननकीने यहवहकायवेकोअर्थ अरवाच्यक्रि
यागुनद्रव्य सोवाच्यकरिकैं घनआदिउपमान अलीजनआदिउपमेयद्रव्य इनकोमांनछुटि
गयो एकक्रियाभई जोद्रव्यमेंगुनहै सोईगुन यहआछो अर्थ ०

क.टी.
४७
47

दे.१	मदन	१	२	२	२
दे.१	प्रद्युम्न	१	२	०	२
दे.१	छाया	१	२	२	२
पशु१	तुरंग	७	१४	२८	०
दे.१	विधि	४	८	२	२
दे.१	गायत्री	१	२	२	२
पक्षी१	हंस	१	२	२	०
दे.१	विष्नु	१	२	२	२
दे.१	लक्ष्मी	१	२	२	२
पक्षी१	गरुड	१	२	२	०
दे.१	शिव	५	१५	२	२
दे.१	शिवा	१	२	२	२
पशु१	बैल	१	२	४	०
पशु१	सिंघ	१	२	४	०
		सि	नेत्र	पद	बाहु
		२७	५९	५६	२०

नौपसुनौबता
याको अर्थसूर्य
मंडलु

छायासूर्यप्रिया
रतमरे
छायासूर्यकीस्त्री

मारतहै सोशिव
प्रतिपछजेविष्नु

सोभितचरननोपसु
इनतीमोंलोहानको
अर्थसूर्य मंडलु में

चरन अठारह याको अ
र्थ हरिहरात्मसरीरसो
नीचे लखीरहै तासंल
गाय नीचेतांई जानियें

३ दसातेजसौंमिले अरतेजजोतिसौंमिले ३

47A

अथमालादीपक सबैमिलेइति काहूकौवर्ननकरो एकावलिहोय अरएकपदसबमैंमिलेसोमाला
दीपक अनंतसोकवि दीपकदेहइति सुभतारूपकेरूपकजेगहनें तिनकौंरचैहैं अररूपकका
मकलाउपजावेहै दीपककीदेहदसासौंमिलैं जोतिसुभतातैंमिलें सुभतागहनेनतैंमिले गह
नौंकामतैंमिले मिलिवोपदसबठौरआयो यहमालादीपक एकपददोवेरआवे सोएकाव
लि अथप्रहेलिकालंकारलछनं बरनियेंबसुइति काहूक [illegible]

[illegible] प्रकारतें वस्तुकौंदुराइकैं बर्ननकीजे सोप्रहेलिका सोभितसत्ता
ईसइति याकोअर्थपर मैंसूर्यमंडल मैंजानिये देषेंसुनेंनइति वाटजानियें केसवताकेइति
राजनरीजानिये नातिलताइति दाब षदा जानिये सबसुषचाहेइति बीरवरकोदरवार चांद
चोरारजानियें असीमररिबाउइति पुत्रजानियें परिहृत्तालंकारलछनं कीजेजहंऔरैइति
औरहीकीजे औरहीउपाजेपरे सोपरहृत्त कविप्रियाकेमत औरग्रंथनमें जवरलोकीजिये
सोपरहृत्त हंसबोलननहींइति लोकभंगेसोपरलोक यहांकविप्रियाकोपरहृत्तहे ओर औरहूग्रंथ
नकोपरहृत्तहै फेरियषा हाथगहोइति ब्रजनाथनेंहाथगह्यो तेरीधीरजताईछुटिगई तेनें
मुषमें पानभषे उनकेनैंननमेंरुचिरची अर्थातनैंननकौंआछौलगेपे तेरेकपोलनमेंमब

तादिये तेगुपालकोंमहाछविछाई इहांतीसरीतुकमेंपरिहृतग्रलंकारपुष्टहै फेरियथा जीवदि
योइति जीवइत्यादि जाईश्वरनैदीयो ग्ररजाकीजोतिसों जगत ग्रापकोंवडोजानेंहै तासोंवे
रकरैं कृतजोउपगासोकौनउरमेंग्रानें मसातेरिषनेंसिंहकीनों सोरिषहीसों रोषविता
ननलग्पो जाकोभलोकरियेसोबुरोकरिमांनें भलाकोबुरोवदलोभयो चोथीतुकमेंपरह
तग्रलंकारपुष्टहै वतिष्ठालंकारसमाहितादि परिहृत्तालंकार वर्नन नामत्रयोदशप्र
भाव: १३ ग्रथउपमालंकारलछनं रूपसीलगुणहोइसमइति
रूपसीलगुणउपमेयकेउपमांनकेंरूपसीलगुननकेसमानहोयके उपमानकेरूपसील
गुण उपमेयके रूपसी लगुननकेसमान होय यहउपमालंकारकहावे ग्रथवा रूपसील
गुनउपमेयके उपमानकेरूपसीलगुननकेदिछलगुग्राहोयकें उपमानकेरूपसीलउ
पमेयकेरूपसीलगुननकेविछलगुग्रांहोय तहांहूं उपमालंकारहोइहै ग्रथउपमांनाम
कथनं संस१ हेतु२ ग्रभूत ३ ग्रदुत ४ विक्रिया ५ दूषन ६ भूषन ७ मोह ८ नियम ९ गु
नाधिक १० ग्रतिशय ११ उत्प्रेछित १२ श्लेष १३ धर्म १४ विपरीत १५ निर्नय १६ लछनक
१७ ग्रसंभाविक १८ निरोध १९ माल २० परस्पर २१ ग्रथसंसयोपमालछनं जहांनहीं
इति जहांकछुनिरधारनहीं सबसंदेहहोय सोसंशयोपमा षंजनपेइति षंजनहैंमनरंज

जामेंउपमांनउपमियहोय ग्ररुसंदेहहोइ सोसं
सयोपमा ग्ररुजामेंकेवलसंदेहहोइ सोसंदेहालंकार

यहांउपमांनकेरूपसीलगुनउपमेयकेरूपसीलगुननकेसमानहै
अरुउपमेयकेरूपसीलगुनउपमानकेरूपसीलगुननकेसमानहै

नकेकेसवके नैंनरंजनहै किधौं यहमतितें नैंजीमें कीनों यहां सबठौर संदेह यहीसंसयोपमा अथहेतोपमा होतकोंनहूइति अतिउत्तमहैं तेहीनहोय फेरिकाहूहोततें बरोबरिहोयजाय तासौंहेतोपमां कहिये अमलकमलइति सुगंधितजोपवनहतो सोमुषकीसुगंध आगे हीनभयो फेरइतनीसबसुगंधनकेहेतकरिकैं पवनमुषकीसुगंधकेबरोबरभयो अथ अभूतोपमा उपमाजाइकहीइति जाकोरूपनिहारिकैं उपमानकहीजाय सोअभूतोपमा हरिहै कोंइति ललालनकेदृगदेषिबेकों ललचायहे यहांरूपनिहारिकैं उपमानकही यही उदाहरनभयो औरइहांकोईकाहूको चिह्नलगुआनहीं अरकोईकाहूकेसमानहूनहीं फेरिसघा मालगुहीइति यहांउमैसाकरि अभूतोपमा सिद्धभई अरउपमेयकेरूपसील गुन यहांउपमानकेरूपसीलगुननकेचिह्नलगुआहैं अथअद्भुतउपमालछनं जैसीभईलइ ति नहोयअव सोअवनहींहोयहै यहवर्त्तमान प्रीतमकोइति भूतभविष्यतवर्त्तमान तीन्योंका लनमें येमुषकेसेकमलमेंनसंभवे यहअद्भुतउपमा अथविक्रियोपमा कंहेंकंहेंइति कंहू हूंक्यौंहूंसोनीठनीठ केसोदासइति जाकोओप्योजाय सोओपनासरससोभा सोकमलभीतर सिफाकेइहोयहे यहांकुंदनकेकोसतें प्रकासमांनह्वैबोइत्यादि कंहूंकंहूंवर्ननकीनों कौंन हूंबुद्धिप्रकारसें चंद्रमेंतंकीरकाढिवेकंहूं अथदूषनोपमा जहांदूषनइति जहांदूषनजो

रहांउपमानके रूपसीलगुन उपमेयकेरूप सीलगुननकेचि ह्नलगुआहैं

अकेलोसंदेहनहीं

चंदकीउपमातो देहैं तुंकीकाढिवो सो क्यौंहूंक्यौंहू

उपमांन ताको भाव दुराइकैं उपमांनके दूषन वर्नियें सो दूषनोपमा जो कहु इति जो सोमसरोज मु
षी उपमा कहूं तो सुधा के लीनें और सुगंधके सुरननैं भंगननैं चंद के कमलन के देह दहे हैं यातु क
मैं यथासंख्य है श्री कृस्न के माथे की उपमा कष्ट सहे हैं सो वन जल अग्नि वास इत्यादि कुचील क
हैं है सो उनके औगुनन करिकै एसब कुचील भए उन अंगन की उपमा करवे कौं वेई अंग हैं सो इ
हां उपमांनकौं गुन दुराइकैं उपमांन कौ दूषन बर्नन कीनों यहां अनंन्वय हू हो इ हो चंद्रा लोके
गुन कहिये गुन उपमेय के अरु गुन उपमान इति एसरह स्ये व्यतरेक अथ भूषनोपमा भूषन
हरि इति भूषन जो उपमेय ताको भाव वर्नन कीजे उपमेय रहे हू दूषन दुराइ दीजे सुवरन जुत
इति प्रवीनराय की बानी कैसी है सुर निसाद र्षभ गांधार षड्ज मध्यम धैवत पंच षष्ठ्ये स
मी समा तंत्री कंठोत्थिता स्वरा भैरों ललित राग द्विज दंतन की दीपति दिपति सो अस्तुति सुष
दानी इत्यादि बानी के बिशेषन हैं जुत सो आछे वर्नन करिकैं जुत है सुर देवता भैरों महादेव
सौं मिली है गति सो प्रवाह प्रगट पवित्र करै है द्विजन की पंक्ति वैठी है यह गति है जहां दीपति
दिपति सो आछौ पानी है श्रुति वेदन मैं सुषदानी है सोभा सुषदानी परमारथ निधानी मां
नी सब जग जानी है भूषन उपमेय जो प्रवीनराय ताकौं भाव वर्नन कीनी पातु रपनें को दूष
न दुराय दीनो यहां भूषनोपमां अथ मोहोपमा रूपक इति रूपक जो उपमांन अर रूपक जो

परम अर्थ दीप्ति पानी है भगवत विशेष कारि कैं फल सुष रूप पानी है गंगा को पानी है सो सुवरन

दर्वदेशकेरू
रेनुमहैं

गहने सोकहेहै परियहां रोतातितिरूपक यार्विरूक्ति समानकोनाम रूपकभयो पच्छात सादृश्य
योरनु इतमरे अनरूप यहां यहांसदृश्यकौंकहें हें सोकाहूतरसों रूपकजोउपमान तामेंमनव
तिजाय सोमोहोपमा षेलतइति संवरारि कंदर्प संवरकूं दहे तेसें इनकी देहकों दुषदहें हें फू
लफलि कुम्हिलायजात सोफूलेफूलेजेफूल तेकुम्हिलायजातहें मुष औरमंदहोतपायहे जा
नसोतूजान मंदसोम्हरषहोइकें चंदकौंमुषकेसमानजानिकें यहांरूपकचंद्र अर अनुरूपसोमु
ष केसादृश्यहै ताचंद्रमेंनायककोमनलगिगयोहै यहीमोहोपमा अथनियमोपमा एके
मुभइति एकेउपमांजहांशुभवर्नियें औरजितनीउपमांहोय तिनकीनिंदाकरै सोनियमोपमा
कलितइति केतसोचिन्ह केतसूर्यचंद्रमांहो इनकोवेरीहे कुमलसोलेसोतितसों कमल
कौंसुभवरन्यों चंद्रमांकीनिंदाकीनी यहीनियमोपमा यहांरसरहस्यकेमत व्यतरेक गुनकहिये
उपमेयके आगजोगुनउपजावन इतिरसरहस्ये अथगुनाधिकोपमा अधिकहूतेंइति अ
धिकजेउपमांहैं तिनहूंतें अधिकगुन उपमेयहोय सोगुनाधिकोपमा वेतुरंगइति एज
यको अंक सोचिन्ह तासोंनिसंकहे औरवेजग्यकेचिन्हसों ससंकहे क्योंकोईहहासन नछु
डाइलेतासों सुधानिधिचंद्रताकेईसरूद्रतिनकोभक्तहे विनादिअेनरे सोयताकेविन
नरे इहांउपमाअधिक इंद्र तातेंअधिक उपमेय इंद्रजीतहै यहीगुनाधिकोपमा

अथ अतिसयोपमा एकैकछु इति एक वस्तु एक विषैं सदा एकरस होय सो अतिसयोपमा केसो
रास इति चंद्र आकासमें हूं है महादेवके सीसहू पैं है अरु थलनमें जहां न जल सो जल है
तिनमें बहुत वर्नके कमल को ठौर है अरु मुकर हैं सो कठोर हैं अरु वसुधामें कहा सुधा नही
है तियके अधरनमें ही देखियै है सुधाहू केई ठौर है एकरस एकरूप जाकों गावैं हैं ऐसो
सीता तेरो सो वदन तो ही में है एक मुष एक सीता विषैं सदा एकरस है यही अतिशयोपमा
अथ उत्प्रेक्षितोपमा मारो इति केसो रास कहैं हैं ये रंग रंगनके रूप इति एक शब्दमें जहां
अर्थनके स्वरूप प्रयोगियें सो कीजियें सो श्लेषोपमा उपमा आवै अरु श्लेष होय सो श्लेषो
पमा सगुन सरस इति चंपेकी माला कैसी है डोराकरिकें सहित है मकरंदकरिकें सहित है
सब अंगमें पराग करिकें रंजित हैं षोडसवरसमय सोरह वरसके चंपाके व्रछके फूलनकी
माला है ललित जो बस्रता करिकें वलित वेष्टित है अरु विलास सहित सुंदरी जो मालिन सो
सिंगारके लीनें लाई है गहरन लाइये सो ढीलन लगाइये अब बाल कैसी हैं अनेक
गुननकरिकें सहित हैं श्रृंगाररस करिकें सहित हैं सब अंगमें केसरि इत्यादि अंगरागन
करिकें रंजित हैं ऐसी सुहरष बढाइये ललित वस्त्रनकरिकें वेष्टित हैं सुंदरी जाकूं
सिंगार के लाई है चातुरीकी ताला मांझ आवनु फूले नंदलाल चंपेकी सीमाल बालउर

50A

धर्म सो रसभाव
आदि जानिये

मैं उरमाइये यहां श्लेषकरिकैं चंपेकीमाल अरु वाल इन दोऊनको अर्थ भयो यही श्लेषोप
मा अथ धर्मोपमा एकधर्मको इति एकधर्मको एक अंग जानियें सो धर्मोपमा अमरे इति
हारपलटिवो अरु नायकाकेतें कुंदकली लाइवो नषरेषा लगावाइकें आइवो अंजनलग
वाइकें आइवो नावकलगाइकें आइबो एसव चिन्हवत नायकके धर्मको शिवमें एक अं
गसो है कछु शिव चिन्हवत नही यही धर्मोपमा अथ विपरीतोपमा परवपरे इति पहलें गु
ननके पूरे होय तेई गुननकरिकें हीन कहियें सो विपरीतोपमा भूषित देह इति विभूति सों
देह भूषित है पराइ गंवर शिव नहीं है अंगमें वलकलादि नवीन वस्त्र हैं सुंदर जे सुंदरी हैं ति
नकों दूरि करिकें इरीनमें आसन कीने हैं भुजनमें नाही है असि करिकैं हीन हैं राजान नें रघु
वीर के वैर विषें छली छोडिकें कमंडलु लीने हैं परवपरे गुननके जे वैरी हैं ते गुन करिकैं ही
न भये यह विपरीतोपमा अथ निर्नयोपमा उपमान अरु इति उपमान अरु उपमेयके गुन दो
षनको जहां विचार होय सो निर्नयोपमा एक कहैं इति तीसरी तुकको अर्थ वासर में कमल
आछो लगै रजनीमें चंद्रमा आछो लगै अरु सुष वासर रजनी दोऊनमें आछो लगै नगवंदनी
यहै कमल चंद उपमान तिनको तिनको दोष कह्यो मुष उपमेयको गुन कह्यो यही निर्नयो
पमा अथ लछन कोपमा लछनं नुतइति लछनकं लछ[illegible] कहैं देषिकें वर्निये बुधि

बलवचनके विलाससं सोलछनकोपमा वासोमृगा इति समुद्र अर पृथ्वी दोऊनको नाम रत्ना
कर अंबर आकास अरवस्त्र दोऊनविषैं दोऊनको विलास कुवलय कुमोदिनी अर रत्ना
करके दोऊके सब प्रकासकर सोसमुद्र पृथ्वी विषैं जन्मा सीता पृथ्वी की बेटी पृथ्वी मंडल सीता
सीतलकरनवारी चंद्रको लछनदेषिकैं सीताजकोवर्ननकीनो यह लछनोपमा अथ असंभाव्यो
पमा जैसो भावन इति जैसो भाव संभवै नहीं तैसैं प्रकासकीजे सो असंभावितोपमा जैसैं अति
इति जैसैं अतिसीतलसुवास मलयज चंदनमैं है अनिलपवनकरिकैं वृद्धिके वलसौं चंदन
मैं अनिल अग्नि है पहिचानिये चंदनमैं अग्नि संभवै नहीं परि अनिलके वसकरिकैं होइ है
जैसो कमलकोसमैं केसरानकूं कंटकसे जांनियैं केसरानकूं कंटककहिवो संभवै नहीं
परि विरहनीकौं कंटकसे लगे हैं जैसैं विधु चंद्रमा मधारसो धरै है मधु अमृत है ताकौं
अमृतमय है यह मही के विषें कहै है मधु जल मधुप पमधु सुधा मधुसूदन गोविंद इति
अनेकार्थमंजरी अर मोह की रुष संमोहे हे अर विषमजामैं विषहैं चंद्रमांमैं विषसंभवै
नहीं परि विरहीनकौं विषसो लगै है सुंदरी इस्यादि संबोधन तेरेसे तेरे मुषमैं परुषरुष
सो कठोरदूष आषरमानियेहैं तेरे मुषमैं कठोर आंषरसंभवै नहीं परि क्रोधके वसक
रिकहेसही यही असंभावितोपमा अथ असंभावितोपमा जहां उपमा इति जहां उपमा

51A

उपमेयमैं आ[illegible]सों [illegible] रो [illegible] विरोधोपमा कोमलइति कमलाके करकोन[illegible]बनजोक
मलहै [illegible]कोंसरदीकोमा[illegible]दुखदाइहै सरदीमैंकमलगलिजायहै सखिऊजरोअमृतमय अरमनम
पहै चंद्रमामनमो[illegible]तः इति सीताकोवदनदेखिकैं ताचंद कौंमलिनाईहै सीताकोवदनसब
सोभाकोसदनहै ताकौं देखिकैं मदनमोहीजायहै यहतोरतिकोवदन अैसोनहीं जावदनकी
निकाई दुःखदूरिकरनवारीहै आधपलमाधोकोंदेखेंबिन सोईसखि सीताकेवदनकं
दुखदाईहै दुषदाईहोवोविरोधोपमा अथमालाउपमा मालासीइति सबउपमेयहोयजाय
सोमालोपमांके मतउपमानकी मालासीचलीजाय सोमालोपमा मदनमोहनइति रूपको
रूपकउपमानकेसिंगारकोंजैसोमदनवदन यहकैसोजैसो कमल यहकैसोजैसो आनंदको
कंद यहकैसोजैसोचंद यहकैसोजैसोतेरोमुष उपमानकीमालासीचलीआईहै यहमालोप
मा यहमालोपमाकेसबकेमतकी अथपरस्परोपमा जहां अभेदइति जहांउपमेयउपमांनमैं
अभेदहोय सोपरस्परोपमा वारेनवडे इति हरिसेतोहरि हरिसेहर अथहीनोपमा कोकिलसे
स्यघनकरनीसेगिरराज यहीहीनोपमा अथअधिकोपमा मगसरेमगराजसे यहअ
धिकोपमा अैसैंबर्ननलाज सोमनअधिकउपमा नबर्ननकीजे अथसंकीर्नोपमा बंधु
चोरइति बंध चोर बादी सुहृद कलहंछ प्रभासम रिपुसोदर येइवशब्दकेइतनेनामहै

दृष्टांतो अतिसृष्ठ

ये आरथीउपमा
केवाचकहै जहां
सबउपमानउपमा
न आरथीवाचक
करिइवकहूकरियै
सोसंकीर्नोपमा

विधुकेसोइन् सोइरयाकवित्तमैंनहीं   इतिश्रीमहिविधिभूषणभूषिताप्रांकविप्रियायां वर्षिष्ठा
सवितोके इति स
लंकारसामान्यालंकारवरननंनाम चतुर्दश प्रभावः   १४
विसर्यं कहीजुइति जाविसोजानिकें कही नषतें इति नगके इति भूषित इति चरणोपमा
उपमाइति करचरनकी उपमा सबसमान पर इतनोभेद करनमें महदी चरनमें जावक
अतिकोमलइति पल्लवकमलसमानकर चरन दोऊ वर्निये पल्लवकी उपमां करनवेंतो
हैही अरु चरननकौंहूं होरहे येहिपरपल्लवमुरारे इतिगीतगोविंदे जलजकमलनकी
उपमा चरननकूं दीजे पलजनकी तथा जलजनकी दीजे करनकूं रागरजोगुन इति रजो
गुनकी आरक्तताहै प्राचीदिसकोभागहै रंगभूमिसो जुद्धकी भूमि कोपराग सो रौद्ररसकी
आरक्तता केअनुरागहै कोमलकमलइति अंगनसो अंगन आरक्त ताकेजे दलसमूह
तिनपै सूर्जनें कोपकीनों केराजिवके गनसमूह सनेको रजोगुनलगिरह्यौहै अथच
रनवर्ननें गाजकेइति अथचरन अंगुलीवर्ननं अंगुलीचंपकइति विछियावांकइ
ति चंपकसी इमिरालकेरूप अंगुरीनमें सरसेहैं सोचुचाएहैं वानें अनोट वाकोअनव
ट सोमनषसरोज चलि [illegible]रीदलतनत्रांन नषतर अथनूपुरवर्ननं नूपुर इछाइ
ति रछाकेमंत्रके [illegible] सो[illegible]केगुनगाननकेहारहैं अथवा नायकके

नसवकहनवारे औराहैं [illegible]सो[illegible] र्ननं [illegible] आवंदनवारे हैं गतिनकेहार इति हारसो
येनं हारपहरिवेकौं [illegible]वारे हैं पाहरू सो चौकीदार प्रतिहारसो चोवदार नायक
सो हंसनकूं गतिविषै [illegible]वनवारे हैं रतिकूजेतको जो निचय समूह सो नायकाको लिवो
ताकी प्रतिध्वनि है अथ जेहरिवर्ननं जेहरिजेयइति नयकं कूनसो जीतिवेकौं वाजो है
मालासाला सुभसभा सुभसोभा सोपांन सो सीढी येइनी जेहरिकी उपमा है कोमल
कमल इति नूपर नवलतेई औरान को समूह ताकी साला जेहरि हैं कनक विछिया तेकल
हंस तिनकी वैठक है तेरी गतिनैं सवकी गति जीती तासों जेहरि जेकं कनवांध्यो है कैयह
जेहरि सुख है वें की सोभा है अमिलसो मिलीनहीं सुमिलसो वतोवरिकी ऐसी मरनसदन
की सीढी है अथ उरूवर्ननं अरुकरीकरइति करसंडि कैरिकेलि करस्य करभो वहि इस
मरे पीहि सिंहासन पुलिनकोथलसो तोयोस्थितं तपुलिनं इस्यमरे सैकतं सिकतामयं
इत्यमरे सो रेतके पुलिन समं नितंववर्नियें चक्रसुदर्सनसन इति छेपक कोमलकम
लइति इनमें सौरभ सुभावही कौहैं रंभाको सदंभ आभा जो प्रकास ताकौं निदरत हैं
अरकरमकी आभा निदरत हैं मणिवंधात्कनिष्ठं करस्य करभो वहि इत्यमरे सो छिमो
छिसोमदकूं दूरि करि करिकैं सुचि सुंदरता सुधि आए अथ नितंबवर्ननं चक्रपीठिय

पंजीरोन पुरोहि
यां त्रियांसोसी
अंगमैं न होय मं
औरन पुरएकही
हैं नावकरिकें

लपुलिनसमइति चक्रऔरइति चाकचक्रसोचमकन ताकरिकैंजोचंक्रमनि फिरिवो नाभि
अवलीनहींवरननकीनी चक्रमनिहोऊनकोफिरिवो संभवै अथवा दृष्टिफिरैहै ताकरि
कैंचहूंओरसौं चित्तचुरावैहै सुदरसनचक्रतैंसुंदरहै परसकरिकैंहीनहै सुदरसनचक्र
रूपहै ताहीसं दैसनकोसुषघटावैहै सुपुरुषसोसुंदरपुरुषहै चक्रहैसो अरदेवनकों
सुषवढावैहै सबनकों ओर सबषीजनहहरिहूकों [illegible] मनमथिवेकोंमनम
थनैं अपनैंहाथसं दीनेहैं रुचिसुंदरताशुचिपवित्रतासकुचलज्याइनकं सकेलिकें
नएचतुरनैं नितंवचक्रकीनेहैं तेरो अथकटिवर्ननं कटिअतिइति चिंटीसमान औ
रचुटीसमानदोऊपाठचुटीसोचोटी मतकीरतिमानकेसोहेसमर्दितहैसोदरम्यहैंअं
कसोचिन्ह रोमावलीवर्ननं हरिकेनैंनतेईभएषंजरीट तिनकेपेलिवेकीभूमि उदर
ताउदरमैंरोमराजीहै सोहरिनैंनषंजरीटनकेनषनकीपंककीरेषहैं पियबिषैंकपटसोनाय
काकौउरह्पहै ताउरकेछूटिवेके/लीन्हे उदरचलदलकेपांनपैरोमराजीहै सोमंत्रलिख्योहै
अररोमराजीहैसो नायकाकेचित्तकीचोटीहै अथकुचवर्ननं चक्रवाककुचइति किधौं
मनोहरइति इहांवचन [illegible] जानियैं अविहारनकीद्युतिहै सोईसरोवर तामैंजोवन
रूपीकलभहाथीकेवच्चे [illegible] तिनके [illegible] इंदीवरसोकमलदलीजानियें
[illegible]

चक्रवाकचकवे षिवकीउपमागोल करिकैं दीजैगीरिस उच बरनिये

इंदिरालक्ष्मी

53A

रूपअनुरूपसोरूपको रूप[illegible] अथबाहुवर्नेनं बारपल्लवइति सरसोतीर वल्लरीसोल
ता केसोदास गोरे गोरे इति मणालमलिनैहोयकरिकैं अपनोमुषजोजउसोकी चमें दुरा
यकैं अपनी छाती में आनिकैं छेदकरिडारे है अथकरभूषन इति गजराविराजे इति स्वेत
पीतहरितलालस्याम सामिल येसबगजराकंकनचूरी हरीलालमनिकी पोंची स्यामचूरी इन
कैफुलक सुमिलसोदोऊहाथनमैं वरोवरि येसब गहने क्रमसौं मांनों सूरजसोमकी कला
लेकैं अरअपनी कलालेकैं कमलकौं पहराई है गजरा चंद्रकी कला लालमनि पोंची अप
नीकला अथअंगुली मुद्रिकावर्नेनं गोरीगोरीइति तोदनपेंनियां अथमिंहदीसंजुतपा
निवर्नेनं राधिकारूपइति दीहअदीह सूछम थूल मेहदीकेबुंद अथवादीह अदीह सू
छम थूल जेजीवहैं तिननैं हथेरी देषिकरिकैं हथेरी मैं गोरीकेसीगुराई जानी अथकंठ
वर्नेनं कंठसुकंबुइति कंबुसंषकपोतपिडुकिया सुरनरइति सुरनरप्राकृत कविनरीति
पढीहै तिनकीयेकंठमैं तीनरेषहैं के आरभटी सात्विकी भारती इनकीभाओरतीरले
करिकैं आरभटी सात्विकी भारती इनकौं भोरीकरि डारी केगानता सुजानता कीनिसं
कता वचनविचित्रता इनकी कंठमैं रेषहै के वीन बैन पिक इनके सुरनकी तीनरे
षाहैं केपीकेचितकू मनक्रम वचनकरिकैं चुरावेहै ताकी तीनरेषाहैं अंबसाई सौं

सूर्यकी कलातव रंगनकी होय है स्वेतरहित

सोस्यामति

जलसाईकी सो देखिकैं अंबिकाऊ मोहै है अंबुजनैंनी गोरी की कंबु सो गोलग्रीवकी तीन्यौं रे षा देखिकैं अथ कंठभूषनवर्ननं लेत मोल इति हे लोलनैंनी लालकौं श्रीलक्ष्मीकौं गोलग्री वदेखिकैं उपमानको गर्व भाजिजायहै स्याम सेत पीत लाल इन रंगनको कंबुसे कंठमैं मनिनकी मालनिकोजो जाल ताकी जोति जागिरही कहीनहीं जाय रागिनीनिसहित राग रंग रागिके सो रंग सो अनुरागिकैं आसपासनसैं सूरकेनिवासतें चंद्रमांनैं प्रकासकियो सो चंद्रके अनेक भांति सूरकी किरनि लगिरही है अथ चीठि वर्ननं केसवकुंवर इति केसव कुंवरनैं देषी अथवा केसवकवि सषीकी उक्ति सषीसों वेनीमैं यह दूसरी तुक पाठिमें यह तीसरी तुक अथ चिबुकबिंदुवर्ननं सोभत इति यहां तिलककी अर्थबिंदु भयो अथअ धर[illegible] वर्ननं अधरबिंदु इति वंधकोवंधुजीवकः इसमरे अरुन अधर इति मानोमैंनगुरु नैं हरिनाहके नैंन अरमतिकी गति हरिलेवेकौं विद्यागिनिकैं दीनी है अधरकी रेषा है सो चतुर जो चतुरमुष अथ दसनवर्ननं सूछमसुरेषसुधी इति सुवनसो कुंदकली अरसुं दरवनाउ जुगतिसो तर्कबतीसी तर्कसास्त्रनको कुलसमूह लेखियेहै विधिनैं चंद्रस्नें तेरे मुषचंदकौं दूनीकलादीनी वत्तीसौं कला हैं अथ हास वर्ननं जोति जुन्हाई इति जु न्हाईकी जोति सो दामिनि. दीपति किधौं मुषकमलमें इति मगहीजे लोचन तिनकीम

54A

रीछिका क्राजो मगत हीं ता ताकी मरीचि किरनि हैं हास्य है सो सौरभ अतिसुगंध के घनी हा
विनानक को सदन है हे चतुर तेरे चित की चतुराई है अथ मुखवास वर्ननं मदन भीत कार
ति रतिसुखसो प्रीति को सुख किधों भयो रति किधों उर कैं लिखैं अनंग जक को अंग उदित
भयो है ता अनंग के अंग कैं अंगराग की सुरभि तन अतिसुगंध हैं मुखवास है सो नायका के
चित की चातुरी सोई चमेली परन प्रेम को अवतंस जो हृदय मैं नायक पें प्रेम है ताको यह
परिमल विमर्दोत्थे परिमलो इत्यमरे हे मुखवा है सो कैसी छवि जो मुख मैं बांनी ताकी वनमाला
की सुबासु है कैं प्रान पति पाए तासों हृदय कमल फल्यो ताको गंध बंधु है बंधु चोर वारी इति
के मुख रूप पुष्प को सुगंध है अथ मुखराग वर्ननं अरुन लोचन इति अरुन लोचन सो स्पर्श तामैं
जो राजीव कमल ताको अंगराग है मुखराग है सो और के नायक को अनुराग है कै रूप को अ
पनो जोबन ताकी जो रति प्रीति ताको राजा सो है कैसो राग इति प्रातकाल की संध्या अरुन
जे ररदन हैं ते बहुत जे सो तिन के वदन तिन कौं रदन कान वारो है सो वा रदन की चहूं ओर कीमि
लक फल कैं हैं कै मुख मैं जो भाषा ताके भखन की मलिन को ताचक सो चमकि तो है सो छि
नकारि कैं तेरे चित चोर की मति कं चोरै है निसुमति समुझिये अथ रसना वर्ननं रसना इ
ति को विरसं बोधन अररसना रसिक संबोधन और रसना देवन ही इति सखितासर्य

ताकीछविकीजोतिकविता ताकीनिधानीधरहै यहरसनाहैसो अथवानीवर्ननं कामकीइति माधु
रीजोमिष्टता ताकीसुहाईसिलाहै वासुनीहैसो इंदिराकेमंदिरमैंकीझांईप्रतिध्वनिदलवैकेहै इंदिरा
कोमंदिरसोमुषकमल सप्तसुरनकी सोहरीहगिहै मोरकीकसोहरी सोमोरकीनायका ऐसीवात
निकौसजतहै सोसजतहै तासौंचातुरीकीमातहै वानीहैसो रागसोभैरवादिक अथकपोलव
र्ननं मुकरइति मधुकसोमहुवाकोफल तनीरतरकस किधौंहरिमनोरथइति मीनरथकंदर्प
मगहीजेलोचन तिनकीमरीचिका जोमृगतृष्णा ताकीमरीचीकिरनिहैं कपोलहैंसो केमकराकृ
तकुंडलनकेसरोवरहैं मुकरसोआरसी अथनासावर्ननं केसवसुवासइति सुवासिकासोसुंदरठो
रकी वसनवारीहै नासिकाहैसो केमनसिजकोमनसोईमीन ताकीकुवेनीहै मछरीपकरि
कैंजापात्रमैंधरैं तापात्रकोनामकुवेनीकहिये मत्स्याधानीकुवेनीस्यात् इत्यमरे अरजव
नीपाठहोयतौ दोऊनथुआ औरनथुआनके वीचमैंहै सो कें कुंदनकीमाला सो भीतिहै
सिकारकेलियेंजोभींतिवनायराषैंहैं ताकोनाममालाकुंदन सोंजोअरफल दोऊनकी
भींतिसंभवै नासिकाहैसो विलासिकासोविलासस्थली मुकतासोमोती अथवाभक्त तिनकी
ललितपुरी वैकुंठपुरीहै वहपुरीललितमुकंदजूकीहै कैनांककेसुरननें अस्तंतकरिकैंका
सीकीप्रकासिकाजोप्रकासस्थली सोनाकइहै मुकतासुरइनयहनमैंजेय त्रभुवनकोजो

रूपसोई तुरंग तोयनिधि ताको तातो पनिधिके तोयकी तरंग है कै तरुनि तेरी नासिका है ताके
को अर्थता कौ भयो अथनासाकौ मुक्तावर्ननं केसव आनंद इति आनंदके कंदको फल है मो
ती है सो कै सुधा अरमंदको बुंद है कै मनपतंगको दीप है जगतको बंदनी कहे कै सो इ!ससस
कल इति मकरंदको बुंद है तामें सकलसुवासको निवास है चंदको सुतबुध बुधको रंग ह
सो और स्वेत कहे हैं किधौं रूपगुन काम दिन दिन मैं दूनो बढै है ताके लिये चंद आनंद के
कंदको फल संधे है नंदनंदको मन स्वेत है संतनके मन हास इतिकविप्रियायां अथनेत्र
वर्ननं लोचन चारु इति नेत्र चकोर चातक कुमुद सो नील कमल तुरंग इनके समान
है अर अंजन करिकै जुत होइ तौ अलि मीन सरसो तीर षंजन कंज कुरंग इनके समान
होइ कमल कंज होय वे रक्त सो लाल अर नील कमल क्रमसौं जानियें अलिकी उपमा
सपर्ने नेत्र कहै है पियमन इति प्रेमरससरत सो प्रेमरसके साथी हैं अथवा पौरानिक
है नेत्रनिके वपु: सुवासके हैं औरमुर है वतांनके तुरंग हैं चहूं ओर चितवैं हैं परचित
प्रीतम हीको चुरावै है नायकके मुषचंदके चकोर है कुरंगहूकी चंचलता करिकैं नेत्रन
कौं उपमा दै हैं अर कुरंगके नेत्रहूकी उपमा नेत्रनकौं दै हैं सोभा सरजो मुष तामैं मीन
मीन लीन होय रहे हैं कुवलय जो कमोदनी सो सिंगार रसमैं भीजी है कै नवीन नलिन हैं कै

कुवलय नील कमल
नलिन लाल कमल

वानन के विषल गायदे हैं

बहुरंगके नैंन हैं कमोदनी अंजनसहितकी उपमा अथ अंजनवर्नन विषसिंगार इति विषहैं के
सिंगाररसके तूलहै के तमको तूलहै के पातकनसों पूरि रहेहैं नेत्रहैं सो कै लाज लाजहू स्याम
रूं पूरि रहे हैं किधों रसराज इति किधों सिंगाररस कोजो रस सो रसित है ताही सों अंसितहै
कै भालिसहित नेवांनहैं ते विषकरिकें वलितहैं अंजनहै सो विषहै के कंदर्प अपने हाथ वा
हनजो घोरा ते वनाएहैं कंदर्पको वाहनमीनहू जानियें चलचालियदरे हरीदीपक चलचालि
कें अतधातकरिवेकूं पातकरूपहैं अंजनजुतनैंनहैं ते गरचितचोरिवेकों तमरूपहैं तममें चोरी
होतहै यातें लालिसो लालसा अंजनरूपतेनेत्रहैं तिनके लोकलाज लगि रहीहै अंजनहैं सो
कें पियके मनकों रंजन करनवारोहै के अंजनहै अथ भ्रुगवर्नन अकुटिलता इति किधों
लागी इति किधों कमलमैं कीचकी लीक लगीहै भ्रुगहैं सो के सुभाइको जो अंक कलंक ता
करिकें अंकितमयंकहै मंत्रको बीजाक्षरहै अधऊरधको थाकूं प्रभावहै बीचवीचमें भ्रगुजु
गहैं सो प्रेमपूरनसुभायको सासन लिष्योहै सासनसो आज्ञा रोषकी रूषमें विषके वेषहैं भौंहें
हैं ते परुष जो कठोरता करिकें मयविलिषवांनहैं भौंहहैं ते अथकर्नवर्नन रागरवन इति राग
जिनमें रवें ऐसे पात्र हैं कर्न हैं सो कै सोभा युक्त भवनहैं पवित्रहैं श्रवनहैं सो निर्लज्जता कीजो
बातहैं ताकों नहीं अंगीकार करैहैं तातें लाजके नेत्रहैं मनके मंत्री हैं कै मनके मित्रहै रागन

56A

केइति रागभैरवादिकनके आकारबानिहैं कर्नहैंसो औरविरागासोहोयरागामिले तिनकेविभा
गकरनवारेहैं सोमिले रागनकोंन्यारेन्यारेकरिकैं जाननवारेहैं मंत्रनकेभं[illegible]र सोवहुतमं
त्रनकेसुननवारेहैं गदरूढजोवचनहैं ताकेजाननवारेहैं रवनसोसुननवारेहैं ग्यानकेवि
वरछिद्रहै केतनकतनकेतनके कनककेकचोराहै हरिरसग्रचवन सोपीवेकेलीनें जैसें
जलकोरूपहोइहै तैसेहीसुतिग्रोवेद तिनकेरूपहैं कैमनकेसुंदरमित्ररूपहैं केरूपभयजो
कंदर्प ताकेभवनहैं कैमाजकेनेत्रहैं केवेननिकेसन्निवहै नैननकेकटाक्ष तेईभएसर तिनके
येलक्ष्यवेझहैं लक्ष्यसोवेझो क सोप्रसय अथकर्नफूलवर्ननं फनिमनिमयइति तरुनिसंबो
धन तरनिसूर्य ताकेचलचक्रसेहे पहिरेइति सोभासुखदानियें कर्नफूलकोविशेषन
तिनके सोकर्नफूलकेसाधननिसोसाधन लक्ष्यसोवेझे दुहूंदिसनकं दुहूंभुननतेंकामरे
वहेसो नायकाकीभ्रकुटीकमान कटाछवाननतें वेधतजाग्मोंनहींजाय ग्रैसेंवेधेहैं कामरे
वहेसो अथबुटिलावर्ननं चलदलसीइति चलदलसीवर्नियेंबुटिला वा झिबझिबीहैंसो
झिबझिबीकोदूसरोनामबुटिला तीतरीसो मेंभीरी ३३नोजिनावर केकलसहैं कंग्राकास
दीपनवीनहैं ग्रैसेदीपग्रागेनहींभए बुटिलाखचितइति बुटिलाजेखचितहैं मनिनकरि
कैं तेबुटिलामनकंमोहनवारी जोवनक बानिकहै तातेंवनेहै कनककलसनकीजोरुचि

गदरूढपदनहृदले
ग्रम

रूपविहै ताहूतेंरवनहै सुदिलाजेहैं ते श्रवननविषैं मानोमनभावतेकेभावतेभवनहैं सुदिला
हैंते अथललाटवर्ननं कनकइति सोभाकीलोभनकहिये सोभायुक्तसभाहै केसवअलोक
इति किधौंसोककरिकें रहित सुंदरसिंगारकोलोकहै ललाटहैसो केआनंदकोकंदजोकोईपदा
र्थहै ताकोसोनेकौं किवारहै सोभाकोसुषभावहै केप्रभावकोप्रतापहै केगंगाकोपुलिन
चमकैहै तोपोल्यितंतसुलिनं इत्यमरे आनंदकोकंदजोकोईपदार्थहै ताकेदेखिवेकों मतिकेमं
द अरजेअमंदतिनकोचितचकचौंधिरह्योहै ललाटहैसो सुभागसोसुष्टभाग्यकीसभाहै भाग
सो अंशोभागोवैतुवंटके इत्यमरे अथअलकवर्ननं अलकछिलकसोइति सुपाससोसुंदरफा
सी लक्षमसोमिहीं उगाडोरइति उगसोद्वारी उगलोउीठ गुनसोउीठ उगजायहै ऐसोगुनहै
तिनअलकनमें तमरिपुलो तमरवहैं अलकहैंसो औरजमुनासीहैं कंदर्पकीछायामायाका
यासीवर्नियें अलकहैंते कुठालसोहैसितिं कुठालेसितिलेअिघु इत्यमरे केसवकसाइति
हेसुरंगमुषी अनंगकीकसाचामरीहै अलकहैंते सोइनचामठीनकरिकें लोचनकुरंगनिकी
चालि हठकियेहैं वरोवरिरहैयाकेलीने अम्बारेताउनीकशा इत्यमरे चंदकेहाथपरीमरकैहैं
लोलतोचन नवलनेहनिधिरोऊ संबोधन हेअलि कासो कहांकी सोकिधौं अलकजो लला
टताविषैं अलकलटकैहै ललाटमलकंगोधि इत्यमरे अथमुखमंडलवर्ननं कमलमुकुरइति

मावसकेदिन सूर्येविबैंवसे यहीतपत्यो ३

57A

मुकुरसोउज्जलकमलसों कोमल अकलंकितचंद्रसो मुषवर्नियें अहनमैं रति मुरनद्देख्यो देहहसो देवताचंद्रमांकेउद्दरकौ बायनायहैं अमृतकेलीनें तपन तपनः सविताखि इत्यमरे सूर्य तामैं तप तयौ गयोहै सोघटैवधेहै द्विजईससो ब्राह्मननकोराजाहै द्विजराजइत्यमरे जगतईससो ब्रह्मा अथकेसपासवर्ननं मोरचोरइति जमुनाजलसेवर्नियें औरमेघसेवर्नियें कोमलअमलइति तेरेएकचंदमुखी कोल्हेधकरिकें तेरेकेसपासनें मोरध्वजनजीत्यो जद्यपि मोरपछवैसाथि अनेकचं द्रजेचंद्रिकाहैं तेहैं तौहूजीत्यो मोरपसं मोरकीसारीपछनको नावहै पिछवर्हेनपुंसकं इत्यमरे अथमांगपाटीवर्ननं चंदऊपरभागकिधौंउद्दीप्यामघटा यहकवित्तपाटीवर्ननको छेपकहै अ थमांगपाटीवर्ननं मोतिनकीलरइति चारुचंद्रमांकीचमसं तमजानियें केथनकेविधेमरालन कीपांतिहै जसअनुरागइति सिंगारसमेतजस अनुरागकीरेषहै पाटीसिंगाररस जसमोतिनकी मांग अनुरागसोलालडोरा कैसिंदूर तमपाटीतिनविधैमरालालडोरा कैसिंदूर सोभसो मोतिन कीमांग सरसो अपनेतेजकेवलमैं तमविधेंतपकरिकैंसरस्वती गंगाइनकेएरजेप्रवाह तिनकी जोतिजमुनाजलमैंमिलीहै तहलस्याम सुमिल सुभपाटिनमैं चारुमांगहै सोलालडोरा सिंदूरइ नसौं अरुनसोभसोभैहै मांगहैसो अरजलजजेमोती तिनकीसोभसोभैहै मांनोहरोजो रू परूपो ताकीओरजालिरूपसोंजो ताकीअद्भुतलीककसीहै सोषैचीहै अमलकसोटीमैं रू

वह कहे ते
लेके

पोमोतिनकीमांग सौंनोलालडोरा अरसिंदूर सौंनेकोरंगलालहू अरपीरोहू यहांलाललीनौं स्यामपाटीसोकसौटी याकवित्तमेंपाटी अरमांगदोऊनकोवर्ननहे ताहीसौ चंदकेउपरभाग किधौंउठीस्यामघटा यहपाटीवर्ननकोकवित्त छैपदहै अथवेनीवर्ननं वेनीऐसीइति चंद नचटाइइति निसिनाथजोमुख चंदसो चंदन चढाइकें निसिरूपवेंनीमें कुंकुमसोकेसरिलगाइ कें निसिअपनेपीछेंदुराइराषीहै केंकाहूनेंवंदनजोसिंदूर तातेंसापिनीवंदीहै सोफजीहै अरछीरतेंछिरकीहै ऐसीजोसापिनीहै सो सोधसोषवरि वरिआईहै छीरतैंछिरकीसोमाल तीकीमाला स्वेतस्याम अरून जोपदार्थहैं वेनी मैंतेई गंगाजमुना सरस्वतीजानियें रसराज सिंगाररस जोईभयोरसजल हासरस अनुरागरस इनकीधाराजोवेंनी सोधरजोपीठतामें धाईहै गोरीसोसषी अथअनेकभूषनवर्ननं वेंदीवरनतविबुधइति वेंदीऐसेंवर्ननकी जे भागसुहागतेईभएनरेस तिनकेसमानहे वेंदीहेसो कैरविससिकोउदयरउदयहे मांगफ लइति मांग संपूर्नसिर अरवेंनी इनतीन्योंनमें फूलगुहेवर्ननकीजे रूपजोराजा ताकीजगत केविषें जोतिहे के सूरजको प्रगटहीप्रभाव जो प्रतापसोहै फूलहैंते वेंनीछविवेनीइति कंचनकुसुमइति कंचनकुसमसोसौंनेकेफूल अथवा सौंनेकेरंगकेफूल सोनजुहीइत्या दि फूलकोसीसफूल अजीतसोसूर्य इत्यादिप्रकाशवंत पदार्थसोजीसो मांनौंवेनी औरफूल

58A

तेरेंभएपांवडे तिनकी राहहतोरकैं सुहागअरभागदोजआये सुहागसोफलनकोसीसफल भाग सोजरारजरवोवेरा अथअंगसुवासवर्ननं सहजसुवासइति कमलवदनइति कुंकुमकेसरि कुं कुमागुलाबसेप्रस्वेदनीरहे अरअंबरजोवस्त्र तामें भंवरकोसुगंध आवैहै अथवस्त्रवर्ननं व सनसहेलीइति सहेलीसिद्ध केसमानवर्निये केकायासरीरमायारचना इनकोभावहै भावस सासुभावोभि इसमरे केसुभगसोभाहै केअतिसुहागहै कैलाजहै केलाजकीआवसीवहै सा रीहैसो वसन लाजकीआवर्दाहै वसनगएलाजजातीरहैयाते किधौंयहइति मायासी सहाउ सहाइ अथसंचरनेअंगवर्ननं चंदकेसोइति देखीहैगुपालयातुकताईवाआर्थकीजे रसिकप्रिया कीतरहनकीजे अथसमस्तभूषनवर्ननं बिछियाइति बिजोरेसोवाजवंद बीरसंबोधन गुपालि कागोपी अथअंगदीपतिवर्ननं कुंदनइति तियकेतनकीदुतिकरिकैं इनसबनकोअवतार हैहैंयेसबउपमान पहिलेतबकेसरि कुंदनकेसरि कुंदनकेतकी चंपककेदलदामिनीकी नी यातुकतें तियकेतनकीदुतिकरिकै इनसबउपमांनको अवतारहे राधेकेअंगइति याकवित्तमें दूसरे विशेषहैं चंद्रालोककेमततें थोरो आरंभ अधिकसिद्धकोंदेइ यहदूसरो विशेष राधिकासी औरबनावतमें येबहुतबनायडारे अथगतिवर्ननं रासहंसइति सारस हूकीगतिउपमा हेतियगतिकीकिधौं गजराजइति अंकुससीसो चालिसिखावैहै चरनविला

आभूषनतो अने कहैं परिवारहस्य लहैं मस्तक१लला ट२कर्न३नासिका ४कंठ५छाती६भु ज७पहुंचा८अंगु ली९कटि१०टको ना११चरनांगुली१२ येद्वादशाभूषनस्य लहै

सिनीजोनायकाहेतिनकौं आकहियेसबश्रोरनतें रसरूजेहे चलिवोसिषावेहे सकामकसोव
डीसंका राजहंसकलहंस इनकौंचलिवोसिषावेहैं तेरीचालहैसो यहतीसरीतुककोअर्थहे अ
नंगतरुवलितललितसिंगारवेलि नायकातफूलिकैं हावभावजेफूलहैं तिनकंफूलेहैं यहदू
सरीतुककोअर्थ संखलासोसांकरि यहांरोकिवेकेप्रसंगतें सांकरिकोअर्थवेडीभयो अलोलसो
मंद अथसंपूर्नेमर्तिवर्ननं चंद्रकला इति उडसोतारा तारासीकान्हइति कान्हहींजेतारा इनके
चंद तिनकेसंगतारासी चंद्रकलारहितनिसमें चंद्रकलासीदामिनीतथा श्रोरस्यामसंदूरिभए
तेसौंनेकीसीकली उरमेंउरकोजोहारहे ताकीप्रभासीलसेहे कंदर्पहीजोआधिकताकी श्रोषधि
सी कंदर्पस्थलमेंदीपसिषासीताराहे श्रेनकहियेघरमेंजाके अथवा ताराहे श्रेनकहियेमा
गमेंजाके अयनं वर्त्म मार्गाध्व इत्यमरे ऐंननाउघरको अरमार्गको तासोंचंद्रमांकोनामत
रायनहे यथाफेरि महिमोहन इति महिमोहनजोश्रीकृस्न तिनकीमोहनीहे रूपमहिमा
सोचिरनकरिकैंकरीहे सोआछीहे केसिद्धिहे केपद्धतिराहहे जगजीवमित्रजोश्रीकृस्न ति
नकीविचित्रजीवनमूरिहे केपरमानंदजोश्रीकृस्न तिनकीअमरद्रुमावलिहे धरनिकेबिबें
केभवधरनजश्रीकृस्नतिकाआधाररूपहे केब्रजबाधाहरनराधाहे इहविधि इति
बिरलसोछीदी अबिरलसोघनी इतिश्रीकविप्रियायांवसिष्ठालंकारउपमालंकारव

प्याइोहामेंआदिपदजमककमसंचहिये यतिपीकथीउ
प्यहांतीसरेचरनहूमेंआई ताकोडरनहीं २

59A

अव्यपेतमविपेतइति अंतररहितअव्यपेत अंतरसहितअव्यपेत ऐसैंजमक वर्निये अथ आदिपद अरती सरेपद जमक जमक अव्यपेत सजनी सजनी पादो हामैं आदिपदजमक क्रमसं चाहिये परिपीउपीउ यहां तीसरे चरन हू मैं आई ताकोउरनहीं हेसजनी नीरदकी सजकी दुति कौं निरखिकैं मोर हैं ते हरखिकैं नाचे हैं पीउसो आदरसहित पीउसो भारे खिकैं चातक रटैं हैं अरहर की ओर चितवे हैं यह अर्थ पीउ सोरटिवो तेन्यारो भयो दूसरे चरन जमक मानकरतइति तू है सो हरिही है ओर हरि हैं ते तेरो रूप हैं अथवा हरित सोत मानकं हरि तू है सो हरिको रूप है अथ तीसरे चरन जमक सोभितसोभाइति हय है ते धुरसार मैं नहीं यहां हू तीसरे चरन जमक ताकोउरनहीं अथ चौथेपदजमक राधाकेसवइति नवीन नवीन यहां जमक एकसे शब्दनके न्यारे न्यारे अर्थ होइ तहां जमक कहूं शब्द काटिकैं जमक होय कहूं बिनाकटे होय नारी उनास बढ्यो मघवा वरसे तम कोपर वाहन कोहै एसरह से जमक सगरी तुकतो मध्य ओर जहां लकीर लगी है सो न्यारे न्यारे पर कटे हैं कहूं थोरे अक्षरनको शब्द होय कहूं बहोत अक्षरनको शब्द होय यहै शब्दकी आवृत्ति होय तहां जमक पर आवृत्त होय तहां आवृत्तदीपक शब्द अर परदोऊ कहूं छोटे कहूं बड़े होइ हैं अथ आदि अंत चरन जमक हरिके हरिके इति यहां पद काटिकैं जमक भई अथ त्रचरन जमक

कै हसि के चितवो हरि है हरित वृतंन जीवनं इस मरे जी वका के नाव और र मनों चितकी अभि लाप जाय ताकूं मी तरूप है राधा है ते अरभिनेकी भेट ते अर्थ कीजे सब पा लन करन वारी है अभिलाषकी

कं० टी०
६०
60

अलिनी अलिनी मैं मधमन जमक भिन्नपद जमक

इहां सारस सारस या दोहा मैं अभिन्नपद जमक अथ चरन सारस सारस इति हे रससहित सारस नैंनी त
मुनि हे चंद्रमुखी तू चंद्र कूं देषि हे रमनी तू सुनि चंद्र आदि जे रमनी यत है हैं तिनतें रमनीय हरि
कौ मुष लेषि तहें सो अति अथ द्विपरादि जमक अलिनी अलिनी इति भौरी और भौरा ये नीर
जमें बसे और प्रति तरवरन में पतंग पछी मधमधन जे हरि हैं जे मध मधरूप हो इकें राधि
का के संग वसैं है अथ द्विपद अपद जमक आपमनावत इति पूर्वार्द्ध में भिन्नपद उत्तरार्द्ध में
अभिन्नपद जमक अथ द्वितियचरन चतुर्थचरन जमक जिनहरि इति या दोहा में पूर्वार्द्ध
मे अभिन्नपद उत्तरार्द्ध में भिन्नपद जमक जिन हरिनें जग को मन हर्‍यो तिनकौं हे वाम
वाम जे सुंदर दृग तिनसूं चाहि कैं मनसा वाचा कर्मना करिकैं ताहि सो ता हरि की तू वनिता

यहां हूं उत्तरार्द्ध मैं पद कहि कैं जमक भई अपद कोई नै पर न हो कहौ

हरिके हरिके कर ता कर ता जमक भिन्नपद

वाम मनोहर कौंक हत हैं

वनि अथ तृतियचरन रहित जमक देषिकें प्रवालवाल इति हे बाल प्रकहे अतिशय करिकैं
तू प्रवाल जो वीना को दंड ताकूं देषि नाव बजा उत्तम वाल पल्लव अंकुर वीना दंड इनको
नाव पल्लव वीना दंड प्रवालस्यात् इत्यमरे हरि को मन मन मथ सूं भीजि रह्यो है गिरि की जे सुं
दर दरी हैं तिन में हरि देषि वे कौं वहुत सुंदरी गई हैं अथ उत्तरार्द्ध जमक तृतीय चरन च
तुर्थ चरन आनु छवीली इति यहां हू पद करिकैं जमक भई आनु छबीली छवि वनी है सो
छलनि जो छल करन वारी स्त्री हैं तिनको संग छोडि तू जो हैं छ तिनके निकार समूह में है

सवठौर अव्यपेत भिन्नपद जमक

नतनिकेसकेजेसबअंगहैं तिनसौं मिलौं अथद्वितीयचरनरहितजमक परमानंदइति यहां
हूं पदकग्रो परमआनंदतें परमानहिसों परजोश्रेष्ठमानकेदैनवारे श्रीकृस्न तिनकों उत्कंठा
युक्त देषेहैं सोयहअबला अबलगेंगी मनहरिकेंहरिकेकंठसौं अथआदिचरनरहित
जमक कृगियोइति स्नरजसोस्नरमातेहैं ननमजाको असोजो स्नरस्नरजकोरूपही देषि
तृ दिवरमनीनतेरमनीयजेस्त्रीहैं तिनकोंतजिकैं ओरसंग्राममेंजग्यो वेस्त्रीप्रीतिकीमूर्ति
हीहैं अथचतुष्पदजमक नाहिउरबसीइति उरबसीउनकेउरमेंनहींबसीहे अरमदहूनहीं
हे अरमदनबसहूनहीहे भक्तहैंते कौनंदनंदसोंआसक्तहैं असपेत असपेतजमक
नकौं असें बरनौं असपेतकीरचनाजोहैसोकहौंहौं अथद्विपदादिजमक सोयहांदोय
चरनमें आदिमेंजमकहे माधवइति हेराधेमाधवकोंनंदकुमारधवजोपति सोयाओंगी
एजिवजोपदजो माधवसो वैसाषकों [illegible]महीना तामेंगिरजाकेभरतारकैं अथवा उमाधव
जोगिरजाकोभरतारहे ताकोंपदजो यहांअंतरमहित तासस्यपेत अथआदिअंतजमकस्य
पेत सियास्वयंवरइति तजेस्वयंवरधामसो अपनेवर अपनेधाम स्वयंवरस्वयंवरजम
क अथद्वितियचरनजमक पापनसतइति करंवफलेदेषिकें विरहीहैंजे विरहकरिकैंयु
ताहैं तोहूसमीपहोयहैंसोमिलेहैं यहांमानविरहनापनीयसो अस्यपेतसीजानीजायहे प

रतिकामकीस्त्री
कौसीत्रीनकों
तजिकैजग्यो

रहांसाधर्म्यप्रत्यै
धर्मसेअदष्टांतहै

61

रिनीपनीप येप्यारेप्यारेचरननमैंहे तासोंअपेत अथद्वितियचतुर्थचरनजमकसांतरस जैसें
कुबैनरति सविलासचंद्रकोविलेसन अथतृतियचरनचतुर्थचरनजमक परमतरुनइति
तरुनिपार्वती परमेसुराशिव कल्पलताकल्पवृक्षकेपासहोयगी अथप्रथमतृतियचतुर्थ
चरनजमकसमअपेत अंगदेसमैंरति अंगदेसमैंलक्ष्मी लाषनसरूपतेंदीसेहे जैसेंअंगनाके
अंगनमैंप्यारेप्यारेअंगनकेरूपदीसेंहें अथप्रथमद्वितियतृतियचरनआदिजमक दान
देतयोइति दानरतसो दानमैंजेरतहैं तिनकेहाथदानदेतहे सोहे तैसेंदानजोमद तासोंउ
तमगजननकेमांथेसोहैं प्रथमद्वितियतृतियचतुर्थचरनआदिजमक नरलोकहिइति नर
वाहनकुबेर अथद्वितियचरनरहितआदिजमक नरलोकहिइति नरअरवानरनकेदी
पहैं रामहेंहे सुषकरइति अव्यपेत विपेत येसुषकरजमकनकौंतोवरनिचुक्यो अबदु
षकरजमकनकोवर्ननकरोंहों अथदु[illegible]षकर मानसरोवरइति साधुनिर्धनजानिकेंदि
यो तासोंतिहा मानसरोवरसोहेमानकेसरोवर अपनेंमानसमनमैं माजोलक्ष्मी ता
कोनसजोनास सोतचाहि हरिहीजो जलतिनमैं रहनवारे जोमीन जोमानसमनुष्यमकहै
तेअ[illegible]मानकेसरोवरनकं सनमानसहित कैसेंवर्ननकरे मानसयापदमैं कहाअर्थकियो
तासोंदुषकरकरनीवरनीइति काहूराजाप्रतिकाहूकोवचन हेधरनीकेईसरानातसुनि

कल्पसोवाकेसमान
कल्पनुविधिदिन
कल्पतमकल्पसम
र्थनुहोइ इति अ
नेकार्थमंजरी

एकशब्दकीजमक
एकवेरहोय केरिवा
हीशब्दकीजमकआ
वेसोदुषकरजमक

किंवा बरनी पाठहै
तो बरनी जो ब्राह्मननकी

61A

रामचंद्रजूकीकरनी कैसैंबरनीजाय जेरामदेवकेसेहैं नरदेवजेराजा तिनकीमनिहैं देवदेवसो देवनकूं देवजोआनंद सोदेहैं अथवा देवजोराजा तिनकीदेवजोस्तुति सोकरैंहैं देवयाशब्दको अर्थ आनंद अरस्तुति याकलीरीतितैंभयोहै एनी देवया जमकनमेंकछअर्थभयो यासूं दुषकर राजाराजइति ईसजेरुद्र तिनकेसंगराजराज कुवेरहै अरद्विजराजसोब्राह्मन इनकोराजाचंद्रमाहै विषअरविषधरहै औरसुरसरितकी विषजोजलसोहै जलविषवुरोनहीं समअच्छोहै राजराजविषविष इननमकनकोअर्थ कह्यसंभयो यातैंदुषद नाराचछंद प्रमान मान इति मानजोतालताकेप्रमाननाचैहै अमानमानराचहीसो मानजेमनुष्य तेअमानजोविना प्रमानतासौंरचैहै अर्थात वहुतराचैहैं समानमानपावहीसो सकहैंसो आदरसहितमानकूंपावैंहैं विमानमानधावहीसो मानजोज्ञान ताकेविमानमैंवैठिकैंदौरेहैं अर्थात वडेज्ञानीहैं रीझनवारे कुमतिहारिइति जोलसषीनइति कहूंकछूचलावेनहींतोकहूं यहांलहिलहिजमक दुषकर जैसेंरचेइति जैसेंकरवालकूंजमकीजोश्रीसोभासोरचें औरसनालजोजल जातजाकूंजेतेंअलिनीजोरीरचें जैसेंवरषाकेविकालसोविनावरसेवरसिवेकोहरषवरषाकोरचे तैसेंद्रगयुपालकूं देख्योचाहेहै इहांकलहंतरितोकीउक्ति लहिलहिजमक स्यंदनइति स्यंदनजोरथ ताकूंहाकतमैंदुषीहोइहै सोषमतहोइहैं स्यंदनहाकेहैं औरदुषीजेहोयहै तिनकेदुषहरिकरैंहैं

औरसदासवकौंहरिकरैहैं

प्रमानमानयाहोहा
तोईदुष्कर जमकहै
आगैंनहीं

यहदुषकर सो
गावनवारी माजो
लक्ष्मी नमान लेना
हीहे प्रमानजो को
इतनी पावैहैं

A. No. 295.

कृ॰ टी॰
६२

62

यहदूसरोअर्थ छंदनसोवेदनहूनेंतिनकीगतिनहींजानी अरनामकरिकेंनंदकेनंदनहे पंडुकेप
तनकीरतितेंअनेकतरेंकेफंदनमेंपरे ओरमहीकोजोमोहहैताकूंकाटिकें निकंदनसो निर्म
लकरिडारे चेरीसोकुबजाकोअंगमेंचंदनचढावेहें ओरदेवजिनसंजगवंदनकहेंहें नंदनंद
यहांजमक अरअद्भुतारस सुरतरवरमेंइति सुरतरवरजोहेंसोरंभावनीकरिकेंमयहें सुरत
कोजोरवशब्द तामेंवनीरंभासीरमेंहे सुरतरंगिनीजेगंगाजी तिनकेजेकरकिनारे तिनमेंकि
न्नरनकीस्त्रीहें रंगिनीजोसुरतहें सोकरें किनहेनरी यहांसगरीतुकजमक श्रीकंठनरइति
श्रीकंठजोशिव तिनकेउरमेंवासुकिसर्पलसेहे अरसर्वमंगलाजोपार्वती सोमातजोमालाकीसी
तरहलसेहै दीपतिषाओषदिलतामालावालादेषि इतिकविप्रिया उरमेंअमारसोनमार न
मारसोकंदर्पकीनाशिकरनवारेहैं यहअमारपदकह्यो तासोंअमारइतनेपदकोदूसरोअर्थ
नयो लसतसर्वमंगला अरअमार ऐसेंपदकह्यो श्रीजोलक्ष्मी ताकेकंठमें अरउरमें वासुकि
जोफूलसोलसेहे अथवा वासुकिलसतसोनिकसेहे लक्ष्मीजोहेसो सर्वमंगलनकूं अमार
सोअमरकरेहे दूषनदूषनइति अवदातजोसांतरस ताकेजेरसीरसिकहें तेतुरसीपतिजे
भगवान तिनकूंमोहेहे वेअवदातरसीभक्तकेसेहे दूषनजोराछस ताकेदूषनजोरामजीति
नकेजोजस सोजिनकेभूषनगहनेहे भूषनसोओरवस्तुकीभूषनहीं अंगनकेसवसोहेसो

62A

अवदातरसीजेसवभक्तहैं तिनकेजेनिकेककहियेनीके अंगसोमुषतिनमैवेजमरूपीमुषन
सोहेहैं संसृतंज्ञानकेजेपूरप्रवाह तिनप्रवाहनकेजेघरिपरनप्रभावतिनकरिकैं परनसोपु
रुषोत्तमजिनकौंजोहेहैं सोपरमानंद रूप तिनकीपरमाजोसोभा तामैंपरसो सोनानाभा
वतिनकीलसीसरहेतमाजोलक्ष्मी ताकोजोनरशब्द सोनानाभाव तिकीलक्ष्मीताकीपरमाकौ
हे उनभक्तनकेआगे अथवामाजोलक्ष्मी ताकोजोनरसमुद्र ताकीसोभाउनकेआगेकोहै म
तिकोंसो औरनकीमतिहैसोउनभक्तनकं पातुजोपात्रातैसीतुरसीघटीलगेहै नरानको
पतिसोनर रहिविधि औरोइति केसवचित्रइति चित्रसमुद्रकेबंदकेकनिकाकोवर्ननकरं
हों अथऊरधइति अधसोविसर्ग ऊरधअनुस्वार आदिविनविसर्गअनुस्वारचहियेजाय
दमैंसहाकीजे औरनचैयनलहांकीजे याकोदोसनहीं चित्रकाव्यमैं नंदयापदको नरि करि
येतौदोषनहीं पच्छयापदरोपंचनकरिकेदोषनहीं तजिरसहीनअपारसो अपारजेरस
हीनदोषहे तिनकोचित्रकाव्यमैंदोषनहीं औरचित्रकाव्यकेअंगमैं बधिरअंधगनआगन
इनकोविचारनहींगनियेहे केसवचित्रइति चित्रकाव्यमैंरसहीनआदिजेदूषनहे तिन
कोदोषनहीं अक्षरमोटेपातरेसो गुरुहूस्वकीजे ह्रस्वकौंगुरुकीजेदोषनहीं वब जय इन
कं [illegible] एकहीजानिए आतिरति इति चित्रकाव्यमैंजतिभंग

दूषनकोहोयहै औरचरनकेबरन औरचरनसोंलीनहोय सोजतिभंग अथलिकरोहकल
लगं पढतननलागेइति पढतमैंअधरसंनलगै सोंकहियेतेसें जेअधरबरनहैं तिनकोंमांड
सोवर्नि अरअछरसबबर्ननकीजे एकउ औरपवर्ग इनकोंनलाइये लोकलीकइति ली
कीसोकीनी कोरकसोकली कलिकाकोरकपुमान् इत्यमरे कलीकहीसोफूलहीक्योंनकह्यौ
कलीकेभीतरस्वेतताप्रगट यासेंकलीकही अथमात्रारहितवर्ननं एकेसुरइति अआइईउ
ऊरिरीलृलॄएऐओओ येचतुःदससुरनमें एककोवर्ननकीजे याकोअद्भुतरसउपचेय और
अवर्नहैसो वर्न्योंनहींजायहै हेमित्रमात्रारहित जोचित्राभर्नहै सोकहूंहूं अथअकार
स्वरजगइति भगवानकेजेरसबसते भगतजनहै तिनकंभगवांनजगमैंजगमगायहै भ
वहरसोसंसारकेहरनवारेहै सहकारसोसहायकरनवारेहैं अचरकंचरकरैहै चरकंअच
रकरैहै अथवा अचरचरदोऊनकोंअचरकरैहै अथवा अचरचरदोऊनकोंबनावेहै
वडअनलसोवडीअग्नि असनसोभोजन जलथल थलजलकरनवारो असनसोअैसोनहीं
अजरजोअमरहैं जिनकेचरननकंधरैहे परमधरमकेगनहैं जामेंअैसोजोनरनविप्रताकोसर
नवरदेवेमेंतत्परहै अमलकमलवदनहैं सरजसकोसदनहै अरमदनकोमदहरनवारेहैं अरम
दनकोजेनासनताकेहरनवारेहैं फेरिप्रद्युमनकंप्रगटकियेतासों अथएकाहिसुर एकआदिइति

दसमस्कंधकीक
थामेंभगवांने
दैयवेरअग्नि
पायेहे वडवा
ग्नि सोवडीअग्नि

जिनकोंवरदे
नवारोहै जो
अवस्नाताकेर

63A

एकअक्षरकोनाव दोयअक्षरकोनाव तीनअक्षरकोनाम अपनीअपनीबुद्धिबलसं ऐसोश
ब्दवनाइकैंवरनों एकअक्षरकोनामयथा गोगोइति तीनेंगोनकोनाम गोइंद्रीविषवाक्
याअनेकार्थमंजरीकेदोहामैंसं मनमैंआवैसोलेलीजे गंसोगगन अथवावज्रगीकोबाली आ
सोलक्ष्मीकेसवपवनं अअयेकेशवेवायु इतिएकाक्षरमंजरी स्नासोस्वयंभू आस्वयंभू इ
तिएकाक्षरमंजरी श्रीलक्ष्मी धीबुद्धि हीलज्जा भीभय भीतिभिसाध्वसंभयं इत्यमरे भवि सोवि
शेषद्रुम अथवास्वर्ग षसोआकास मासोप्रत्यंचा अथवा पृथ्वी ज्यामौर्वीच्चवसुंधरा अम
रस्यटीकायां मौर्वीज्याशिंजिनीगुणा नौसोनाव स्त्रियांनौतरनीस्तरी इत्यमरे नासोमनुष्य वं
कल्याण भंसोनक्षत्र अरयहांभामा होऊपाहहैं भाहोयतौछाया माहोयतौलक्ष्मी तुसोपृछा
या तुपृछासोपछिवो अरुसंदेह होऊतुकांतनके होऊअर्थ विकल्पैचे इनमेसंएकह्नां एकहहां
अथद्व्यक्षरशब्दवर्ननं रमाउमाइति रमा उमा वानी येवाम सदाहरिहर विधि इनके अंगविषें
हैं लमाआरइयावेहैं जिनमैंश्रेसीजोसीतासती तेरामनैरमाकीनी अथत्र्यक्षर सीधर इति
सीधरइत्यादिजेपरनपुरष तेपुरानकेविषें जगतमैंप्रमानहैं अथचतुराक्षरनाम सीतासीताइ
ति इनसोछत्रीधरमताकेपति एवमन्येपिजेयं सोऐसैंश्रीरहूछसात अक्षरकोनामजानियें
अथषट्विंशाक्षर अक्षरइति छतीसअक्षरकोदोहा छंदभाषामें वनायकैंवर्नों औरक्रमसं

विकल्पसोहोनहा
र होऊवस्तुनमै
संदेह करिहै ऽ:
यकोअंतअवेन
मकेप्यासेकेत इ
तिभाषाभूषन

64

एकएक घटतजाय सोचइविंशाक्षर चोरीइति चौरीमांखनदूधेहंहि ढूंढतधरगोपाल डरहुन
नलघल मेहिकियफगरतछबिसोलाल अ कवर्ग खगोकिघ चवर्ग ४ चोजरुछ टवर्ग के ४ टडुठिढ तवर्ग
मायाभवि पवर्गके ३ रीलय सवर्गके हसो याहोहामें इतनेवर्गके मारीतिसे गिनिआवे तारी
के ५ नेदृति
त्थ पवर्ग के २
तिसंछवीसअक्षरहैं एकवेरगिनिवेमैंआवैसो सोअक्षरफेरिनआवे अथपंचविंशाक्षर
चेरीचंदनहाथके रीझिचढायउगात वीठलखितधरउविसिसु फलैवपुषनमात अ क
वर्गक उकेगाष चवर्गकेउचेझिछि टवर्गकेउढाठडिं तवर्गके ५ दनघतध पवर्गके ५ वीभ
फपुमा यवर्गके ४ रीयोलव येसवनाउरीयोलव सवर्गके २ हास अथचरविंशाक्षर अथव
कसकट घलंवः हति मास्वोगनचालर धनुषभंजिदृढ रौरिपुनि कंसमथेमरमर सोकंसमद
कोमल अवर्गकोएक अ कवर्गके ४ घक गख चवर्गके २ जच टवर्गके ३ टढण तवर्गके
५'यवर्गकेतीन धदृथ पवर्गके ५ वभमाभंफु यवर्गके २ लय सवर्गके २ सह अथतेईशा
क्षर सधीजसुमतिनंदफुनि औरगोकुलनाथ मांखनचोरीफठहठ पढैकौनकेसाथ अकच
टतपयसवर्गा अ॰ कारवीसम कवर्गके ३ गोकुष चवर्गके ३ चौफज टवर्गके २ ठढे
तवर्गके ५ धीतिनंदथ पवर्गके ५ मफुभोपव यवर्गके ३ यरेल सवर्गके २ सह अथ
बाईसाक्षर हरिदूत वलगोविंदविभु मारकसीतानाथ लोकपविदुषलसंघधरगाढ्डधनरघु

64A

नाथ अवर्गकीएक २ कवर्गके ४ गोकघथ चवर्गको १ ज टवर्गके २ टड तवर्गके ५ दुतानाथ
ध पवर्गके ४ बिभुमाय यवर्गके ३ रलिय सवर्गके २ हसी अथएकविंशाक्षर जैसेंतुमसवज
गरच्चेरियवकालकेहाथ तैसेंअघासोपापदुधकादिबलिकरमफंदकेनाथ अवर्गकोएक अ कव
र्गके ४ गकाघथ चवर्गके २ जेचे टवर्गको १ टि तवर्गके ४ तुंदियना पवर्गके ३ मबपं यवर्गके ४
रयेलव सवर्गके २ सेह। अथविंशाक्षर कोजानैंकोकहिगयोराधासोंयहबात काजुमांपनचो
रछल उठतपरेपरभात अवर्गको १ उ कवर्गके ३ कोगख चवर्गके ३ जुचोछ टवर्गको १ ठ तव
र्गके ३ नेधात पवर्गके ४ बामापभा यवर्गके २ योराल सवर्गके २ हिसो परे परभा तो प्रभात
होतही अथएकोनविंशाक्षर जतनजमायोनेहतरू फूलतनंदकुमार बंउतकसकलमी
नअवकपटकठोरकुठार अवर्गको १ अ कवर्गके २ कुष चवर्गको १ ज टवर्गके ३ उट
ठो तवर्गके ३ तनंद पवर्गके ४ फमावप यवर्गके ३ योरुल सवर्गके २ हस अथअष्टाद
शाक्षर थकेजगतसमुझाइकैंलिपटपुरानपुकारि मेरेमनमैंचुभिरह्योमधुमर्दनमुरहारि
अवर्गको १ इ कवर्गके २ केग चवर्गके ३ जभाचु टवर्गको १ ठ तवर्गके ५ थतनिधु
२ पवर्गके ३ मुपपि यवर्गको १ रा सवर्गके २ सह्यो अथसप्तदशाक्षर बालापनगोर

१ग ३१ .५५ ..

65

महरे वडे भये हम चित्त तिनके साथ हरे हरि जो नमिलो कहुं लीन अवर्गको सम्म कवर्गके २ गोके चवर्गके २ चिजो टवर्गको १ ड तवर्गके ३ नतरे पवर्गके ४ वापभम यवर्गके ३ लारयें सवर्गके २ सह तिनके सोतिनका अथषोडशाक्षर तुमघाघर मंडरात प्रति वलिभुक सेनं रलाल जाकीमति तुमहीं हरी कहा करै वहवाल अवर्गको १ अ कवर्गके २ घक चवर्गको १ जा टवर्गको १ ड तवर्गके ३ तुनंर तवर्गके ३ मवभु पवर्गके ३ रालिव सवर्गके २ सेही अथपंचदशाक्षर जो काहू पै वह सुने दूक तडो लत संग तो सब ही ब्रज बढिहै वाके अ सबनिमांग अवर्गको १ अ कवर्गको १ क चवर्गके २ जग टवर्गके २ दूडो तवर्गके २ नेत पवर्गके ३ पेवृमा पवर्गके २ वल सवर्गके २ हस अथचतुर्दशाक्षर दूकादूकीदि नकरो टकाटको अरुरैन यामें केसव कोंन सुख येरू करै विकवैन अवर्गको १ अ कवर्गके ३ काखये चवर्गका सम्म टवर्गको एक १ ट तवर्गके २ दिन पवर्गके ३ मंविरै यवर्गके ३ रोयाव सवर्गको १ स अथत्रयोदशाक्षर कह्यो परायो मैं सुन्यो मनुहरी नोह रिहाथ ताहि नतें वन वन रहों कोन्हानें किहिं साथ अवर्गकी सम्न कवर्गको १ के चवर्गको १ जो टवर्गकी सम्न तवर्गके ४ नोंहीघता पवर्गके ३ पमैव यवर्गके २ रायो सवर्गके २ ह्योसु

65A

अथद्वादशाक्षर कारूवैरिनिकेकहेजीजुरीगयोसनेह तोरेतेंटूटेनहींकहाकहूंयहलेहु अव
र्गकीसंन्य कवर्गके २ काग चवर्गकी १ जी टवर्गको १ टू तवर्गके २ नितो पवर्गको १ वे पव
र्गके २ यो ले सवर्गके २ हूस अथएकादशाक्षर वेसवसोहेकाल्हिकीवीसरेगोकुलराज
मुषहिंविलोकोंमुकरकरकरीकलेवालाज कलेवासोकलेउ अवर्गकीसन्य कवर्गके ३
कागाष चवर्गको १ ज टवर्गकीसन्य तवर्गकीहूसन्य पवर्गके २ वमु पवर्गके ३ वेरेल
सवर्गके २ सहें अथदशाक्षर लेताकेमनमानिकाहिंकतकाहूपेजात जवकोउजीजा
निहेंकहाकेहपुनिवात अवर्गको १ उ कवर्गको १ के चवर्गको १ जा टवर्गकीसन्य तवर्ग
के २ तान पवर्गके ३ मपेव मवर्गको १ ले सवर्गको १ हि अथनवाक्षर चेतुनचुचोत्रो
गारजेजाकोकरिजिपजोर सोसाचंदजोजोरजीपकोकेसंजियेचकोर अवर्गको १ अ
कवर्गके २ गेको चवर्गके २ चेज टवर्गकीसन्य तवर्गको १ न पवर्गकसन्य पवर्गके २
रय सवर्गको १ सो अथअष्टाक्षर नेननवाचोनेकहूकमलनेननवनाथ वालनिकेमन
मोहिलेविक्रममनमथहाथ अवर्गकीसन्य कवर्गको १ क चवर्गकीसन्य टवर्गहूकीस
न्य तवर्गके २ नेथ पवर्ग २ मवा पवर्गके २ वाल सवर्गको १ हू अथसप्ताक्षर रामको

क०टी०
६६

66

मस्यावसिकेरेविबुधकांमसवसाधि कांमरांमवखसकरेकेसाहीसासीताआराधि अवर्गको
१ आ कवर्गको १ का चवर्गकी १ संन्य टवर्गकीसंन्य तवर्गकी १ धि पवर्गकी २ मव पवर्गको १
१ सवर्गको १ स्या अथषडाक्षर कांमनाहिनेकांमके सवमोहनके कांम वसकीनोमनसव
नेकोंकोवोमाकावांम कामासोकितनीटेढीहे अवर्गकीसंन्य कवर्गको १ कां चवर्गकीसं
न्य टवर्गकीसन्य तवर्गको १ ना पवर्गके २ मव पवर्गकीसंन्य सवर्गके २ हिस अथपचा
क्षर कमलनैनकेनैनसेनेननकोनोकाम कोनकोनसोनेमुकेमिलेनस्यांमसकांम अव
र्गकीसंन्य कवर्गको १ क चवर्गकीसंन्य टवर्गकीसंन्य तवर्ग १ न पवेर्ग १ म पवर्ग १ ल
सवर्ग १ स अथचतुराक्षर वनमालीवनमेमिलेवेनीनलिनवनमाल नेनमिलीमनम
नमिलीवेननमिलीनवाल अवर्गकीसंन्य कवर्गकीसंन्य चवर्गकीसंन्य टवर्गकीसंन्य
तवर्ग १ न पवर्गके २ वम पवर्गकी १ ली सवर्गकीस अथत्रतियक्षर लगालगीलेगोग
लीगलेलागुलेलाल गेलगोपगोपीलगपालागुगोपाल गेल और लगे सो चले गए
अवर्गकीसन्य कवर्गको १ गा चवर्गकीसन्य टवर्गकीसन्य तवर्गकीसन्य पवर्गको १ प
यवर्ग १ ल सवर्गकीसन्य अथद्विक्षर हरिहीराहीहर्योहरि रहीहीहरि हरिहरिहेंहाहा ररो

सोलगायहीजो पालगावकारिकें गेलगोगलेलागुलेलालसोगलाकेलोललेकें लाग हलागे १

६६

=१ हरिहीरा याको अर्थ हरिमैं हरिकैं सवनायकानकों आराहीजोराधाताकौंहीराहर्यो रहीही हरिसों वेसगारीहीमैंहारिरही जवहर्योतव हेहरिहरें हरैं मैं हाहाकरतहूं सवनकौ तथा राहीकोंहीरा तरि सोउ।रिरेहू

66A

हरैंहरैंहरिरारि ह्यांग्रवर्गको कवर्गको चवर्गको तवर्गको पवर्गकोसत्य पवर्गको १ रि सवर्ग
१ ह अथएकाक्षर नौनीनौनीनौननिने नौनैंनौनैनैंन नानाननननुनानुन्नु नानानैंनननिनैंन
नवर्गको १ नो सवर्गकोसत्य लौंनीलौंनीनवनिकंनलनैं अरलौंनलौंनतरेनैंनहैं नानानन
सोमुषतैंनाहींनांहींकरैहै ननसोनिश्चै तथावितर्क ननंतर्कपनिश्चये रसमरे नुनेसोवु
लाइवै अरएछिवो नुनयामंत्रणे ननु भ्रमरे नानानैंननिनैंनसो नानाप्रकारकेजो औरनाय
कानके नेननिनेनेत्रहै तिनमैंने कहियै नीतिनहीहे अथप्रतिपरएकाक्षर द्विक्षर गंगोगीगो
गंग जजजजजैंजी जीजोहि ररेररेररिहोहाहा हूहूहेहि गोरयोसो गोजोहिसातिनविषैं गोजो
बंर सोगीजोबांनी ताकरिकें गंगसोगंगाकौं सुधिकरि भगवांनसहित सरोवरकेविषें हेजग
जजिजैंजी सोयजनकीजे जीयहतु अपनेजीउमें जोहि सोदेखि रु कहियेऔर ररेररे जेभ
गवांनहैं तिनकोंहाहाकारकें ररिहो सोररिहो हूहूहेहि सोयहहूहूगंधर्वहै याहकेरूपसौं
पहलेचरनमेंकवर्गको १ गो दूसरेचरनमैंचवर्गको १ ज तीसरेचरनमैं पवर्गको १ रु चौ
थेचरनमैसवर्गको १ हू औरसववर्गनकीमत्य अथद्वैकाक्षर केकीकेकाकीकका को
केकंकंकोकोरू लोललालललोलैलली लालालीलालोल मोरकीकीकजो आनंदयुक्त

क०टी०
६७

केकाजोवांनी सोनायकाकीवांनीके आगें का कहिये कहाहे और कोकंकं कंकजोपत्ती सो
जानायकाके आगे को सोकोहे अरकोको क सोनायकाकेकुचनके आगे कोकजोचकवाच
कवी सोकोहे अर लोललाल सोलालचंचलहे लोलेलला सोलली हूचंचलहे अरला
लालीलालोल सोलालाकीलीलाहू चंचलहे पहलीतुकमेंकवर्गको १ के दूसरीतुकमें य
वर्गको १ लो औरसर्ववर्गनकीसन्य उभरवानों इति वाहिरसें आवे सोवहिर्लापिका भी
तरिसौंउभरिआवैसो अंतरलापिका अथवहिर्लापिका अछरकोंनइति विकल्पकौं अ
छरकोंनवा जुवतीकोंनसेअंगमें वसेहे वांम वांयेंअंगमें वलिकोंनेंछल्यो वांमननें यह
तीन्योंनको अर्थ वाहिरतें आयो दोहामेंवामनयहनहीं तासोंवहिर्लापिका अथअंतर्लापि
का कोंनजातिइति सीताकोंनजाति रामा सोलस्त्री तातनेंकोंनकोरीनी रामाय रामजी
केनिमित्तसीताहरीगई सोकोंनसेग्रंथमें रामायनमें रामायन यहदोहामेंहे तासोंअंत
र्लापिका अथगुप्तोतरवर्ननं उत्तरजाकोइति जाप्रश्नकोउत्तरदुस्योदीजिये सोगुप्तो
तर नषतेंसिषलोंइति पांनषवावनहीं प्रियानेंकोपकरयो सोकोंनकारनसु धे
अर्थयह अरकोप हांतांई प्रश्न और वियापरनारिसोंरम्यो यहउत्तर फेरिउत्तर

गुप्तोत्तरसुधो अर्थ

६७

67A

हासविलासइति कंतगुनीनमेंगांनकरे औरहू सवसुषहेतोहू कांमिनिक्योंरोवे कांमिनिह्यां
तांईप्रश्न कंतकरेसुभगांनगुनीमें सोकिमवीनमें यहउत्तर फेरिप्रश्नोत्तरयथा नाहुनयो
इति रतनैंसुषहैंतोहू कौंनरसा सुरती जासोंरोवेहै यासऽधोअर्थ कें ह्यांतांइप्रश्न ननर
नास दंती सोलरी यासंरोवेहै यहउत्तर अथएकनेकोत्तरवर्ननं एकहीउत्तरमेंइति
एकहीउत्तरमेंछिपे अनेकउत्तरहोय सोएकानेकोत्तरउत्तर एकसमस्तकोव्यस्त अ
नेकनिआंनि जोरिआदिपंर अंकसोंक्रमहीवरनवषांनि सवप्रश्नको औरजुदेजुदेप्र
श्नको १२ अनेकएकउत्तरहोय कहानसज्जनइति आदिअंतमेंकोंनसरनहे सवज
गतमेंसोभाधरनवारोहे सवैजगतसोभाधरन यामेंसवनकोउत्तरहे आदिकोअरअंतको
अक्षरमिलावे फेरिआदिकेमेंसऽएकेकछोडतोजाय×आदिकेवरनकों अंतकेवरनसोंमि
लाइये आदिकेनमेंक्रमसोंजोउतोजाइये×फेरिएकनेकोत्तरदूसरीरीतिको मिलेआदि
केइति आदिकेवरनसंमिलायउच्चारकीजे× व्यस्तजुदी समस्तमिली वस्तनकोउत्तर सो
कारकेअन्तहारिहोय यहयारीतिसंहे कोसुभइति संकरनतरूनियामें सवकोउत्तरहे सुभ
अक्षरको संकस्थानहैसो वसकीनी लोकोंन संक रूपीतरूनीहे सो रामकोंसि ढुकोरीनी

क०टी० ६८

68

संकरनैं कंसके राजमैं जदुवंसके सैंवसहे संकरत संकाम[illegible]हीयवे [illegible]कहिये
संकरतरु जगमाताकौंन संकरतरुमि यह वेदपुराननमैं अरसनका द्विनमैं कहीहै फेरिह
सरीयाहीरीतिकौं एकनेकोत्तर कोलाकीहइति धरमहित धीरजधरिकें कोलजो बाराहजी
तिननैंकहाधरा कु जो पृथ्वीधरी वलिरवनैंसतकाहेसौंमास्यो जोरके नवजो वेगकरिकैं
कुससौं जगदीसपै जगकहाजाओ कुसलरामायनगीतकौंनैंगायो कुश लवनै म्यारेम्यारे
प्रश्नके म्यारेम्यारेउत्तरहैं तासौं व्यस्त फेरिएकनेकोत्तर औररीतिको संग्रामके विषैं रामकौं
नसौं मोहेगए कुसलवसौं यहसमस्तप्रश्नको समस्तउत्तर याहीसमस्तमैं ते व्यस्तनिकस्यो
वामश्यामहूरिकसोसीताकौं वनवासहैकरि एकएकतजिइति एकएकवरनकूं तजे अर
शेषशेष वरनवखांनै व्यस्तं जो म्यारेम्यारे प्रश्न तिनके म्यारेम्यारे उत्तर यहगतानहीं सम
स्तमैं ते व्यस्तगतागतनिकस्यो नवरंगरायमन यामैं सबउत्तर केहैं रसइति केहैं रसनव
केसैं नईलंक वरसो जोरसं काहेपीतपटहोत रंगसो रंगसौं सभामैं कौंनसोजनसोहि
ये गरा जोगरुवो सोवडो भोगनकौं भोगवत राय सोराजा कौंनैं गननैं भागवत सोभा
गवतसोभवौंन यम सोयमधर्मराज वडेभागवतहैं जीसोकी जतीन मन अव नव

कुतीनतातसौं कहाजातकहौ कुसलसो कुसल

रंगरायमन उलटी ओरसों वचैगोयाहीतेंगतागत अस्त प्रनामकेवरनकौंनहे नम येहे कौं
नैंकरीसभा मध्य मध्यदेसमैं अजीतजुवतीकौंन परासोजरा गुनीकहागावे राग सर्पका
हे संभरेहैं गर स्वविषेस्वपसस्सोमगासोकाहेसं मोहे रवजो शब्दतासें तपस्वीतपकहां
करेंहैं वनमे इंद्रजीतकहांवसेहे यासमस्त प्रश्नको नवरंगरायमन यहसमस्तउत्तर
समस्तमेंगतागतनहीं अथप्रश्नउत्तर व्यस्तसमस्तगतागत समस्तरोयवेर केसोरासवि
चारिइति विचारिकेंन्यारेन्यारे अर्थलावे व्यस्त ओरसमस्तमें प्रश्नउत्तरगतागतजानैं
समस्तरोयवेर रासनिसोंइति जनमेजय यामेंसवनको उत्तर रासनिसोंकहाकहिये
जन परजोशत्रुतासोंकहाकहिये नमें सोयहमेंन हीमानहूं ओरपरमानकीवातसं
नयजोनीतितारकरिकें कहाकहिये मेज ताकोमेय सोहमहेजी यापरमानकीवातमें भ
पनकूं कहाउपदेसदीजे जय करो यहउपदेस रूपकाहेतैंनलोहोयहे यन सोयजनतें
नयकौंतजे ऐसीकौंनकीनीतिहै जमे सोजमकी अपनो विषैनतेकहाकहिये मेन
कहा वस्तविनाछतपालनकीछयहोयहे नज सोनयविना न्यायकेजमकहातोल्यो य
जमेनज ताको यजमेनय हांउलटोसमस्त यजसोतूयजनकरि सोमेरी नय सोयह

नीतिहै अहिनेकौंनेंकीनों जनमेजयन सांपुलटोसमस्त पूर्ववत यथा केयहइति सवन
यामैंसवकोउत्तर यहके नव मधुकैसैंहसो वर सोवरदांनते प्रभुकेमनमेंप्रेमकाहेसंपु
लहतुहै सोहोतुहै रससं कमलकौंघरकहांहै सर जोसरोवर मृगगन कहामुनिकैं मोहेहें
इव सिद्धनकोवासकहांहै वनमें कविनकूकौतिककौंनसेवर्ननमेंहैं नवरसहे पितमातकी
सेवाकोंनैंकरी सरवननैं नवरस येसमस्तउत्तरहे मधुदैत्य अरकैटभयेदोऊ जुद्धमैंप्र
सन्नहोयकैं भगवानसौंकही जोवरमांगो तवयहवरमांग्यो जोतुममेरेहाथसंमरो तव
वरदीनों जोमरैंगेतोसही परिधरतीपरमरैंगे अधरतीजलमैंडूबिरहीही तवभग
वानकही मेराजांघहेसोधरतीहीहै तवजांघयेमारे पूर्ववतव्यस्तसमस्तमैंप्रश्नोत्तरग
तागत उत्तरइति व्यस्तसमस्तमैंगतागतउत्तर लाइयेकेसोनैंयाकौंग्रंथवषानौं सोरठा
यथा कंठवसतइति सुरतासु यामैंसवकोउत्तर सुरतसु यहदोऊओरसौं एकसौंवंचे
हे कंठमैंसात कौंनवसेहैं सुर कोरुकहाकहे सुरत सुरतात सोसुरनकौंरूपावा
त्रकौंनहे सुरतर कामिनीकौंहितसौंप्रियकहाहे सुरतरसु अथसासनोत्तर तीनि
तीनिइति तीनितीनिप्रश्नको एकएकउत्तरहोय सोसासनोत्तर चौकवारइति

69A

घरीनपांस्यो जानुकवि यामेंसवकोउत्तर चौककरी घरीनसो घरी आछीनहीं कूपदा
रि सो रहंटकोकूपचलाउ घरीन सोरहटमेंपांनीभरिवेकी घड़ियानहीं घआलवां
धि घरीन सोघडीकीकटोरीनहीं मोतीनकोमोलकरि पांस्योंन पगायवालि पांस्योन
निचोलसीवि पांस्योन हयकुराव जानुन पुरकोजोप्याल अथवा जआतोदाउदे दाउक
हा अथवा पुरजोवचन नाकोदाउदे दाउकहा जैसेंचोर अनेकसभानकी पुरजोवोली
सोवोलेंहै जांनुन सोमेंजानननहीं रंककोगुनगाउ जानुन सोमेंजानंनहीं जातिभाव क
विन सोकवीस्वरनहीं पुरधांमधाउ धाउ संस्कारकरि कविन सोविचछननहीं लंककी
धनलाउ कविन सोपुरूजन दीवांन दिवांनवांनों अथप्रश्नोत्तर जेईआपटरति जोई
प्रश्न सोईउत्तर यहप्रश्नोत्तर कोदंडइति दंडग्रहनकरनवारोकौंन कोदंडजोधनुष
ताकौंग्रहनकरनवारो रतिवंतकोकुमारहै कोशाब्द अरमार सवितेंदुषीको कहि
येहे कोक सोचकवाचकवीहै कोमलमनकोसंतहै कालिकाहि इति कालिकाहिएजै
कालिकादेवीकूं कोकिलनिश्च कंठकोनीकोहै कोकिलकोकहिये कामीसदा जाकेहीयें
कौंकहेंसो सोकालीकीहे लाकसोरीतिहेसोहै अथगतागत अभिलार्थवर्नन सधो

70

उलटोइति सूधौउलटौएकसौवचै सोगतागत मासमसोइति लछिमीकेसमानसोभ
साजेहे वनमैंजोवीनवजावेहे ताकरिकैं वहवीननयोहीवजेहे सहसोमसमान वहनाय
काचंदकेसमानहे मालताजोवेभुजातिनकरिकैं सारजेगोट तिनकौंवनावेहे अर सखी
रमा तालकोनाव तालवनावेहैं तिनसंरिसायहे जोतुमनहींवजायजांनौंहो मांनव
हीरहि सोवहनायकामनुष्यहे रहिको अर्थहे नये मोरद मोद सोमेरोमोदरद्दहे वा
नायकाकेआगें अरदमोदरकूं वनमैंमोहिरहीहे अरनायककीमालावंतीहे अरसद्दा
जाकीकेलिकेवसिहैं वलमाहेसो ऐसीवनीहे यहउलटोसूधोएकसोवांचियेहे तासूं
गतागत याकवितमें एकएककरिकैं मात्रतुकसूधी उलटी एकसीवचैहैं अथगता
गतभिन्नार्थ उलटोसूधोइति उलटोसूधोवांचिए परंतु अर्थउलटेसूधेकोन्यारोन्या
रोहोइ एकसवैयामैं दोयसामर्थ्य प्रगटकहेहैं सुकविहोंसेंननइति अथसूधेकोअ
र्थ माननी नायकासों उक्तिसखीकी माधवकों मैंरनायकाकीसैंन तीरसीडुरीलगै
हे अरसुवेसजो सुंदरवेस ओरनायकानकोसवसोदेषहे सोसूछमहे सवतरुनी
जीमैं विरहोंतचिकैं रूसवकीरूचिनैंननमैंअवकीनीहे जैसेंचीरकभउतारेनहीं तेसेंउन
सं

77A

के नैनन मैं तें रुचि जाय नहीं है का ल जो श्री कृस्न तिन कूं वे नायका निम सो नीम को फल निंवोरी
रूची तें सी कडवी लगे है अरु उन तरुनीन नें जी मैं तें विकै कृस्न की रुचि अपने नैनन मैं सवन नैं अ
वकी नी है जैसें चीर जु रंगो न होय तैसें रुचि नहीं जाय है तें नैंन हीं सुनी है जस कहै जैसी उन नाय
कान की नीर भरी है धीर धारिवे की रीति अव कौंन वहै अर्थात् समान छोडि है मैं न मनी सो मैं
न के सिरोमनि है कृस्न अरु गुरु चाल चले है अरु सुभ जो कृस्न सो वन मैं सरोवर की पारि पै
ठाढे हैं अथ उत्तरार्द्ध अर्थ सखी की उक्ति नायका प्रति सैल वरति सैल जो परवत तामैं वसी है तू
एत मैं नवीन सोभा सुरतांत की ताकूं लैकें चलि चारु गुनी मन मैं सो यह वात सुंदर विचारी है
मैं नैं मन मैं वन को सहै अरी तातें स्वेद धीर धरि नीकी भर मैं है सजनी तू सुनि है का मिनि फल
सो सुरति लै वैसर ची है ताको चिरु काल ताई नीकृत जो राति है तामें नीकृत सो शरद राहित जी चि
त की वन नैं सो राजी चित्त की वन नैं जे वना उ तें तैं नें कीनें वैसस सो नायक की ओर तेरी समा
न वैस है वैस सो सुंदर रहै सरेस सो तेरो वाको एक ही है सहै वरे वस के रस औं वधमान न से
सो औं घरे रस के वस हैं तेरे नायक मानन सो और नायकान के अभिमान तैसें कहे यें सेवरा

नतेरे आगें बंध होय जाय है जैसें सो दूरि होय है जैसो रुधो इति जैसें रुधो दो हाव चे है तैसें ही मत्रगति अश्वगति बचे है अथ मत्रगति अश्वगति त्रिपदी कपाटबंध वर्ननं इंद्रजीत इति अथ गोमत्रिका गोमत्रिका सो अथ भमत्रिका

इं	द्र	जी	त	सं	गी	त	लै	भ	ये	रा	म	र	स	ली	न
छु	द्र	गी	त	सं	गी	त	ले	भ	ये	कौ	म	व	स	दी	न

अथ अश्वगति

इं	द्र	जी	त	सं	गी	त	लै
भ	ये	रा	म	र	स	ली	न
छु	द्र	गी	त	सं	गी	त	लै
भ	ये	कौ	म	ब	स	दी	न

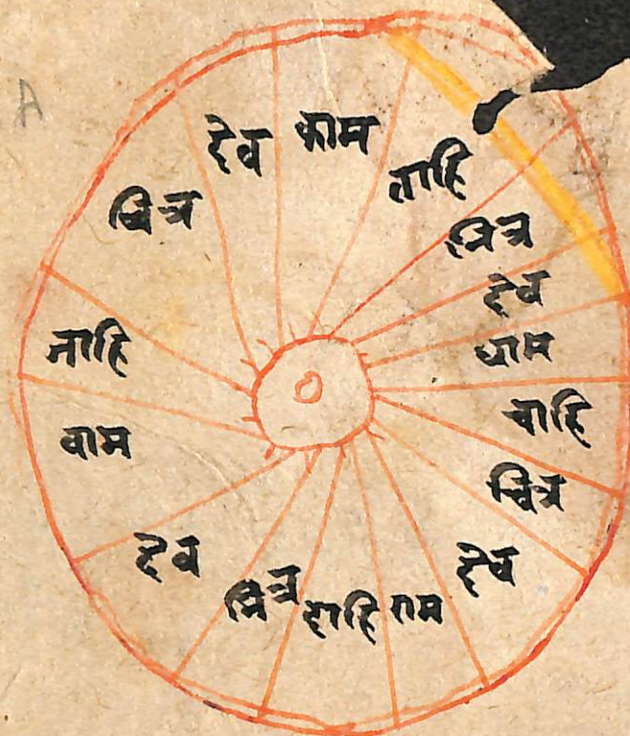
अथ कपाटबंध०

इं	द्र	द्र	छु
जी	त	त	गी
सं	गी	गी	सं
त	लै	लै	त
भ	ए	ए	भ
रा	म	म	कौ
र	स	स	व
ली	न	न	दी

अथ त्रिपदी

इं	जी	सं	त	भ	रा	र	ली
द्र	त	जी	लै	ए	म	स	न
छु	गी	सं	त	भ	कौ	व	दी

...धसरसोभुध



कामदेवचित्रजाहि वामदेवमित्रहाहि रामदेवचित्रचा
हि धामदेवनितताहि १ अर्थ कामदेवकरिकैं तूचित्र
सोविख्यातहै चित्रविख्यातविश्रुत्वा अमरे येतीनूं विख्या
तकेनाम अथवाकामदेवतेरे चित्रधनहै जाहिसोजा
वामदेवकूं मित्रकरिकैं तूकामकूंहाहि रामरामचित्र
मेचाहि नाहि सोतिनकरिकैं देवधामजोवैकुंठ सोतो
कौंमित्रमिलेगो ०

अथकमलबंध हरिहरिहरिसरिहोरिडुरिफिरिफिरिकरिकरिआरि मरिमरिजरिजरिहा
रिपरिपरिहरिअरिनिरि तारि १ अर्थ हरिहरिहरि तूरटि होरिकैं डुरिकैं फिरि फिरि आ
रि सोओटपाकरिकैं तूहरिहीकूं रटि मरिमरिजरिजरिकैं तूहारिपरि तोहूहरिहूकौं

कमलबंध



रटि परिहरि अरिसो वैरी मति करै आपतरि और कं तारि॥

अथ त्रिविधात्रिपदी अम्बगतिपधा त्रिपदी

रा	दे	न	दे	ग	प	सु	र	म	धी
म	व	रु	व	ति	र	ध	न	द	र
वा	दे	गु	रे	ग	प	कु	र	ह	धी

रामदेवनरदेव
गतिपरसुधर
नमदधीर वा
मदेवगुरुदेव
गति परकुधर
नहर धीर १

टीका॰ रामनर है अरु देवतान की सी जिनकी गति है अरु परसुधरन जे परसुरसराम तिनको मद धीरै करनवारे है वामदेव रुद्र ते जिनके गुरु है देवगति मोर देवतान विषै जिनकी गति है कु जो धरती ताके धरनवारे जे परराजा तिनह दकुं धीरी करनवारे हैं परसराम है॥

73A

अथसर्वतोमुखजहां[illegible]चलावे तहां[illegible]चलैलुकांतमिलतीजा
यहोयहोयअक्षरनसें

द्वितीयत्रिपदी

तम	वन	देव	तिप	तध	नम	धी
दे	ह	ग	रु	र	द	र
नाम	वग	देव	लिप	बुध	नद	धी

तृतीयत्रिपदी

तम	नर	गति	बुध	मर
	देव	धर	रन	धीर
	गुरु	[illegible]	बुध	हर

[illegible]गति

[illegible]	व	न	र	दे	व	ग	ति
		र	न	म	द	धी	र
		[illegible]	दे	व	ग	[illegible]	

मुष | काम | अरे | त | न | ...

कामअरेरति

कामअरेतनलाजमरेकवमां
निलिएरतिगांनगहेरूष नामवरेग
नसाजकरेअबकांनिकिएपतिप्रानदहेउ
ष धामधरेधनराजहरेतववांनिविरामतिदान
लहेमुष रामररेमनकाजसरेसवहानिहियेंप्राति
आंनकहेमुष १ अर्थ शांतरसमेंकाहूकोकाहूसों
उपदेस कामजबअडकरेतबकहातनलाजमरेहें
नहींमरेहे यहकाके औरकवहूराकू रतिमांनिलि
एतेंरूपवायकें संसारगानगहेसोनिंदाकरेहे कामन
अपनेपतिनकीकांनिकरे तवउपपतिकेप्राउ
षतेंरहे अैसेंमुनिकें धाममेंधस्योधनराजाहरि
लेतवही बीरावांनिसोहूसरीजोटीवांनितेमतिरा
सोमतिकेरैंनवारेजेवडेपुरुषहैंतेयहकहेंहैं
तेसोवोटोपुरुषसुषनहींलहेहे तातेंरामकूं
रहैं जासूंसवमनकेकाजसरे[illegible]
आंनकोंनामसुषतोंकहे [illegible]
शांतिहोयहे

कं०टी०
७३

73

नद्दसीतासीनन... ...रमारता ... ...सी नरलीन
... अर्थसीतासीनसोनरहे नसीतासीसो सीताकीस... ...हूमैनहीहे तार
मारजेतम तिनमैंवहरमा रतहै सीमाकलीसो मर
आराकीकलीहै लीकमाली जो मा लक्ष्मी ताकीजी
...कसीहै नरलीन नलीन सोरनकेविषैं नररूप अर
नली जैसेजैरामहैं तिनमैं अरजैसी सीतामैं तली
नहोहु नलीसो नल वंदरा हैंजिनके अथवा नलीसो

		सी	न	न	सी	ता	सी
	र	मा	र	र	मा	र	ता
	मा	क	ली	ली	क	मा	सी
न	र	ली	न	न	ली	र	न
न	र	ली	न	न	ली	र	न
सी	मा	क	ली	ली	क	मा	सी
ता	र	मा	र	र	मा	र	ता
सी	ता	सी	न	न	सी	ता	सी

अथ उँगल वंधकदोहा नरसरवरश्रीसहगतनमन
नरपुरवसिकरन नरकसिवरसुसकलसुषहूसन
जीवनमरन नरमनवजीवनहीजिरहयसरमतिम
तहरन नरहतमतिमयजगत केसवलक्ष्मी वरस
रन १ अर्थ नरसरवश्रीसहगतको लक्ष्मी वारजेस
वनरहैं तेरातयसहितहैं नमसोनमस्कारसहितहैं

74